

19 वां अंक

वर्ष - 2025-26



सोनार बांग्ला

राजभाषा पत्रिका



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल

ट्रेजरी बिल्डिंग्स (प्रथम तल), 2 गवर्मेन्ट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता - 700 001

दूरभाष - 033-2213-3151/3152/3163 फैक्स - 033-2213-3174

वेबसाइट - www.agwb.cag.gov.in ईमेल पता - hindicellau1.wbl.au@cag.gov.in

‘सोनार बांग्ला’ परिवार

संरक्षक

श्री विभुदत्त बसंतिया

प्रधान महालेखाकार

परामर्शदात्री समिति

श्री अवनीन्द्र कुमार राय, उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I, II एवं III/नॉन-एल.ए.डी.)

श्री श्रीराज मधुकर वाणी, उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-III, IV/स्था.ले.प.विभाग एवं एफएडब्ल्यू)

संपादक मंडल

संपादक

श्री चंदन कुमार बढई, सहायक निदेशक (रा.भा.)

राजभाषा परिवार

सुश्री प्रियदर्शिनी सिंह, सहायक निदेशक (रा.भा.)

सुश्री राजलक्ष्मी गांगुली, वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री सुकन्या दास, वरिष्ठ अनुवादक

सुश्री गुंजा कुमारी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्री प्रमोद कुमार दास, कनिष्ठ अनुवादक

श्री रवि पासवान, कनिष्ठ अनुवादक

श्री किशन राम, कनिष्ठ अनुवादक

श्री राहुल चौधरी, कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री प्रिया साव, कनिष्ठ अनुवादक

श्री धर्मेन्द्र कुमार, आंकड़ा प्रविष्टी संचालक

लेख जांच एवं पुनरीक्षण समिति के सदस्य

श्री प्रदीप घोष, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री गौरव कुमार मिश्र, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री चंदन कुमार बढई, सहायक निदेशक (रा.भा.)

सुश्री प्रियदर्शिनी सिंह, सहायक निदेशक (रा.भा.)

डिजाइनिंग और लेआउट

ई.डी.पी. अनुभाग एवं श्री धर्मेन्द्र कुमार, आंकड़ा प्रविष्टी संचालक

अस्वीकरण

लेखक/रचनाकारों के विचार उनके निजी विचार हैं। उनके विचारों से मुख्य संरक्षक/संरक्षक/लेख जांच एवं पुनरीक्षण समिति/संपादन मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

	रचनाओं के नाम	रचनाकार (सुश्री/श्री/श्रीमती)	पृष्ठ सं.
1	लेखापरीक्षा के क्षेत्र में ए.आई. का उपयोग	अवनीन्द्र कुमार राय, उप महालेखाकार	7
2	चुंचुरा की औपनिवेशिक विरासत	शंकर लाल सरकार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	10
3	“प्रेरणा” एक रिश्ता यादों के संग	चंदन कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	13
4	भौतिक उन्नति बनाम मानसिक शांति	अभय कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	15
5	हिंदी भाषा का विकास: एक सभ्यतागत और सांस्कृतिक यात्रा	चंदन कुमार बढ़ई, सहायक निदेशक (रा.भा.)	19
6	ऑफिस डेकोरम	ज़की अहमद, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	23
7	मानसिक स्वास्थ्य और समाज का दृष्टिकोण	प्रियदर्शिनी सिंह, सहायक निदेशक (रा.भा.)	26
8	काल से ताल मिलाओ	अरिंदम घटक, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	30
9	वशिष्ठ आश्रम	राजलक्ष्मी गांगुली, वरिष्ठ अनुवादक	31
10	कृत्रिम बुद्धिमत्ता की नैतिकता	सुकन्या दास, वरिष्ठ अनुवादक	33
11	जल क्या है?	सुभाष प्रसाद, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	36
12	जलवायु परिवर्तन	रवि पासवान, कनिष्ठ अनुवादक	37
13	डिजिटल डिटाॅक्स	शिलादित्य सिन्हा, लेखापरीक्षक	41
14	नवार्बों का शहर लखनऊ	अयन दास, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	44
15	पर्यावरण प्रदूषण	डिम्पल प्रसाद, कनिष्ठ अनुवादक	47
16	दैनिक जीवन में गणित का महत्व	अजीत कुमार यादव, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	49
17	मंजिल अभी दूर है	प्रमोद कुमार दास, कनिष्ठ अनुवादक	52
18	डिजिटल खतरा	शिबेंदू कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	58
19	समझ	नदीश जायसवाल, लेखापरीक्षक	60
20	पहलगाम हमले का कश्मीरी जनता पर व्यापक और गहन प्रभाव	आशीष कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	62
21	पृथ्वी की पुकार	अमरेश कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	65
22	आमार सोनार बांग्ला	राजीब दे, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	68
23	भारत में नदियों की भूमिका	किशन राम, कनिष्ठ अनुवादक	71
24	ये दोस्ती	चंदन बनर्जी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	76
25	लोकतंत्र	अर्जुन मंडल, लेखापरीक्षक	79
26	जैसी धारणा वैसी सोच: सकारात्मक और संस्कार का महत्व	अस्मिता तिवारी, लेखापरीक्षक	82
27	सोशल मीडिया	प्रिया साव, कनिष्ठ अनुवादक	86
28	हॉकी की हकीकत	रौनक राॅय, लेखापरीक्षक	90
29	ई-कचरा प्रबंधन	गुंजा कुमारी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	93
30	शहरी जीवन की चुनौतियां	राहुल चौधरी, कनिष्ठ अनुवादक	96
31	तैयारी-जीत की	सत्येंद्र कुमार, आशुलिपिक	99



श्री विभुदत्त बसंतिया

प्रधान महालेखाकार का संदेश

मुझे प्रसन्नता हो रही है कि इस कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'सोनार बंगला' के 19वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह भी हर्ष का विषय है कि वित्त वर्ष 2025-26 से इस कार्यालय की यह पत्रिका छमाही प्रकाशित होगी। इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की राजभाषा हिंदी के प्रति उनकी निष्ठा, प्रेम एवं राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

मैं कार्यालय के उन समस्त कर्मियों की सराहना करता हूँ जिनके प्रयास से यह पत्रिका प्रकाशित होने जा रही है। मैं आशा करता हूँ कि 'सोनार बांग्ला' के इस अंक में समाहित सभी रचनाएँ पाठकों को पसंद आएगी। मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

श्री विभुदत्त बसंतिया

प्रधान महालेखाकार



श्री अवनीन्द्र कुमार राय

उप महालेखाकार का संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सोनार बांग्ला' के 19वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं उत्थान में हिंदी पत्रिका का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बंगाल की भूमि सदा साहित्यिक संपदा से समृद्ध रही है। मुझे हर्ष है कि इस पत्रिका में हिंदीतर भाषी कार्मिकों ने भी अपनी साहित्यिक रुचि एवं हिंदी के साथ जुड़ाव का परिचय दिया है। इस पत्रिका का उद्देश्य हिंदी के विकास के साथ-साथ अधिकारियों/कर्मचारियों की सृजनात्मक शक्ति एवं अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि भी करना है। इस पत्रिका के संवर्धन से जुड़े सभी अधिकारी/कर्मचारी धन्यवाद के पात्र हैं।

आशा है कि पत्रिका से संबंधित सभी पक्षों- पाठकों, लेखकों तथा पत्रिका को मूर्त रूप प्रदान करने वाले कर्मियों का सहयोग इसी तरह बना रहेगा एवं यह अंक पहले से और अधिक रोचक व ज्ञानवर्धक साबित होगा।

शुभकामनाएँ !

अवनीन्द्र
राय

श्री अवनीन्द्र कुमार राय

उप महालेखाकार

(प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I, II एवं III/नॉन-एल.ए.डी.)



श्री श्रीराज मधुकर वाणी

उप महालेखाकार का संदेश

हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका सोनार बांग्ला के 19वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है जो हमारे लिए हर्ष का विषय है। हिंदी हमारी राजभाषा तथा कामकाज की भाषा है जिसका प्रोत्साहन हम प्रत्येक वर्ष अपनी पत्रिका के माध्यम से करते हैं, जिसमें कार्यालय के कर्मिकों का सहयोग हिंदी के प्रति उनके प्यार तथा राजभाषा के प्रति उनकी सद्भावना को चित्रित करता है। यह पत्रिका हमारे कर्मियों की सृजनशीलता को दर्शाता है।

आशा है यह अंक हमारे पाठकों के हृदय में अपना स्थान बना पाएगी। मैं रचनाकारों को राजभाषा हिंदी के प्रति उनकी निष्ठा के लिए और संपादक मंडल को पत्रिका के संपादन हेतु सहृदय धन्यवाद करता हूँ। साथ ही यह आशा करता हूँ कि भविष्य में भी हमारे कर्मिक अपनी लेखनी से हिंदी को एक नया मुकाम प्रदान करें तथा हिंदी का मान सदैव बनाये रखें।

धन्यवाद सहित।

श्री श्रीराज मधुकर वाणी

उप महालेखाकार

(ए.एम.जी.- III, IV/स्था.ले.प.विभाग एवं एफ.ए.डब्ल्यू.)

संपादकीय

हिंदी की उड़ान.....राष्ट्रीयता की पहचान



श्री चंदन कुमार बड़ई
सहायक निदेशक (रा.भा.)

प्रिय पाठकों,

“सोनार बांग्ला” के 19वें अंक के माध्यम से हम एक बार फिर अपनी रचनात्मक और सांस्कृतिक यात्रा को आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। यह पत्रिका हमारे कार्यालय की रचनात्मकता का प्रतीक होने के साथ-साथ हिंदी भाषा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का जीवंत प्रमाण है। इस अंक में हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों ने अपनी लेखनी के माध्यम से विचारों, भावनाओं और अनुभवों को शब्दों में पिरोया है, जो हमारी कार्यालयी संस्कृति की विविधता और समृद्धि को दर्शाता है।

हम अपने सभी लेखकों को उनके अमूल्य योगदान के लिए हार्दिक धन्यवाद देते हैं। उनकी कविताएँ, कहानियाँ, निबंध और विचार इस अंक को सजीव बनाते हैं। प्रत्येक रचना न केवल हमारी प्रतिभा को उजागर करती है, बल्कि हमें एक-दूसरे के विचारों से प्रेरित होने का अवसर भी प्रदान करती है। हम आशा करते हैं कि आप सभी इन रचनाओं का आनंद लेंगे और इनके पीछे छिपी भावनाओं और विचारों से जुड़ाव महसूस करेंगे।

हमारा कार्यालय हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासरत है। “सोनार बांग्ला” इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो हमें अपनी मातृभाषा में अभिव्यक्ति का मंच देता है और इसे कार्यालय के दैनिक कार्यों में शामिल करने के लिए प्रेरित करता है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान और एकता का प्रतीक है। हम चाहते हैं कि यह पत्रिका हिंदी को और अधिक जीवंत, सरल और प्रभावी ढंग से अपनाने का माध्यम बने।

हम अपने पाठकों से भी इस पत्रिका के संबंध में उनके विचार और सुझाव जानना चाहते हैं। आपकी प्रतिक्रिया हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें पत्रिका को और बेहतर बनाने में मदद करेगी। कृपया अपनी राय, सुझाव या किसी विशेष रचना के बारे में अपने विचार हमारे साथ साझा करें। आपकी भागीदारी इस पत्रिका को और अधिक समृद्ध और समावेशी बनाएगी।

सादर,

श्री चंदन कुमार बड़ई
सहायक निदेशक (राजभाषा)
‘संपादक’

□

आपके पत्र



सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) पश्चिम बंगाल
कोलकाता-700001

विषय:- हिंदी पत्रिका 'सोनार बंगला' के 18वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'सोनार बंगला' का 18वां अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं, विशेषकर गिन्यालेखित रचनाकारों की रचनाएँ प्रशंसनीय हैं:-

क्रम सं.	रचनाकार	रचनाएँ
1	श्री चौरव कुमार मिश्रा	वेब 3.0
2	श्री चंदन कुमार बड़ई	हिंदी की बहुआयामी भूमिका
3	श्री नीरज कुमार सिन्हा	जीवन क्या है
4	श्री रवि पासवान	पत्रकारिता एवं संसार व्यवस्था

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

EKTA
सहायक निदेशक (राजभाषा)

Digitally signed by
Ekta
Date: 09-04-2025
16:40:42

88



भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्यालय महानिदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़
Indian Audit & Accounts Department
Office of the Director General of Audit (Central),
Chandigarh

डीजीए(के.)/राजभाषा/सन्देश/2025-26/10

दिनांक 22/04/2025

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता-700001

विषय:- हिंदी ई-पत्रिका 'सोनार बंगला' के 18वें अंक के संबंध में।

महोदय,

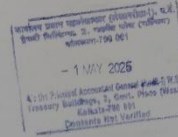
आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'सोनार बंगला' की एक ई-प्रति दिनांक 04.04.2025 को प्राप्त हुई। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ प्रशंसनीय व पठनीय हैं। पत्रिका की साज-सजा आकर्षक है एवं कार्यालयीन विज्ञान पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। औचित्य रचनाकारों एवं पत्रिका के कुशल संपादक-मंडल को हार्दिक बधाई।

आशा है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के निरंतर उच्चतम भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

सधन्यवाद।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी



सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2025-26/

दिनांक 23-04-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.भ.),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता-700001

महोदय/महोदया,

विषय: वार्षिक हिंदी पत्रिका 'सोनार बंगला' के 18वें अंक की प्रगति के संबंध में।
संदर्भ: आपके कार्यालय का ई-मेल दिनांक 27.03.2025

आपके कार्यालय की वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका 'सोनार बंगला' के 18वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई इसके लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ खासकर श्री संकर लाल सरकार का लेख 'जैव प्रौद्योगिकी का भविष्य', श्री गौरव कुमार मिश्रा का लेख 'वेब 3.0', श्री ज़ाकी अहमद का लेख 'मैं हौक हूँ', श्रीमती प्रियदर्शिनी सिंह की कहानी 'सौख', श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली का लेख 'बिष्णुपुर कलात्मक उत्कृष्टता तथा टेराकोटा वास्तुकला का शहर', श्री सुभाष प्रसाद की कविता 'बेटा', सुश्री अस्मिता तिवारी का लेख 'आदिभिशियल इंटरलेक्स (कृत्रिम बुद्धिमत्ता)' एवं श्री सत्येंद्र कुमार का लेख 'पत्नी की अहमियत' आदि रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका 'सोनार बंगला' की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उच्चतम भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Rohini K R
Date: 23-04-2025
10:50:05
सहायक निदेशक (राजभाषा)



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकबारी), तमिलनाडु,
361, अन्ना सलाई, तेयनपेट, चेन्नई-600 018
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E),
TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI-600 018
वेबसाइट/Website: <https://cag.gov.in/ac/tamil-nadu/en> ई-मेल/Email:
agactamilnadu@ac.cag.gov.in
IVRS Phone No.: 044-24325050, टेलीफोन नं./Phone No.: 044-24324500, फैक्स नं./Fax No.: 044-24320562

सं. हिंदी कक्ष Hindi Cell अ.प./A.L/2024-25/90 नं.	दिनांक: 08.04.2025
सेवा में, सहायक निदेशक (राजभाषा), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल कोलकाता - 700001	To, ASSISTANT DIRECTOR (OFFICIAL LANGUAGE), OFFICE OF PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I), WEST BENGAL, TREASURY BUILDING KOLKATA - 700001

विषय: आपकी पत्रिका हेतु प्रतिभाषा पत्र - संबंधी

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका 'सोनार बंगला' के 18वें अंक की प्रति इस कार्यालय को लक्ष्य प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यालयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। इस अंक में प्रकाशित पर्यावरण प्रदूषण: कारण और निवारण, तुम क्या कहोगे?, वो आखरी बार जब हम मिले, बिष्णुपुर: कलात्मक उत्कृष्टता तथा टेराकोटा वास्तुकला का शहर, धरोहर, देश की आत्मा है हिन्दी, आधुनिक विज्ञान और मानव जीवन, और पत्रकारिता एवं संसार व्यवस्था विशेष रूप से उत्कृष्ट हैं। राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सुझावमय मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)



लेखापरीक्षा के क्षेत्र में ए.आई का उपयोग



श्री अविनीन्द्र कुमार राय
उप महालेखाकार

लेखापरीक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो वित्तीय और परिचालन प्रणालियों की सटीकता, पारदर्शिता और नियामक अनुपालन को सुनिश्चित करती है। भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक (CAG) जैसे संगठन इस प्रक्रिया के माध्यम से सार्वजनिक धन के उपयोग में जवाबदेही और सुशासन को बढ़ावा देते हैं। हाल के वर्षों में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), डेटा एनालिटिक्स, ब्लॉकचेन और अन्य आधुनिक तकनीकों ने लेखापरीक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व बदलाव लाए हैं। यह लेख इन तकनीकों के उपयोग, उनके प्रभाव, चुनौतियों और लेखापरीक्षा के भविष्य पर विश्लेषण करेंगे।

आधुनिक लेखापरीक्षा में डेटा एनालिटिक्स का उपयोग बड़े और जटिल डेटा सेट्स का विश्लेषण करने के लिए किया जा रहा है। CAG जैसे संगठन विभिन्न सरकारी योजनाओं, जैसे स्वच्छ भारत मिशन, प्रधानमंत्री आवास योजना और जीएसटी से संबंधित विशाल डेटा के साथ काम करते हैं। डेटा एनालिटिक्स उपकरण, जैसे SAS, Tableau और Python-आधारित सॉफ्टवेयर, वित्तीय लेनदेन में विसंगतियों, अनियमितताओं और जोखिमों की पहचान करने में सहायक हैं।

उदाहरण के लिए, CAG ने डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करके मनरेगा के तहत मजदूरी भुगतान और सामग्री खरीद में अनियमितताओं का पता लगाया है। यह तकनीक न केवल समय बचाती है, बल्कि लेखापरीक्षा की सटीकता को भी बढ़ाती



AI और मशीन लर्निंग लेखापरीक्षा प्रक्रिया को स्वचालित और अधिक बुद्धिमान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। मशीन लर्निंग एल्गोरिदम बड़े डेटा सेट्स में असामान्य पैटर्न, जैसे धोखाधड़ी या अनुपालन के उल्लंघन, को तुरंत पहचान सकते हैं। AI-आधारित उपकरण जोखिम-आधारित लेखापरीक्षा (Risk-Based Auditing) को लागू करने में मदद करते

हैं, जिसमें उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

CAG ने IDEA, TABLEU और जैसे सॉफ्टवेयर का व्यापक रूप से उपयोग किया है, जो डेटा विश्लेषण और जोखिम मूल्यांकन में सहायता प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, AI का उपयोग करके सरकारी अनुदानों के दुरुपयोग को पहचानने में 80% तक सटीकता प्राप्त की गई है, जो मैनुअल प्रक्रियाओं की तुलना में कहीं अधिक है।

लेखापरीक्षा में ब्लॉकचेन का उपयोग

ब्लॉकचेन तकनीक लेखापरीक्षा में पारदर्शिता और विश्वसनीयता को बढ़ाने का एक नया साधन है। यह तकनीक डेटा को एक अपरिवर्तनीय और विकेंद्रित डिजिटल लेजर में संग्रहीत करती है, जिससे डेटा में हेरफेर की संभावना न्यूनतम हो जाती है। सरकारी परियोजनाओं और अनुबंधों की लेखापरीक्षा में ब्लॉकचेन का उपयोग लेनदेन की प्रामाणिकता को सुनिश्चित करता है।

उदाहरण के लिए, ब्लॉकचेन-आधारित स्मार्ट कॉन्ट्रैक्ट्स का उपयोग करके सरकारी योजनाओं के फंड ट्रैकिंग को वास्तविक समय में मॉनिटर किया जा सकता है। इससे CAG को पारदर्शी और त्रुटि-मुक्त डेटा तक पहुंच प्राप्त होती है, जिससे लेखापरीक्षा प्रक्रिया अधिक विश्वसनीय बनती है।

प्रोसेस ऑटोमेशन (PA)

प्रोसेस ऑटोमेशन उपयोग दोहराए जाने वाले कार्यों, जैसे डेटा प्रविष्टि, सत्यापन और रिकॉर्ड मिलान, को स्वचालित करने के लिए किया जाता है। CAG जैसे संगठनों में, जहां लाखों लेनदेन की जांच की जाती है, PA समय और संसाधनों की बचत करता है। यह लेखापरीक्षकों को जटिल विश्लेषण और नीतिगत मूल्यांकन जैसे उच्च-मूल्य कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देता है। एक अध्ययन के अनुसार, PA ने लेखापरीक्षा प्रक्रिया में 50% तक दोहराए जाने वाले कार्यों को कम किया है।



AI के प्रयोग से होने वाले लाभ और प्रभाव को इन बिंदुओं में समझा जा सकता है।

1. **तेज और कुशल प्रक्रिया:** AI और डेटा एनालिटिक्स ने लेखापरीक्षा प्रक्रिया को तेज किया है। पहले जहां महीनों लगते थे, अब कुछ हफ्तों या दिनों में विश्लेषण पूरा हो जाता है।
2. **उच्च सटीकता:** मशीन लर्निंग और ब्लॉकचेन मानवीय त्रुटियों को कम करते हैं और डेटा की विश्वसनीयता सुनिश्चित करते हैं।
3. **जोखिम प्रबंधन:** AI उपकरण जोखिम-आधारित दृष्टिकोण को लागू करने में मदद करते हैं, जिससे लेखापरीक्षक महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर ध्यान दे सकते हैं।
4. **पारदर्शिता:** ब्लॉकचेन और डेटा एनालिटिक्स सरकारी खर्च में पारदर्शिता बढ़ाते हैं, जिससे CAG की विश्वसनीयता मजबूत होती है।

5. **लागत प्रभावी:** स्वचालित प्रक्रियाएं मैन्युअल श्रम को कम करती हैं, जिससे लेखापरीक्षा की लागत में कमी आती है।

हालांकि AI के लाभ के साथ साथ कुछ चुनौतियां भी हैं:

- **डेटा सुरक्षा और गोपनीयता:** संवेदनशील वित्तीय डेटा के उपयोग में साइबर सुरक्षा एक बड़ी चिंता है। डेटा उल्लंघन से बचने के लिए मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों की आवश्यकता है।
- **कौशल विकास:** लेखापरीक्षकों को AI, डेटा एनालिटिक्स और ब्लॉकचेन जैसे नए उपकरणों में प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है।
- **प्रारंभिक निवेश:** इन तकनीकों को लागू करने के लिए प्रारंभिक लागत अधिक हो सकती है, जो छोटे संगठनों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- **डेटा गुणवत्ता:** तकनीक की प्रभावशीलता डेटा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। अपूर्ण या गलत डेटा गलत निष्कर्षों का कारण बन सकता है।

लेखापरीक्षा के भविष्य की बात करें तो AI और आधुनिक तकनीकों के साथ और अधिक गतिशील और प्रभावी होने की संभावना है। CAG जैसे संगठन निम्नलिखित दिशाओं में प्रगति कर सकते हैं:

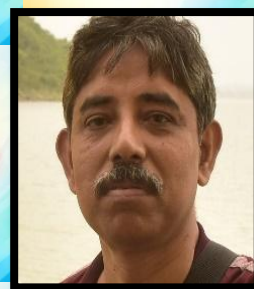
1. **वास्तविक समय लेखापरीक्षा:** ब्लॉकचेन और AI का उपयोग करके लेखापरीक्षा को वास्तविक समय में किया जा सकता है। इससे त्रुटियों और अनियमितताओं को तुरंत पकड़ा जा सकता है, जिससे सुशासन को बढ़ावा मिलेगा।
2. **प्रेडिक्टिव एनालिटिक्स:** मशीन लर्निंग मॉडल भविष्य में संभावित जोखिमों और धोखाधड़ी की भविष्यवाणी कर सकते हैं, जिससे लेखापरीक्षक सक्रिय उपाय कर सकते हैं।
3. **एकीकृत डेटा प्रणाली:** विभिन्न सरकारी विभागों के डेटा को एकीकृत करके एक समग्र लेखापरीक्षा प्रणाली विकसित की जा सकती है, जो योजनाओं के प्रभाव का व्यापक मूल्यांकन करेगी।
4. **नैतिक AI का उपयोग:** AI मॉडल्स को पारदर्शिता और नैतिकता के सिद्धांतों पर आधारित होना चाहिए ताकि जनता का विश्वास बना रहे।

अंत में हम कह सकते हैं कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आधुनिक तकनीकों ने लेखापरीक्षा को अधिक कुशल, सटीक और पारदर्शी बनाया है। भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक जैसे संगठन इन तकनीकों को अपनाकर सार्वजनिक जवाबदेही और सुशासन को मजबूत कर सकते हैं। हालांकि, इन तकनीकों को लागू करने में डेटा सुरक्षा, प्रशिक्षण और प्रारंभिक निवेश जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। दीर्घकालिक दृष्टिकोण से, ये तकनीकें लेखापरीक्षा को एक वास्तविक समय, डेटा-चालित और जोखिम-केंद्रित प्रक्रिया में बदल सकती हैं, जो भारत जैसे विकासोन्मुखी देश में सुशासन के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करेगी।

चुंचुरा की औपनिवेशिक विरासत

हुगली नदी के तट पर स्थित प्राचीन शहर चुंचुरा कभी डच उपनिवेश था। 17वीं शताब्दी के प्रारंभ में डच लोग भी व्यापार के लिए भारत आने लगे। 1602 में नीदरलैंड में 'यूनाइटेड डच ईस्ट इंडिया कंपनी' की स्थापना हुई थी। 1638 में, डच ईस्ट इंडिया कंपनी ने मुगल सम्राट शाहजहाँ से प्राप्त फर्मान की मदद से चुंचुरा में अपना व्यापारिक आधार स्थापित किया। प्रसिद्ध किला 'फोर्ट गुस्तावस' का निर्माण 1655 और 1665 के बीच हुगली नदी के तट पर किया गया था, जिसका नाम समकालीन बटाविया (वर्तमान जकार्ता) के गवर्नर गुस्ताव विलेम वान इम्हॉफ के नाम पर रखा गया था। आयताकार फोर्ट गुस्तावस कैसा दिखता था, इसका अंदाजा हैड्रिक वान शूलेनबर्ग द्वारा बनाई गई एक तेल चित्रकला से लगाया जा सकता है।

डच लोग मुख्यतः व्यापार के लिए भारत आये थे, उनका अंग्रेजों की तरह कोई राजनीतिक उद्देश्य नहीं था। इसीलिए बंगाल के नवाब से उनके



श्री शंकर लाल सरकार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा



चुंचुरा में डच कब्रिस्तान



चुंचुरा के सदियों पुराने पिरामिड की वर्तमान स्थिति

बहुत अच्छे संबंध थे। 1757 में प्लासी के युद्ध के बाद स्थिति बदल गयी। जब अंग्रेजों को राजनीतिक शक्ति प्राप्त हुई तो डचों के साथ संघर्ष शुरू हो गया। 1759 में चंदननगर और चुंचुरा के बीच अंग्रेजों और डचों के बीच लड़ाई हुई। इस युद्ध को 'चिनसुरा का युद्ध' या 'बिदारा का युद्ध' के नाम से जाना जाता है। युद्ध में डचों की हार के बाद, चुंचुरा का नियंत्रण अंग्रेजों के पास चला गया। 1824 में, एंग्लो-डच संधि के माध्यम से, डचों ने उपमहाद्वीप में अपनी सारी संपत्ति ब्रिटिशों को सौंप दी। 1829 में अंग्रेजों ने फोर्ट गुस्ताव को ध्वस्त कर दिया। खंडहरों के ऊपर तीन नई इमारतें बनाई गईं। यह बनाई गई चुंचुरा कोर्ट बिल्डिंग, मदरसा और पुलिस लाइन की इमारतें अभी भी औपनिवेशिक विरासत को बरकरार रखती हैं। यह 200 वर्षों तक डच लोगों का निवास स्थान था। उस समय के शासक आज भी शहर के बीचों-बीच शांति से सोते हैं। पार्क स्ट्रीट की तरह इस शहर में भी एक प्रसिद्ध कब्रिस्तान है। इसका नाम है डच कब्रिस्तान। ब्रिटिशों के कब्जे से पहले, 1615 से 1825 तक चुंचुरा एक डच उपनिवेश था। इस कब्रिस्तान का निर्माण इसी बीच किसी समय हुआ था। इसकी स्थापना तत्कालीन

गवर्नर टिलफर्ट ने की थी। यहां अभी भी लगभग पैंतालीस कब्रें देखी जा सकती हैं। विशाल डच कब्रिस्तान में मिस्र की विरासत के स्तंभ मौजूद हैं। मुख्य कब्रिस्तान से थोड़ा आगे एक और चौकोर पिरामिड जैसी मीनार दिखाई देती है। निचला वर्गाकार आधार एक सौ वर्ग फुट है, तथा ऊंचाई लगभग तीस फुट है। पूरा स्तंभ चूना-गारा और ईंटों से बना है। स्तंभ प्लास्टर ऑफ पेरिस से ढके हुए हैं। उपेक्षा और लापरवाही के कारण पिरामिड आज जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। आसपास के आधुनिक घरों के बीच में ऊंचे स्थान पर स्थित इस पिरामिड पर कोई पट्टिका नहीं लगी है, जिससे यह स्पष्ट नहीं हो पाता कि यह मकबरा है या कुछ और।

जीटी रोड के किनारे एक अन्य डच स्मारक सुज़ाना अन्ना मारिया का मकबरा है, जिसे साहिब बीबी या सात बीबी की कब्र के रूप में भी जाना जाता है। इतिहास कहता है कि सुज़ाना का जन्म 1743 में नीदरलैंड के थिएल नामक एक छोटे से शहर में हुआ था। सुज़ाना नीदरलैंड से चुंचुरा के डच



सात साहबों की पत्नी की कब्र

उपनिवेश में कैसे आयी इस बारे में कुछ भी ज्ञात नहीं है। 1759 में सुज़ाना ने प्रभावशाली डच व्यापारी पीटर ब्रुइस से विवाह किया। 1759 में बिडेरा के युद्ध में डचों को अंग्रेजों ने बुरी तरह पराजित किया। 1782 में यूरोप में चौथे एंग्लो-डच युद्ध के बाद, अंग्रेजों ने चुंचुरा सहित बंगाल में सभी डच बस्तियों को जब्त कर लिया। चुंचुरा में डचों के लिए इस अशांत स्थिति के बीच 1783 में पीटर की मृत्यु हो गई। उन्हें चुंचुरा के मियारबेडे स्थित डच कब्रिस्तान में दफनाया गया। मियाबर कब्रिस्तान में सबसे ऊंचा ओबिलिस्क आकार का मकबरा आज भी खड़ा है। अंग्रेजी प्रभुत्व के युग के दौरान, 1795 में, डच महिला सुज़ाना ने एक सुप्रतिष्ठित अंग्रेजी व्यवसायी थॉमस येट्स से विवाह किया। लेकिन यह शादी भी ज्यादा दिन नहीं चली। थॉमस की कुछ ही दिनों में मृत्यु हो गई।

सुज़ाना के पास एक बड़ा महल था, जिसका नाम था आयेसबाग, जो डच बस्ती चुंचुरा और फ्रांसीसी चंदननगर के बीच तालडांगा नामक स्थान पर साठ बीघा ज़मीन पर बना था। जब 1809 में सुज़ाना की मृत्यु हुई, तो उसकी अंतिम इच्छा के अनुसार, यहां उसकी कब्र बनाई गई। इतिहासकारों का मानना है कि सुज़ाना का मकबरा मुर्शिदाबाद के काशीमबाजार में स्थित एक डचमैन, तामेरस कैंटर विस के मकबरे की नकल में बनाया गया था। सुज़ाना की कब्र पर कहीं भी कोई स्मारक शिलालेख नहीं है, केवल गुंबद के किनारे पर शिलालेख है "सुज़ाना अन्ना मारिया येट्स रेबूरे वेर्केर्क ओबिल्ट 12 मई एनो 1809" रेबूरे वेर्केर्क, जिसका अर्थ है कि जन्म के समय उसका उपनाम वेर्केर्क था। यद्यपि सुज़ाना के जीवनकाल के दौरान उनकी गतिविधियों के बारे में अधिक जानकारी नहीं है, लेकिन यह सर्वविदित है कि अपनी विशाल भूमि और अपार संपत्ति के कारण वह आम लोगों के बीच राजमाता के रूप में जानी जाती थीं। वह दान पर बहुत ध्यान देती थीं।

लेकिन इतिहास चाहे जो भी कहे, सुज़ाना अन्ना मारिया का चरित्र उसके इर्द-गिर्द विकसित लोककथाओं के कारण रहस्यमय बन गया है। प्रसिद्ध सुज़ाना की सात बार शादी हुई थी और हर बार

उसके पति की शादी के बाद रहस्यमय तरीके से मृत्यु हो गई। सुज़ाना पर कई बार अपने पतियों की हत्या का संदेह जताया गया, लेकिन कोई सबूत नहीं मिला। सुज़ाना की किंवदंती पर आधारित लेखक रस्किन बॉन्ड ने "सुज़ाना के सात पति" नामक पुस्तक लिखी। उस कहानी पर आधारित विशाल भारद्वाज ने 2011 में "सात खून माफ" फिल्म बनाई। किंवदंती है कि सुज़ाना के पास विशाल खजाने थे जो अभी भी स्मारक के अंदर छिपे हुए हैं, और सुज़ाना के पालतू सांप पीढ़ियों से उन खजानों की रखवाली कर रहे हैं।

इतिहास पुष्टि करता है कि सुज़ाना की दो बार शादी हुई थी। हालाँकि, उनके दोनों पतियों की मृत्यु का सही कारण ज्ञात नहीं है। अब सवाल यह है कि ये सात पति कहां से आये? "कल्चर ऑफ वेस्ट बंगाल" पुस्तक के लेखक विनय घोष बताते हैं कि 17वीं और 18वीं शताब्दी में विभिन्न रोगों के इलाज और सौभाग्य की प्राप्ति के लिए वन देवियों की पूजा की जाती थी। वन देवियों के विभिन्न रूप थे, और साथ में उनकी कल्पना सात बहनों या सतबीबी के रूप में की जाती थी। मुस्लिम प्रभाव के तहत, उनकी पूजा सतबीबी नाम से भी लोकप्रिय थी। संभवतः एक समय में चुंचुरा के इस मुस्लिम बहुल क्षेत्र में सात बीबी की पूजा प्रचलित थी। निकटवर्ती बुनोकाली मंदिर इसका गवाह हो सकता है। यह लोककथा संभवतः सतबीबी और सुज़ाना अन्ना मारिया की कब्रों को मिलाकर बनाई गई होगी।



चुंचुरा के घड़िस्तंभ

डिप्टी मजिस्ट्रेट बंकिम चंद्र चटर्जी अपनी नौकरी के लिए उत्तर 24 परगना के कंथालपारा स्थित अपने घर से नाव द्वारा इस शहर में आते थे। जोराघाट, चुंचुरा में वंदे-मा-तारम भवन आज भी उनकी गवाही देता है। यहीं पर 'वन्दे मातरम' की रचना हुई थी।

हालाँकि, यह लेख चुंचुरा के घड़िस्तंभ का उल्लेख किए बिना पूरा नहीं हो सकता। यह घड़िस्तंभ 1914 में चुंचुरा में चार सड़कों के चौराहे पर स्थापित किया गया था। इस स्तंभ में चार घड़ियाँ हैं। यह घड़िस्तंभ राजा एडवर्ड सप्तम की याद में बनाया गया था। इस स्तंभ पर एडवर्ड की मूर्ति के साथ एक स्मारक पट्टिका लगी हुई है। अल्बर्ट एडवर्ड तत्कालीन भारतीय उपमहाद्वीप और इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया के सबसे बड़े पुत्र थे। 1901 में महारानी विक्टोरिया की मृत्यु के बाद अल्बर्ट एडवर्ड को तत्कालीन भारतीय उपमहाद्वीप का शासक नियुक्त किया गया था। 9 वर्षों तक शासन करने के बाद 1910 में उनकी मृत्यु हो गई। लेकिन एक बात अनकही नहीं रह सकती, और वह यह कि यह घड़िस्तंभ सचमुच देखने लायक है। घड़िस्तंभ न केवल चुंचुरा बल्कि पूरे बंगाल की औपनिवेशिक विरासत की सर्वोत्तम अभिव्यक्तियों में से एक है।

“प्रेरणा : एक रिश्ता यादों के संग”

जो बैठे कभी यादों का हम महल बनाने,
तो उन यादों में एक चेहरा मासूमसा हम आबाद करेंगे-
जो आयेंगे हजारों नाम जुबां पे,
तो अचानक ही हम याद करेंगे " यश ",
तेरे अपनेपन से मिली प्रेरणा को हम याद करेंगे ।-

डगमगाया जो कभी जिम्मेदारियों के पथ से साहस मेरा,
तो तेरे लिए किये अर्पण वो हर पल हम याद करेंगे,
जो रुठा ये वक्त कभी हमसे मेरी गलतियों से,
तो तेरे लिए बनाई उन कहानियों से हम फ़रियाद करेंगे,
तेरे भोलेपन से मिली प्रेरणा हम याद करेंगे।

आई जो रुकावटें कभी मेरी ज़िंदगी में,
तो तेरे लिए न रुकने की वो कसमें हम याद करेंगे,
जो बेबस हुई कभी मेरी ये मुस्कुराती ज़िंदगी,
तो इस ज़िंदगी से तेरा इज़हार हम बार बार करेंगे,
तेरे बदलते आत्मविश्वास से मिली प्रेरणा हम याद करेंगे।

कभी हारा जो हिम्मत बदलते मौसम में हमने,
तो तेरे लिए बहाए धूप में पसीना संग बारिश का महीना हम याद करेंगे,
जो हुआ गुजरना कांटों भरी राहों से कभी,
तो उस वक्त की नज़ाकत और तेरे मेरे हसीन इम्तिहानों को हमेशा हम सलाम करेंगे,
तेरे खुश होने के अंदाज से मिली प्रेरणा हम याद करेंगे।

लड़खड़ाई जो कभी मेरी ये रुख बदलती हसीन ज़िंदगी,
तो तेरे लिए हर परिस्थितियों में खुद को संभालना हम याद करेंगे,
जो भटका मेरा ध्यान मेरी मंजिल से कभी,
तो तेरे लिए कभी चाय तो कभी पानी संग खो जाने का नया खेल हम इज़ाद करेंगे,
तेरे बदलते रुझानों से मिली प्रेरणा हम याद करेंगे।

जो चुभेंगे कांटे कलियों को पाने की ख्वाहिश में कभी,
तो उन आंसुओं संग खुशियों का मिलन हम याद करेंगे,
गिरे जो खाके ठोकरें इम्तिहानों के डगर पे कभी,
तो एक बार नहीं उठ कर चलने की कोशिश उस डगर पे हम सौ बार करेंगे,
तेरे नाजुक हौसलों से मिली प्रेरणा हम याद करेंगे।



श्री चंदन कुमार
सहायक लेखापरीक्षा
अधिकारी

थके जो संघर्ष की राहों पर एक पल को भी हम,
तो कभी इम्तिहानों में कोशिश, कभी कोशिश में इम्तिहानों को हम याद करेंगे,
जो कभी हुआ आत्मविश्वास कमजोर मेरा,
तो तुझसे मिली संघर्ष और कामयाबी का संगम हम सरेआम करेंगे,
तेरी कामयाबी से मिली प्रेरणा हम याद करेंगे।

जो रोके कभी मुझे लोगों का ताना,
तो कभी बेवक़्त मिली रुसवाईयों को हम याद करेंगे,
आई जो कभी बिन बुलाए उलझने जिंदगी में,
तो "यश" के लिए "आनंद" को मनाने की कोशिश हम हर सुबह शाम करेंगे,
तुझसे मिली हर प्रेरणा को हम याद करेंगे।

**हिंदी को जीवन की भाषा बनाओ। यह केवल
बोलचाल की भाषा नहीं, बल्कि विचारों की
अभिव्यक्ति की भाषा है।**

मुंशी प्रेमचंद

भौतिक उन्नति बनाम मानसिक शांति

मनुष्य की प्रकृति सदैव विकासशील रही है – वह खोजता रहा, संजोता रहा, बनाता रहा। आज हम उस युग में हैं जहाँ इंसान ने पहाड़ काट दिए, समुद्र नाप लिए, और आकाश छू लिया। लेकिन उस यात्रा में क्या उसने अपने भीतर झाँकने की भी कोशिश की? भौतिक उन्नति ने हमें चकाचौंध से भर दिया है, पर वह शांति, वह भीतर का मौन, वह अंतर की मिठास कहीं खो गई है। यह मंथन केवल एक विमर्श नहीं, बल्कि उस आम आदमी की जुबान है जो हर दिन इस प्रश्न से टकराता है – क्या जो मैं जी रहा हूँ, वह जीना है या केवल चलना?



श्री अभय कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आज के आधुनिक समाज में सफलता का मापदंड बदल गया है – बैंक बैलेंस, कार का मॉडल, कपड़ों का ब्रांड, फोन की नवीनतम तकनीक। किसी जमाने में, किसी व्यक्ति से पूछो – आप क्या करते



हैं? वह कहता था: जीता हूँ। आज वही सवाल पूछो, तो जवाब आता है: बिज़ी हूँ। बहुत टार्गेट्स हैं, बहुत मीटिंग्स हैं। यह 'बिज़ी' होना अब पहचान बन गया है। जो व्यस्त नहीं है, वह या तो असफल है या बेकार समझा जाता है। इसी दौड़ में दिन-रात एक कर देने वाला इंसान, जब रात को तकिए पर सिर रखता है, तब भी दिमाग उसी मीटिंग की प्रेजेंटेशन बना रहा होता है।

यह दौड़ कहाँ तक हमें ले जा रही है? एक आम मध्यवर्गीय परिवार में, पिता रोज़ दफ्तर जाते हैं, माँ घर और काम दोनों संभालती है, बच्चे ट्यूशन और स्कूल में व्यस्त हैं। लेकिन इस सबमें, कहीं कोई संवाद नहीं है, कोई गहराई नहीं है। घर एक विश्रामगृह बन गया है, न कि अपनत्व का केंद्र। हर कोई अपनी दुनिया में खोया है। एक परिवार, चार कमरे, चार स्क्रीन – और चार अकेलेपन।

ऐसे ही एक परिवार की कहानी है – जहाँ माँ एक स्कूल शिक्षिका थी, पिता एक सरकारी इंजीनियर, और दो बच्चे कक्षा 5 और 8 में। माँ सुबह 5 बजे उठती, खाना बनाकर बच्चों को तैयार करती, फिर स्कूल जाती। पिता देर रात तक ऑफिस के ई-मेल निपटाते। बच्चे स्कूल, कोचिंग, स्क्रीन। एक शाम माँ अचानक बेहोश होकर गिर पड़ी। रिपोर्ट आई – हाई बीपी, अत्यधिक तनाव और थकान। डॉक्टर ने कहा – मैडम, आप थकी नहीं हैं, आप पूरी तरह सूख गई हैं। आप सिर्फ शरीर चला रही थीं, मन को ज़रा भी विश्राम नहीं दिया।

उन शब्दों ने उस परिवार की आँखें खोल दीं। माँ को एक महीने की छुट्टी दी गई। और उन तीस दिनों में उन्होंने ध्यान सीखा, मौन साधा, बगीचे में मिट्टी से खेला, पुराने गाने गाए और बच्चों की कहानियाँ सुनीं। पहली बार बच्चों ने माँ को मुस्कुराते देखा, और माँ ने अपने भीतर का बचपन पुनः पाया। उस महीने ने उस परिवार को फिर से परिवार बना दिया। बच्चों की परफॉर्मेंस सुधरी, पिता की झुंझलाहट कम हुई, और माँ के माथे की शिकन जैसे मिट्टी में घुल गई।

ऐसे उदाहरण हमें यह बताते हैं कि मानसिक शांति केवल हिमालय जाकर नहीं मिलती, वह तो हमारी दिनचर्या में छिपी होती है – बस उसे स्वीकारना होता है। शांति उस जगह है जहाँ हम स्वयं से मिलते हैं – बिना नकाब, बिना दिखावे।

हम कभी गाँव की ओर देखें – जहाँ सूरज उगते ही लोग खेतों की ओर निकलते हैं, दिनभर मेहनत करते हैं, और शाम को चूल्हे के पास बैठकर खाते हैं। वहाँ भले ही आधुनिक उपकरण न हों, पर एक मुस्कराहट होती है – जो आत्मा की उपस्थिति का प्रमाण है। वहीं महानगरों में सब कुछ है – लेकिन एक अधूरी बेचैनी भी है, जो हर चेहरे पर धूप की तरह चिपकी होती है। यह तुलना कोई आदर्शवाद नहीं है, बल्कि सच्चाई है कि साधनों की अधिकता शांति की गारंटी नहीं होती।

ध्यान का अर्थ सिर्फ आँखें बंद करना नहीं है, वह एक कला है – खुद को फिर से सुनने की। मौन कोई कमजोरी नहीं, वह तो आत्मा का संवाद है। जब हम मौन होते हैं, तो भीतर का शोर स्पष्ट सुनाई देता है – और वहीं से परिवर्तन की शुरुआत होती है। एक व्यक्ति जो दिन में दस मिनट भी निःशब्द बैठता है, वह धीरे-धीरे आत्मा से संवाद करना सीख जाता है। और जब आत्मा से संवाद होता है, तो भौतिक वस्तुएँ केवल माध्यम बनती हैं – उद्देश्य नहीं।

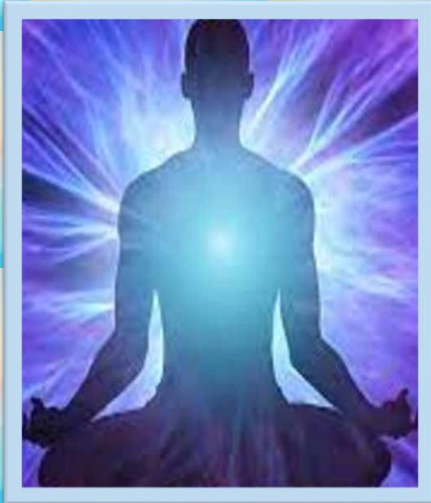
हमने जब से प्रगति को केवल 'संग्रह' मान लिया, तब से हमने खोया भी बहुत है। किसी समय हमारा जीवन पंचमहाभूतों से जुड़ा था – मिट्टी, जल, वायु, अग्नि और आकाश – और आज यह पाँच ऐप्स से जुड़ गया है। अब बच्चे 'भूख' की जगह 'क्रेविंग' शब्द सीखते हैं, और आनंद की जगह 'डोपामीन' शब्द सुनते हैं। हमने 'भाव' को विज्ञान से तोला है, और 'शांति' को जिम और स्पा से जोड़ दिया है।

बच्चों से बातचीत अब क्या होमवर्क किया? तक सीमित रह गई है। पिता का प्रेम "इस महीने क्या लाना है?" में बँध गया है। माँ की ममता अब ऑनलाइन ऑर्डर कर दो, से नापी जाती है। और बच्चों का उत्तर अधिकतर यही होता है – बिज़ी हूँ, बाद में बात करता हूँ। यह शब्द – बाद में – अब इतना स्थायी हो गया है कि शायद वह 'बाद' कभी आता ही नहीं।

यह सब उस मानसिक विखंडन की शुरुआत है जहाँ भौतिकता ने भावनाओं पर आधिपत्य कर लिया है। इंसान ने साधनों को जीवन का केंद्र बना लिया है और साध्य को पीछे छोड़ दिया है। आज जब कोई कहता है मैं बहुत सफल हूँ, तो वह सिर्फ अपने बैंक स्टेटमेंट की बात करता है, न कि अपने मानसिक संतुलन की। वह नहीं बताता कि पिछले कितने महीनों से उसकी नींद पूरी नहीं हुई, वह कब आखिरी बार किसी की आँखों में देख कर मुस्कराया था, कब बिना वजह गुनगुनाया था।

यह विडंबना है कि जिस सफलता के पीछे हम दौड़ रहे हैं, वह हर कदम पर हमें खुद से दूर करती जाती है। वह रिश्तों को तोड़ती है, संवेदनाओं को कुंद करती है और अंततः हमें थका देती है। और फिर एक दिन, हम एक शांत कमरे में, एक आरामदायक कुर्सी पर बैठकर सोचते हैं – इतना कुछ पा लिया, फिर भी क्यों अधूरा हूँ?" न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।" (भगवद्गीता 4.38)

अर्थ: इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र कुछ भी नहीं है। वह व्यक्ति जिसे आत्मा का अनुभव हो गया है, वही जानता है कि सच्चा सुख भीतर है।



मानसिक शांति, जिसका जिक्र हम अक्सर करते हैं, कोई जादुई शब्द नहीं है। यह कोई लकड़ी नहीं, बल्कि आवश्यकता है – ठीक वैसे ही जैसे भोजन और जल। और यह शांति कहीं बाहर नहीं, हमारे भीतर ही होती है। वह तब प्रकट होती है जब हम रुकते हैं, जब हम प्रश्न करते हैं, जब हम अपने ही भीतर उतरते हैं।

इस शांति की अनुभूति हमें ध्यान में मिलती है, योग में मिलती है, प्रकृति के साथ एकाकार होने में मिलती है। जब सुबह सूरज की पहली किरण हमारी पलकों को छूती है, जब बच्चे का हँसता चेहरा हमारे भीतर के तनाव को बहा ले जाता है, जब माँ के हाथों का खाना आत्मा को छूता है – तब हम

उस शांति को महसूस करते हैं।

लेकिन अफ़सोस, इन पलों को हमने 'व्यस्तता' के नाम पर खो दिया है। अब सूरज नहीं दिखता, बस अलार्म बजता है। बच्चों के चेहरे नहीं दिखते, सिर्फ़ उनके स्कूल रिपोर्ट्स आते हैं। माँ का खाना नहीं मिलता, बस डिलिवरी ऐप से पैकड फूड आता है।

हमारे पुरखों ने कभी जीवन को इतना जटिल नहीं बनाया। वे साधारण थे, पर संतुष्ट थे। एक किसान को अगर फ़सल अच्छी मिलती, तो वह देवताओं का धन्यवाद करता। वह जानता था – *जो मिला, वह पर्याप्त है।* आज हमें लाखों का पैकेज भी कम लगता है। क्योंकि तुलना हमारी आदत बन गई है। सोशल मीडिया ने इसमें घी डाला है – वहाँ हर कोई दिखता है: हँसता हुआ, यात्रा करता हुआ, सफलता में डूबता हुआ। और हम अपने खालीपन को लेकर अपराधबोध से भर जाते हैं।

सवाल यह है कि क्या हम इस दौड़ से बाहर निकल सकते हैं? उत्तर है – हाँ, बिल्कुल। लेकिन उसके लिए सबसे पहले यह स्वीकार करना होगा कि हम थके हुए हैं, हम खोए हुए हैं। हमें रुकना होगा, गहराई से देखना होगा कि हमारी प्राथमिकताएँ क्या हैं।

हम चाहें तो एक बार फिर जीवन को संतुलित बना सकते हैं। भौतिक उन्नति को साधन मान सकते हैं, साध्य नहीं। हम तकनीक का प्रयोग कर सकते हैं, पर अपने जीवन को उसकी गुलामी से मुक्त रख सकते हैं। हम पैसा कमा सकते हैं, पर वह पैसा हमारे रिश्तों का मूल्य न निर्धारित करे।

हमें अपने बच्चों को समय देना होगा – सिर्फ़ स्कूल भेजकर नहीं, बल्कि उनके साथ बैठकर, उनके सवालों के जवाब देकर, उनके सपनों में भागीदार बनकर। हमें अपने बुजुर्गों से समय निकालकर बात करनी होगी, उनकी कहानियों को सुनना होगा, क्योंकि वहीं हमारी जड़ें हैं। और सबसे बढ़कर, हमें अपने मन से संवाद करना होगा। दिन में एक बार बैठकर खुद से पूछना होगा – *क्या मैं आज सचमुच जिया?*

हमारे शास्त्र हमें यही सिखाते हैं –

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।

युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा॥

अर्थात् - जीवन में संतुलन ही दुःखों से मुक्ति का मार्ग है। गौतम बुद्ध ने 'मध्यम मार्ग' की बात की, जिसमें न अत्यधिक भोग है, न अत्यधिक त्याग। गीता कहती है – कर्म करो, फल की चिंता मत करो – यही मानसिक स्वतंत्रता की राह है।

शांति किसी पर्वत की चोटी पर नहीं मिलती, वह तो रसोई में माँ की आवाज़ में, बरामदे में पिता के इंतज़ार में, बच्चों की शरारत में, और आत्मा के मौन में छुपी होती है। लेकिन अगर हम उसे सिर्फ सफलता के शोर में ढूँढ़ेंगे, तो वह और भी दूर जाती जाएगी।

अंततः, जीवन वही है जो हमें पूर्ण बनाए – और पूर्णता तब आती है जब बाहर की उपलब्धियाँ, भीतर की शांति से जुड़ती हैं। अगर हम हर दिन जागते हैं और अपने भीतर संतोष, अपनापन और उद्देश्य का अनुभव करते हैं, तो हम सचमुच प्रगति कर रहे हैं। और यदि नहीं, तो फिर चाहे हमारे पास कितना भी हो – हम केवल 'चल' रहे हैं, जी नहीं रहे।

इसलिए आज जब हम भौतिक उन्नति और मानसिक शांति के बीच चयन की बात करते हैं, तो उत्तर किसी एक के पक्ष में नहीं है। उत्तर है – *संतुलन*। वह संतुलन जो जीवन को पूर्ण बनाता है। साधनों से इनकार नहीं, पर साध्य की भूख बनी रहे। बाहर से समृद्ध और भीतर से शांत।

क्योंकि अंत में जब यह जीवन समाप्त होगा, कोई भी यह नहीं पूछेगा कि आपके पास कितनी गाड़ियाँ थीं, कितने फॉलोवर्स थे, या आपने कितना कमाया था। लोग बस यह याद रखेंगे – *क्या आप एक अच्छे इंसान थे?*

और अब इस यक्ष प्रश्न का जवाब केवल वही दे पाएगा – जिसने भीतर झाँका हो, शांति को जाना हो, जिसने जीवन को जिया हो।

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा हो जाता है। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो पूरे देश को एक सूत्र में बांधने की क्षमता रखती है।

महात्मा गांधी

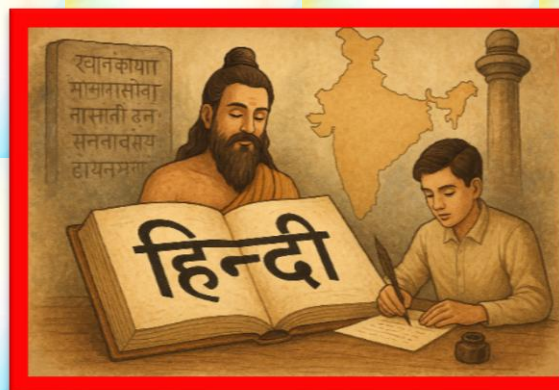
हिंदी भाषा का विकास: एक सभ्यतागत और सांस्कृतिक यात्रा



श्री चंदन कुमार बड़ई
सहायक निदेशक (रा.भा.)

हिंदी भारत की प्रमुख भाषाओं में से एक है। यह न केवल एक संचार माध्यम है, बल्कि भारतीय सभ्यता, संस्कृति और इतिहास का एक जीवंत दर्पण भी है। यह भारत की संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 22 अनुसूचित भाषाओं में से एक है और देश की राजभाषा के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। हिंदी का विकास एक लंबी और समृद्ध यात्रा का परिणाम है, जो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक फैली हुई है। इस लेख के माध्यम से हिंदी भाषा के विकास की ऐतिहासिक प्रक्रिया, इसके विभिन्न चरणों, भारतीय सभ्यता व संस्कृति के साथ इसके गहरे संबंध, और आधुनिक हिंदी लेखकों के योगदान का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

हिंदी का उद्गम इंडो-आर्यन भाषा परिवार से माना जाता है, जो प्राचीन संस्कृत से विकसित हुआ। वैदिक काल (लगभग 1500-500 ईसा पूर्व) में भारत की प्रमुख साहित्यिक और धार्मिक भाषा संस्कृत थी। संस्कृत हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं की जननी है। वैदिक संस्कृत में रचित ऋग्वेद और अन्य ग्रंथों ने भाषाई और सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। समय के साथ संस्कृत से प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ, जो मध्यकालीन भारत में जनसामान्य की भाषाएँ थीं। प्राकृत, जैसे पालि और अर्धमागधी, बौद्ध और जैन ग्रंथों में प्रचलित थीं, ये भाषाएँ धार्मिक और दार्शनिक विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का माध्यम बनीं। पालि में रचित बुद्ध के उपदेश और जैन आगम ग्रंथ प्राकृत की लोकप्रियता के प्रमाण हैं।



अपभ्रंश (लगभग 6ठी से 11वीं सदी) ने हिंदी के विकास में एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य किया। यह संस्कृत का सरलीकृत रूप था और जनसामान्य द्वारा बोली जाती थी। अपभ्रंश में रचित साहित्य, जैसे स्वयंभू का पउमचरिय और पुष्पदंत का महापुराण, हिंदी की प्रारंभिक रचनाओं के रूप में देखे जा सकते हैं। इस काल में क्षेत्रीय भाषाएँ, जैसे शौरसेनी और मागधी, भी विकसित हुईं, जो हिंदी की विभिन्न उपभाषाओं, जैसे ब्रजभाषा, अवधी, और मैथिली, की आधारशिला बनीं। अपभ्रंश के दोहे और चौपाइयाँ बाद में हिंदी काव्य की नींव बने।

मध्यकाल (11वीं से 18वीं सदी) में हिंदी साहित्य और भाषा का विकास तेजी से हुआ। इस काल में भक्ति और सूफी आंदोलनों ने हिंदी को जनभाषा के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भक्ति कवियों ने जनसामान्य की भावनाओं को व्यक्त करने के लिए क्षेत्रीय बोलियों का सहारा लिया। कबीर (15वीं सदी) ने अपनी दोहा-शैली में सामाजिक सुधार और आध्यात्मिकता पर जोर दिया, जो हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रतीक बना। उनकी रचनाएँ, जैसे कबीर ग्रंथावली हिंदी साहित्य की अमूल्य

निधि है। सूरदास ने ब्रजभाषा में श्रीकृष्ण की भक्ति को *सूरसागर* में चित्रित किया, जिसमें उनकी काव्य शैली ने भक्ति भावना को नया आयाम दिया। तुलसीदास की *रामचरितमानस* (16वीं सदी), जो अवधी में लिखी गई, हिंदी साहित्य का एक मील का पत्थर है। इस महाकाव्य ने राम भक्ति को जन-जन तक पहुँचाया और हिंदी को धार्मिक और सांस्कृतिक एकता का प्रतीक बनाया।

सूफी कवियों ने भी हिंदी को समृद्ध किया। मलिक मुहम्मद जायसी की *पद्मावत* (16वीं सदी) अवधी में लिखी गई एक प्रेमकथा है, जो सूफी दर्शन और भारतीय संस्कृति का मिश्रण प्रस्तुत करती है। खड़ी बोली और ब्रजभाषा में रचे गए रहीम के दोहे नीति और भक्ति के अनूठे संगम को दर्शाते हैं। इस काल में खड़ी बोली का प्रारंभिक रूप भी उभरने लगा, जो दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती थी। खड़ी बोली ने बाद में आधुनिक हिंदी का आधार बनाया, विशेष रूप से प्रशासनिक और साहित्यिक क्षेत्रों में।

19वीं सदी में हिंदी का मानकीकरण शुरू हुआ, जो आधुनिक हिंदी के उदय का काल था। इस समय भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद का प्रभाव बढ़ रहा था, और आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने भाषाई सुधारों को प्रोत्साहन दिया। भारतेन्दु हरिश्चंद्र (1850-1885) को "आधुनिक हिंदी साहित्य का जनक" माना जाता है, क्योंकि उन्होंने खड़ी बोली को साहित्यिक रूप प्रदान किया। उनकी रचनाएँ, जैसे *भारत-दुर्दशा* और *अंधेर नगरी*, ने सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना को जागृत किया। भारतेन्दु ने हिंदी पत्रकारिता को भी बढ़ावा दिया, और उनकी पत्रिका *कविवचन सुधा* ने हिंदी साहित्य को एक नया मंच प्रदान किया।



इस काल में हिंदी के लिए देवनागरी लिपि को मानक रूप से स्वीकार किया गया। काशी नागरी प्रचारिणी सभा (1893) की स्थापना ने हिंदी के व्याकरण, शब्दकोश और साहित्यिक पत्रिकाओं के प्रकाशन को बढ़ावा दिया। इस संस्था ने हिंदी को एक संगठित और मानकीकृत भाषा के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में, हिंदी साहित्य में छायावाद का उदय हुआ। छायावादी कवियों, जैसे जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, और महादेवी वर्मा, ने हिंदी काव्य को प्रकृति, प्रेम और आध्यात्मिकता के नए आयाम दिए। प्रसाद की *कामायनी* और निराला की *राम की शक्ति पूजा* ने हिंदी साहित्य को वैश्व स्तर पर पहचान दिलाई।

20वीं सदी में, स्वतंत्रता आंदोलन ने हिंदी को राष्ट्रीय एकता की भाषा के रूप में प्रचारित किया। महात्मा गांधी ने हिंदी को "हिंदुस्तान की आत्मा" कहा और इसे जन-जन की भाषा बनाने का प्रयास किया। 1949 में, स्वतंत्र भारत के संविधान ने हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता दी, जिससे इसका महत्व और बढ़ गया। इस काल में प्रेमचंद (1880-1936) जैसे लेखकों ने हिंदी साहित्य को सामाजिक यथार्थवाद का नया रंग दिया। प्रेमचंद की रचनाएँ, जैसे *गोदान*, *गबन*, और *कफन*, ग्रामीण भारत की समस्याओं, सामाजिक असमानता और मानवीय संवेदनाओं का सूक्ष्म अध्ययन करती हैं। उनकी कहानियाँ और उपन्यास हिंदी साहित्य की आधारशिला बने।

21वीं सदी में हिंदी ने वैश्वीकरण और डिजिटल युग में अपनी प्रासंगिकता बनाए रखी। इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल मंचों ने हिंदी को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। यूनिकोड और डिजिटल टाइपिंग टूल्स ने हिंदी में लेखन और संचार को आसान बनाया। हिंदी सिनेमा (बॉलीवुड), टेलीविजन, और ऑनलाइन सामग्री ने हिंदी को विश्व स्तर पर लोकप्रिय बनाया। हालांकि, हिंदी को अंग्रेजी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के साथ प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है, फिर भी यह साहित्य, पत्रकारिता और शिक्षा में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कर रही है।

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। इसका संबंध भारत की सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक परंपराओं से गहरा है। हिंदी साहित्य में वैदिक, बौद्ध, जैन और भक्ति परंपराओं का प्रभाव स्पष्ट है। तुलसीदास और सूरदास ने हिंदू धर्म के मूल्यों को जनसामान्य तक पहुँचाया, जबकि कबीर और जायसी ने हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा दिया। हिंदी ने विभिन्न धर्मों और दर्शनों को एक मंच प्रदान किया, जो भारतीय संस्कृति की समन्वयवादी प्रकृति को दर्शाता है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, हिंदी ने राष्ट्रीय एकता और स्वदेशी भावना को प्रोत्साहित किया। यह विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करती है।

हिंदी भाषा का क्रमिक विकास



हिंदी साहित्य ने भारतीय संस्कृति की समृद्धि को दर्शाया है। प्रेमचंद जैसे लेखकों ने सामाजिक यथार्थवाद को हिंदी साहित्य में स्थापित किया, जो ग्रामीण भारत और सामाजिक समस्याओं को उजागर करता है। हिंदी सिनेमा और नाटक ने भारतीय संस्कृति को विश्व स्तर पर पहचान दिलाई। लोकगीत, कहानियाँ, और मुहावरे हिंदी के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित हुए हैं, जो भारतीय संस्कृति की मौखिक परंपरा को जीवित

रखते हैं। हिंदी ने भारतीय शिक्षा और ज्ञान परंपरा को भी बढ़ावा दिया है, प्राचीन ग्रंथों से लेकर आधुनिक विज्ञान और तकनीकी शिक्षा तक।

आधुनिक हिंदी साहित्य में कई लेखकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिन्होंने हिंदी को समकालीन संदर्भों में जीवंत और प्रासंगिक बनाए रखा। निम्नलिखित कुछ प्रमुख आधुनिक हिंदी लेखक और उनके योगदान हैं:

गीतांजलि श्री: समकालीन हिंदी साहित्य की प्रमुख लेखिका गीतांजलि श्री ने अपने उपन्यास *रेत समाधि* (2018) के लिए अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार (2022) जीता, जो हिंदी साहित्य के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि थी। उनकी रचनाएँ, जैसे *माई* और *हमारा शहर उस बरस*, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक गहराई को दर्शाती हैं। गीतांजलि की लेखन शैली प्रयोगात्मक और संवेदनशील है, जो हिंदी साहित्य को वैश्विक मंच पर ले गई।

उदय प्रकाश: उदय प्रकाश ने अपनी कहानियों और कविताओं के माध्यम से हिंदी साहित्य में नवयथार्थवाद को स्थापित किया। उनकी कहानियाँ, जैसे *मोहन दास* और *वारेन हेस्टिंग्स का साँड़*, सामाजिक असमानता, भ्रष्टाचार और आधुनिक भारत की विडंबनाओं को उजागर करती हैं। उनकी लेखन शैली सरल लेकिन प्रभावशाली है, जो पाठकों को गहरे चिंतन के लिए प्रेरित करती है।

विनोद कुमार शुक्ल: विनोद कुमार शुक्ल की रचनाएँ, जैसे *नौकर की कमीज* और *दीवार में एक खिड़की रहती थी*, हिंदी साहित्य में अपनी अनूठी शैली के लिए जानी जाती हैं। उनकी लेखनी में काव्यात्मकता और यथार्थ का मिश्रण है, जो साधारण जीवन की गहनता को उजागर करता है। विनोद कुमार शुक्ल ने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा दी।

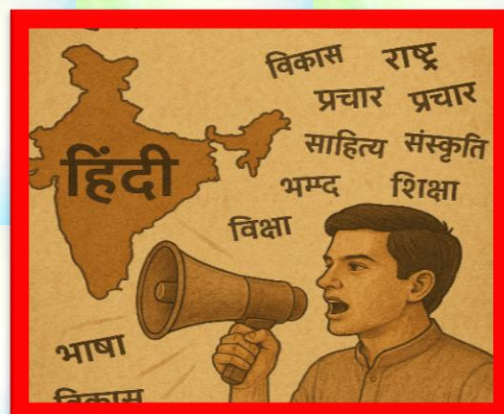
मैत्रेयी पुष्पा: मैत्रेयी पुष्पा ने हिंदी साहित्य में स्त्रीवादी दृष्टिकोण को मजबूती दी। उनके उपन्यास, जैसे *इदन्नमम* और *चाक*, ग्रामीण भारत की महिलाओं के संघर्ष और उनकी आवाज को सामने लाते हैं। उनकी रचनाएँ सामाजिक परिवर्तन और लैंगिक समानता पर केंद्रित हैं।

केदारनाथ सिंह: प्रख्यात कवि केदारनाथ सिंह ने हिंदी कविता को आधुनिक संवेदनाओं से जोड़ा। उनकी कविताएँ, जैसे *अकाल में सारस* और *बनारस*, प्रकृति, ग्रामीण जीवन और मानवीय संवेदनाओं को चित्रित करती हैं। उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जो उनके योगदान का प्रमाण है।

कृष्णा सोबती: कृष्णा सोबती ने अपनी रचनाओं, जैसे *मित्रो मरजानी* और *ज़िंदगीनामा*, में हिंदी साहित्य को नारीवादी और सामाजिक दृष्टिकोण से समृद्ध किया। उनकी लेखनी में बोलचाल की भाषा और जीवंत चरित्र-चित्रण है, जो पाठकों को गहरे स्तर पर प्रभावित करता है।

इन लेखकों ने हिंदी साहित्य को न केवल समकालीन मुद्दों से जोड़ा, बल्कि इसे वैश्विक साहित्य के मंच पर भी स्थापित किया। उनकी रचनाएँ सामाजिक परिवर्तन, मानवीय संवेदनाओं और भारतीय संस्कृति की विविधता को दर्शाती हैं।

हिंदी भाषा का विकास एक लंबी और गतिशील प्रक्रिया है, जो भारत की सभ्यता और संस्कृति के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। संस्कृत और प्राकृत से लेकर आधुनिक खड़ी बोली तक, हिंदी ने विभिन्न कालखंडों में अपनी पहचान बनाई। भक्ति और सूफी आंदोलनों, स्वतंत्रता संग्राम, और डिजिटल युग ने हिंदी को और समृद्ध किया। आधुनिक लेखकों ने इसे समकालीन संदर्भों में जीवंत बनाए रखा। हिंदी ने भारत की विविधता को एक सूत्र में पिरोया और इसे विश्व मंच पर एक मजबूत पहचान दी। भविष्य में हिंदी को और अधिक समावेशी और तकनीकी रूप से सशक्त बनाने की आवश्यकता है, ताकि यह वैश्विक स्तर पर अपनी प्रासंगिकता बनाए रख सके।



ऑफिस डेकोरम

डेकोरम का शाब्दिक अर्थ- मर्यादा, शिष्टता, शालीनता बताया गया है।
उदाहरण- अध्यक्ष ने सदस्यों से बैठक में मर्यादा बनाए रखने की अपील की है।
उपर्युक्त अर्थ एवं उदाहरण का स्रोत निम्नलिखित है-



श्री जंकी अहमद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सरल प्रशासनिक शब्दावली

सरलीकरण विशेषज्ञ समिति

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, भारत सरकार, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय

इस लेख में डेकोरम के शाब्दिक अर्थ की चर्चा, उसके विभिन्न उपयोग एवं प्रयोग और उदाहरण से स्पष्ट एक छोटा- सा प्रयास किया गया है। आइए, हम तीन अर्थों की चर्चा करते हैं।

डेकोरम अर्थात् मर्यादा, शिष्टता एवं शालीनता का वर्णन हमारे कार्यालय में प्रतिदिन प्रयोग होता है। जब भी मर्यादा शब्द का वर्णन होता है तब हमें भगवान राम की स्मृति आ जाती है। मर्यादा पुरुषोत्तम की चर्चा एक नहीं अनेक गुणों के समावेश वाले भगवान राम की याद दिलाती है। जिस तरह उन्होंने मर्यादा का पालन किया वह युगों-युगों तक चर्चित रहेगा। अपने पिता की आज्ञा को मानते हुए अपनी राजगद्दी, अपने अधिकार को त्याग करना कितना कठिन होगा आज के दौर में। इतना ही नहीं 14 वर्षों का वनवास भी साथ में जोड़े हैं तो आज कोई ऐसा मनुष्य नहीं मिलेगा जो इस तरह का त्याग करेगा। आज एक फोन अगर माँ-बाप बच्चे से छीन लें तो बच्चा व्याकुल होकर कुछ भी गुस्से में बोल देते हैं। अपशब्दों से माँ-बाप को दुख पहुंचाते हैं। अब चलते हैं कार्यालय में मर्यादा की चर्चा पर।

अपने कार्यस्थल पर शिष्टाचार, अनुशासन, पेशेवर आचरण बनाए रखना एवं अपने व्यवहार की मर्यादा बनाए रखना, ऑफिस डेकोरम कहा जा सकता है। एक कर्मचारी को अपने कार्यस्थल की मर्यादा को कभी नहीं भूलना चाहिए। ऑफिस डेकोरम का पालन करने से ही कार्यालय में कोई कर्मचारी संतुष्टि से कार्य कर सकता है। हर कर्मचारी में एक सकारात्मक सोच का सृजन होगा जिससे सभी लाभान्वित हो सकते हैं।

ऑफिस डेकोरम का अर्थ केवल शारीरिक उपस्थिति या कपड़ों की औपचारिकता नहीं है, बल्कि यह एक कर्मचारी के व्यवहार, अनुशासन, संवाद शैली, कार्य के प्रति ईमानदारी, और संगठन के प्रति प्रतिबद्धता से जुड़ा हुआ है। यह न केवल कार्यस्थल की गरिमा बनाए रखने के लिए आवश्यक है, बल्कि कार्यक्षमता बढ़ाने में भी सहायक होता है।



ऑफिस डेकोरम में ध्यान रखने वाली कुछ बातों का वर्णन निम्नलिखित है-

1. **समय का पालन:-** ऑफिस में समय का पालन करना चाहिए। कर्मचारियों को समय पर कार्यालय पहुँचना चाहिए। उन्हें समय पर कार्यालय से घर जाना चाहिए। अक्सर ऐसा देखा गया है कि लोग देर से ऑफिस पहुँचते हैं और जल्दी घर के लिए निकल पड़ते हैं। इस तरह न केवल हमारे कार्यालय की मर्यादा धूमिल होती है बल्कि हमारी कार्यकुशलता पर भी सवाल खड़ा हो जाता है। देर से ऑफिस पहुँचने से मन व्याकुल रहता है तथा वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा सजा का भी डर रहता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि उपस्थिति खाता अधिकारी अपने चेम्बर में रख लेते हैं। देर से आने वाले कर्मचारी के नाम के आगे लाल कलम से गोल निशान भी लगा देते हैं। यदि ऐसी देरी दो-तीन दिन हो जाए तो वरिष्ठ अधिकारी के समक्ष कर्मचारी की छवि धूमिल हो जाती है।

समय पर ऑफिस आने से जुड़ा है समय पर अपना काम निपटना। हर सरकारी कर्मचारी को अपना काम निर्दिष्ट समय में करना चाहिए। यह उसकी कार्यक्षमता और संगठन की सफलता को बहुत हद तक प्रभावित करता है। कई बार देखा जाता है कि कर्मचारी अपना काम छोड़कर चाय-नाश्ते के लिए बाहर जाते हैं। उसे पहले अपना काम पूरा करना चाहिए तथा ऑफिस डेकोरम का पालन करना चाहिए।

2. **शिष्टाचार:-** कर्मचारियों को शिष्टाचार का पालन करना अनिवार्य है। सभी को अपनी भाषा में शालीनता रखनी चाहिए। अपनी बातों को स्पष्ट एवं सम्मानजनक शब्दों के साथ व्यक्त करने से कार्यालय में सकारात्मक ऊर्जा का सृजन होता है। ऑफिस में “आप” कहकर सम्बोधन करना आदर का भाव दर्शाता है। नाम के साथ “जी” लगाना भी उत्तम शिष्टाचार का उदाहरण है। अपने भावनाओं को भी काबू में रखना शिष्टाचार का पर्याय है। हमें अपनी आवाज़ उंची नहीं करनी चाहिए एवं जल्दी क्रोधित होने से बचना चाहिए। इसके साथ ही आपस में बहस करना और दूसरों को निम्न स्तर में दिखाना अनादर दर्शाता है। मौखिक शब्दों की शालीनता के साथ-साथ हमें लिखित भाषा जैसे ई-मेल, चैट और फाइल रिकॉर्डिंग में भी शब्दों का चयन सावधानी से करना चाहिए। वरिष्ठ अधिकारियों के साथ संवाद में उचित सम्मान और औपचारिकता होनी चाहिए।
3. **स्वच्छता:-** कर्मचारियों की व्यक्तिगत स्वच्छता अत्यधिक महत्वपूर्ण है। हमें चाहिए कि हम स्वच्छ पोशाक पहने एवं अपने कार्यस्थल को भी स्वच्छ रखें। स्वच्छता हमारे पेशेवर व्यवहार को दर्शाने के साथ-साथ हमारी कर्तव्यपरायणता का भी प्रमाण है। अपनी मेज, फाइलें और दस्तावेज़ सुव्यवस्थित रखने चाहिए। कार्यालय परिसर में गंदगी फैलाना, पान-गुटखा खाना वर्जित है।
4. **सहकर्मियों का सम्मान:-** सम्मान से ही सम्मान है। आज के दौर में सबसे महत्वपूर्ण सम्मान होता है। हर किसी को सम्मान का अधिकार है। सभी सहकर्मियों के साथ समानता, सहयोग और सौहार्दपूर्ण व्यवहार आवश्यक है। जनता से व्यवहार में धैर्य, सज्जनता और संवेदनशीलता होनी चाहिए। सार्वजनिक सेवा भावना को आत्मसात करना सरकारी कर्मचारी का परम दायित्व है।

Conduct Rules 1964 के अनुसार कार्यालय शिष्टाचार (Office Decorum)

निम्नलिखित बिंदु केंद्र सरकार के कर्मचारी आचरण नियम 1964 (Central Civil Services Conduct Rules, 1964) के अनुसार कार्यालय शिष्टाचार (Office Decorum) को परिभाषित करते हैं।

आचरण नियम 1964 और ऑफिस डेकोरम

(क) नियम 3 - सामान्य आचरण

- हर सरकारी कर्मचारी को ईमानदारी, निष्पक्षता और कर्तव्यनिष्ठा से अपने कार्यों का निर्वहन करना चाहिए।
- सभी को संगठन की छवि को बनाए रखने और सार्वजनिक विश्वास को सुदृढ़ करने के लिए कार्य करना चाहिए।

(ख) नियम 5 - राजनीतिक तटस्थता

- सरकारी कर्मचारी को किसी भी प्रकार की राजनीतिक गतिविधियों से दूरी बनाए रखनी चाहिए।
- कार्यालय में राजनीतिक चर्चा, प्रचार अथवा किसी संगठन विशेष का समर्थन करना ऑफिस डेकोरम का उल्लंघन है।

(ग) नियम 11 - गोपनीयता

- कार्यालय की गोपनीय सूचनाओं का संरक्षण अनिवार्य है।
- सोशल मीडिया या अनाधिकृत माध्यमों से जानकारी साझा करना गंभीर दंडनीय अपराध है।

निषिद्ध कार्य (Do's and Don'ts)

क्या न करें (Don'ts):

- व्यक्तिगत काम के लिए कार्यालय संसाधनों का उपयोग
- अपने पद का दुरुपयोग
- अनुचित भाषा या धमकी देना
- सोशल मीडिया पर विभाग के संबंध में नकारात्मक टिप्पणी
- कार्यालय में राजनीति, धर्म, जातिवाद पर चर्चा

क्या करें (Do's):

- अधिकारियों और सहकर्मियों का सम्मान करें
- सही समय पर सही कार्य निष्पादन करें
- प्रतिदिन स्वच्छता और कार्यों की समीक्षा करें
- नई तकनीकों और प्रशिक्षण में रुचि लें
- शिकायत निवारण को प्राथमिकता दें

अंततः हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि ऑफिस की मर्यादा बनी रहे। हम अपने कार्यों को समय पर पूरा करें। हमारा व्यवहार और हमारे विचार सकारात्मक रहें। हम सहकर्मियों से विचारों का आदान-प्रदान और वरिष्ठ अधिकारियों से वार्तालाप कार्यालयीन मर्यादा में रह कर करें। तभी हम सफल राष्ट्र निर्माण में भागीदार बन सकते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य और समाज का दृष्टिकोण

पहले की तुलना में देखा जाए तो आज मनुष्य के पास अधिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं। अपने प्रत्येक कार्य को वह और भी आसानी से कर सकता है। शारीरिक बल का स्थान अब मशीनें ले रही हैं। रोटी बनाने से लेकर कपड़े धोने तक, अंकों की गणना करने से लेकर कमरे को ठंडा करने तक, सब अब मशीनों के माध्यम से ही होता है। मानव अपनी अधिकाधिक जरूरतों के अब मशीनों पर ही निर्भर है। मशीनों के माध्यम से मनुष्य का जीवन भले ही आसान और सुविधाजनक हो रहा है, परंतु मानव कहीं न कहीं अकेला पड़ता जा रहा है।



सुश्री प्रियदर्शिनी सिंह
सहायक निदेशक (रा.भा.)

सबके जीवन में इन सुविधाओं के बाद भी मनुष्य की व्यस्तता और भी बढ़ गई है। पहले सभी मिल-जुलकर काम किया करते थे परंतु आज लोगों के पास इतना भी समय नहीं है कि किसी से बात कर सकें या किसी की बात सुन सकें। सभी एक दौड़ का हिस्सा बने हुए हैं। बगल में दौड़ने वाला व्यक्ति स्वस्थ है या नहीं, ये तक देखने या महसूस करने तक की फुरसत नहीं है किसी के पास।

इन्हीं सब कारणों ने जन्म दिया है अकेलापन, बेचैनी, मानसिक तनाव आदि जैसे भावनात्मक उतार-चढ़ाव को। किसी से अपनी बात न कह पाना और आपने आप में ही घुटना, किसी सजा से कम नहीं है। अगर कोई किसी पार्टी या मज़मे में मिल जाए तो उन्हें देखकर ऐसा लगता है कि उनसे ज़्यादा सफल या खुश व्यक्ति कोई और है ही नहीं। वह अपने जीवन के हर क्षण को कितनी अच्छी तरह से जी रहा है, मजे कर रहा है। परंतु उस हंसी की क्या कीमत चुकाई है उसने, यह कोई नहीं जानता और अपनी व्यस्तता के कारण जानना भी नहीं चाहता।

आज भी दुनिया में अधिकतर लोग ऐसे हैं जो खुश होने का दिखावा बड़ी ही बखूबी से कर लेते हैं। भीड़ में तो सभी एक जैसे ही दिखते हैं पर घर लौटकर कौन किस पीड़ा से गुजर रहा है, इसका अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता। घर पर बात करने के लिए कोई है भी या नहीं, यह एक बड़ा प्रश्न है। आजकल लोग रोजगार के चक्कर में अपने घर-परिवार, दोस्त-बंधु सभी से दूर हैं। कोई स्वेच्छा से दूर है तो कोई मजबूरी से। फोन बात करने का माध्यम अवश्य है, पर वह रोते हुए इंसान के आँसू तो नहीं पोंछ सकता, घबराए हुए व्यक्ति के पास बैठकर, उसकी पीठ थपथपाकर उसे आश्वस्त तो नहीं कर सकता। घबराए हुए व्यक्ति को स्पर्श मात्र से ही शांत किया जा सकता है। स्पर्श एहसास दिलाता है कि मैं हूँ तुम्हारे पास, तुम्हारे साथ। अपनी से दूरी, इस कमी को पूरा तो नहीं कर सकती परंतु दूर होने की भावना को थोड़ा कम जरूर कर सकती है।



स्कूल, कॉलेज, ऑफिस, हर जगह प्रतिस्पर्धा की होड़ लगी हुई है। सभी आगे निकलना चाहते हैं। परंतु जो पीछे छूट गया, उसकी मनः स्थिति कोई नहीं समझना चाहता। कहते हैं ना कि उगते सूरज को दुनिया सलाम करती है। परंतु सभी तो सूरज नहीं बन सकते न। वो तो बस एक ही है। इसी प्रतिस्पर्धा और भागमभाग में अपनापन कहीं खो-सा गया है। स्थिति में तो इतना परिवर्तन आ गया है कि अगर कोई कहना भी चाहे तो सुनने वाला नहीं है। अपने मन की बात कहने से, अपने अंदर चल रहे ऊहापोह को अगर कोई किसी से बाँट सके तो उतने में ही वह स्वयं को स्वस्थ महसूस करने लगता है। परंतु सुनने और तत्पश्चात समझने का समय किसके पास है! वे भी तो किसी न किसी परेशानी से जूझ रहे हैं।

हालात तो इतने बदल गए हैं कि परिवार में रहकर भी लोग खुद को अकेला महसूस करने लगे हैं। किसी से कुछ न शेयर कर पाने की दुविधा के कारण धीरे-धीरे सबसे दूर होते चले जाते हैं। मुस्कुराना, खुश रहना भूल जाते हैं। परिवार के लोग, दोस्त, पड़ोसी सभी शिकायत करते हैं कि पता नहीं इसे क्या हो गया है! इसे डॉक्टर को दिखाओ। डॉक्टर भी कुछ बातें सुनकर कह देता है कि इसे तो डिप्रेशन हुआ है और कुछ दवाइयों का लिस्ट थमा देता है। इसके बाद शुरू होता है थेरेपी का सिलसिला। पर कोई इतनी-सी बात नहीं समझ पाता कि उसके मनः स्थिति को समझे, उसे सुने, उसे समझे और समझाने की कोशिश करे। आजकल अगर दो लोग भी आपस में बैठकर बात करते हैं तो एक दूसरे की ओर देखकर नहीं। ज्यादातर लोगों की नज़र उनके फोन पर होती है। अब आप ही बताइये ये कैसी विडम्बना है। कोई दुखी व्यक्ति अपने दोस्त या परिवार के सदस्य के पास इस विश्वास के साथ बात करने के लिए बैठता है कि अपने मन की बात या वो जिस स्थिति से गुजर रहा है, उसके बारे में दिल खोलकर बात कर सकता है। परंतु सामने वाला व्यक्ति सुनता जो जरूर है पर समझने की जरूरत महसूस नहीं करता। वह अपनी ही दुनिया में मग्न रहता है। बात निकलती तो एक दिल से है पर दूसरे के दिल तक पहुँच ही नहीं पाती।

मानसिक रूप से परेशान व्यक्ति को बीमार क्यों कहा जाता है यह बात मेरी समझ से परे है। यह एक ऐसी स्थिति है जिससे मनुष्य के विचार एवं उनकी मनोस्थिति प्रभावित होती है। मानसिक रूप से परेशान व्यक्ति अपने आस-पास के लोगों, वातावरण को अलग ढंग से देखने लगता है। वह अपने-आप को बिल्कुल अकेला समझने लगता है। उसे ऐसा महसूस होने लगता है कि उसे कोई नहीं समझता या यूँ कहें कि कोई समझ ही नहीं सकता। विचारों में इस प्रकार की दुविधा, इस प्रकार का असमंजस बीमारी कैसे हो सकती है! वह तो उसके लिए ऐसे ही पीड़ादायक स्थिति है, उसपर से लोगों के ताने। शरीर पर लगे घाव ही कितनी पीड़ा देते हैं। उसपर तो दवाई लगाकर उसका इलाज भी किया जा सकता है पर मानसिक पीड़ा तो ना दिखने वाला घाव है। कई बार तो डॉक्टर को समझने में भी दिक्कत होती है। यह कोई विकार नहीं है, यह तो बस एक परिस्थिति है, एक जंग जिसे व्यक्ति ना चाहते हुए भी लड़ रहा होता है।

आजकल एक शब्द बहुत प्रचलन में है- पोस्टपार्टम डिप्रेशन। बच्चा जनने के बाद एक स्त्री, एक माँ के शरीर को कई प्रकार के परिवर्तनों से गुजरना पड़ता है। ऐसे परिवर्तन जिसके बारे में आपको लोगों ने पहले ही क्यों ना बताया हो, परंतु जब प्रत्यक्ष रूप से इसका सामना करना पड़ता है तो स्थिति

को समझना बहुत ही कठिन हो जाता है। माँ की नींद पूरी नहीं होती, अपनी पसंद का खाना वह नहीं खा सकती, एकदम फिट रहने वाली स्त्री का अचानक माँ बनाते ही वजन बढ़ने लगता है। इन सबके साथ-साथ अगर सी-सेक्शन हुआ है तो ऑपरेशन के पश्चात की असहनीय पीड़ा, बच्चे को दूध पिलाने से लेकर बच्चे की हर जरूरत का ध्यान रखना- इन सबसे गुजरने के पश्चात अगर उसके व्यवहार, विचार और मनोस्थिति में कोई परिवर्तन आता है तो उसे समझने की जगह यह सुनाया जाता है कि ये सब आजकल के चोचले हैं, दुनिया में तुम पहली औरत नहीं हो जो माँ बनी है। भले ही वह दुनिया में पहली औरत नहीं है जो माँ बनी है पर पहली बार माँ जरूर बनी है। अब आप ही बताइये कि एक माँ की इस प्रकार की मनोस्थिति को डिप्रेशन के वर्ग में कैसे रखा जा सकता है। अगर वह बीमार होती तो क्या अपने नवजात शिशु का ध्यान रख पाती भला! इस तरह से कोई क्यों नहीं सोचता।

मानसिक रूप से परेशान व्यक्ति के लक्षण यह भी होते हैं- चिंता, चिड़चिड़ापन, अशांति, उदास होना, मूड खराब होना आदि। परंतु मेरा प्रश्न यह है कि क्या यह सारे लक्षण एक आम व्यक्ति में भी मौजूद नहीं होते? यह सभी लक्षण आम व्यक्ति के दिनचर्या, उसके व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा हैं। फिर यह बीमारी कैसे है? फिर आम आदमी और मानसिक रूप से परेशान व्यक्ति में क्या अंतर है?

जब एक व्यक्ति को शराब पीने या किसी भी प्रकार के नशे की लत लगती है तो कई मामलों में कहा जाता है कि डिप्रेशन के कारण से ऐसा हुआ है। पर क्या आप इससे पूर्णतः सहमत हैं? लत लगता अपने हाथों में होता है पर बीमारी अपने हाथ में नहीं होती। अपने दृढ़ संकल्प से व्यक्ति अपनी गलत आदतों, नशे की लत आदि को छोड़ सकता है परंतु अगर वह व्यक्ति बीमार है तो उसे अपनी स्वेच्छा से, जब मन चाहा, जैसे चाहा, वैसे ठीक नहीं कर सकता है। अतः मैं इस बात को नहीं मानती कि डिप्रेशन और लत का कोई नाता है।

हर माँ-बाप का सपना होता है अपने बच्चे को सफल देखना। इस प्रतिस्पर्धा के युग में दौड़ने के लिए वे अपने बच्चों को तैयार करते हैं। वे अपने बच्चों को सुखी एवं समृद्ध देखना चाहते हैं। माँ-बाप के नाते उनका ऐसा सोचना ही स्वाभाविक है। परंतु अपने बच्चे को आइन्स्टाइन बनाने की उनकी यह इच्छा बच्चों के मन एवं मस्तिष्क पर एक दबाव की सृष्टि करता है। उनका बच्चा इतना अच्छा कर रहा है तो हमारे बच्चे को उसके आगे निकलना ही होगा- बस यही सोच बच्चों की मासूमियत, उनके बचपन को छिनने के लिए पर्याप्त है। कभी भी किसी और के बच्चे के साथ अपने बच्चे की तुलना नहीं करनी चाहिए। बचपन से ही उन्हें कामयाब बनने की दौड़ का हिस्सा बना दिया जाता है। कोई उसके प्रयास को नहीं देखता। सबको चाहिए 'फल'। इन्हीं सब कारणों से आजकल रिश्तों में दूरियाँ आने लगी हैं। इन सबका बच्चों की मानसिक स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अगर सफल हुआ तो ठीक परंतु किसी कारणवश अगर वह आगे नहीं निकाल पाया या जैसा सोचा था वैसा नहीं कर पाया तो माता-पिता की उपेक्षा भरी निगाहों से खुद को बचाता हुआ खुद को एकदम अकेला समझने लगता है। इन सबके साथ उन्हें तानों का भी सामना करना पड़ता है। इसका परिणाम यह होता है कि वह अपने वास्तविक स्वभाव



एवं स्वरूप को ही भूल बैठता है। माता-पिता की महत्वाकांक्षा पूरी ना कर पाने की विफलता उनमें हीन भावना की सृष्टि करता है। सभी माँ-बाप अपने बच्चों का भला चाहते हैं पर उनको सफल करने की होड़ में उन्हें ही सुनना और समझना भूल जाते हैं। परंतु यह किस हद तक सही है?

निष्कर्ष :

आज के आधुनिक और तकनीकी युग में जहाँ एक ओर सुविधाएँ बढ़ी हैं, वहीं दूसरी ओर मानव का भावनात्मक, सामाजिक और मानसिक जीवन कहीं न कहीं संकट में पड़ गया है। अकेलापन, अवसाद, मानसिक तनाव जैसे समस्याएँ अब आम होती जा रही हैं, परंतु समाज का नजरिया अभी भी इन मुद्दों को समझने और स्वीकारने में पीछे है।

मानसिक स्वास्थ्य किसी भी व्यक्ति के जीवन का उतना ही महत्वपूर्ण हिस्सा है जितना उसका शारीरिक स्वास्थ्य, परंतु अफसोस की बात है कि इसे अक्सर नज़रअंदाज़ किया जाता है या "कमज़ोरी" समझ लिया जाता है। हमें यह समझने की ज़रूरत है कि मानसिक परेशानी कोई विकृति नहीं, बल्कि एक मानवीय अनुभव है, जिसे समझदारी, सहानुभूति और सहयोग से ही दूर किया जा सकता है।

हर व्यक्ति को सुनने, समझने और स्वीकार किए जाने की आवश्यकता होती है। हमें अपने बच्चों, परिवारजनों, और आसपास के लोगों से संवाद बनाए रखना होगा। प्रतिस्पर्धा की इस दौड़ में साथ चलना है, लेकिन साथ देने की भावना को भूलना नहीं है।

समाज का यह दायित्व बनता है कि वह मानसिक स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता फैलाए, खुले मन से इस पर चर्चा करे और यह समझे कि कोई भी व्यक्ति केवल तब ही पूर्ण रूप से स्वस्थ कहा जा सकता है जब वह मानसिक रूप से भी संतुलित और सशक्त हो। हमें संवेदनशील बनना होगा – दूसरों को सुनने, समझने और साथ देने के लिए। यही एक समावेशी, सहायक और सशक्त समाज की बुनियाद है।

**हिंदी हमारे देश और भाषा की
प्रभावशाली विरासत है ।**

माखनलाल चतुर्वेदी

काल से ताल मिलाओं



श्री अरिंदम घटक
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अतीत, वर्तमान और भविष्य... तीनों काल में मनुष्य जाती का आधार है। अतीत यानी बीता हुआ कल, जो इंसान को अपनी सफलता और गलतियों दोनों का एहसास दिलाता है। इंसान को सही गलत दोनों का पाठ पढ़ाता है, जिससे आगे चल के वो अपने आपको और परिपक्व रूप में पाए। अतीत के आधार पर अपने ज़िंदगी का अर्थ ढूँढने हेतु निरंतर प्रयास करते रहना ही वर्तमान काल का मूल उद्देश्य है। वर्तमान हमें सिखाता है अपने ज्ञान, बुद्धि और परिश्रम से अपने आने वाले कल को और बेहतर बनाना चाहिए। आने वाला कल, यानी की भविष्य जिसके गर्भ में क्या छुपा है यही किसी को नहीं पता। हम बस जिसकी कल्पना कर सकते हैं वह है वर्तमान। वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए किसी लक्ष्य के प्राप्ति के लिए हम वर्तमान में भविष्य की रूपरेखा बनाते हैं।

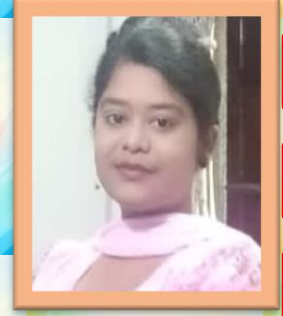
हालांकि, कुछ लोगों का यह भी मानना है कि अतीत को भूल के और भविष्य के बारे में बिना सोचे, वर्तमान में जीने में ही ज़िंदगी की असली खुशी है। पर अतीत से मिली सीख को अनदेखा कर या फिर भविष्य में कोई लक्ष्य निर्धारित किए बिना, कोई भी इंसान अपने आपको सफलता के शिखर पर नहीं पा सकता। इसलिए अतीत को अनदेखा कर वर्तमान की गीली ज़मीन पर चल के भविष्य की अनदेखी गहराई में गोते न लगाएँ।

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ,
पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, ये मैं सह
नहीं सकता ।

आचार्य विनोबा भावे

वशिष्ठ आश्रम

वशिष्ठ शब्द से तात्पर्य है - सर्वश्रेष्ठ, सबसे समृद्ध, प्रतिष्ठित, प्रिय, सभी सृजन और इच्छा के स्वामी। वशिष्ठ सबसे पुराने और सबसे सम्मानित वैदिक ऋषियों या ऋषियों में से एक हैं। वे सप्तऋषियों (सात महान ऋषियों) में से भी एक हैं। वशिष्ठ को ऋग्वेद के मंडला के मुख्य लेखक के रूप में श्रेय दिया जाता है। उनके विचार प्रभावशाली रहे हैं और उन्हें आदि शंकराचार्य द्वारा हिंदू दर्शन के वेदांत स्कूल का पहला ऋषि कहा जाता था।



सुश्री राजलक्ष्मी गांगुली
वरिष्ठ अनुवादक

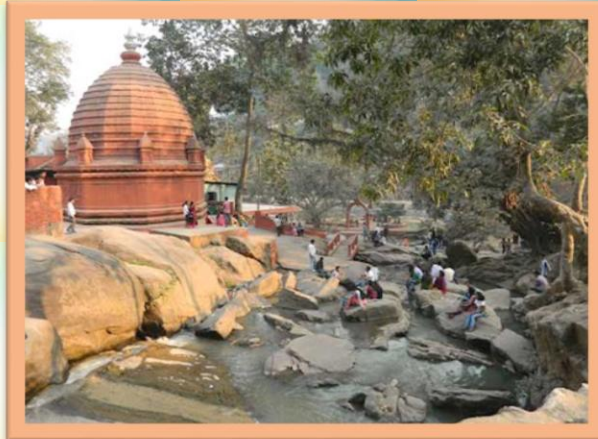


पौराणिक कथा के अनुसार असम में वशिष्ठ आश्रम की स्थापना महान संत वशिष्ठ द्वारा किया गया था। ऐसा माना जाता है कि महर्षि वशिष्ठ ने उस स्थान पर आराध्य महादेव का ध्यान किया है। उनके सुरम्य स्थान के पास तीन धाराएँ बहती हैं। इन तीन धाराओं के नाम ललिता, कांता और संध्या हैं। आश्रम में मंदिर मेघालय की पहाड़ियों से निकलने वाली पर्वतीय धाराओं के किनारे पर स्थित है। आश्रम गुवाहाटी से कुछ 10-12 किलोमीटर की दूरी पर गर्भगा आरक्षित वन के बाहरी इलाके में

स्थित है, जिसमें हाथियों की आबादी है। यह गर्भगा आरक्षित प्रस्तावित तितली रिजर्व भी है। वशिष्ठ मंदिर का निर्माण प्राचीन काल में किया गया था, जब यह क्षेत्र कामरूप राज्य का हिस्सा था। मंदिर का वर्तमान स्वरूप 18वीं शताब्दी में बनाया गया था, जब अहोम राजवंश के राजा ने जीर्णोद्धार किया था।

यह मंदिर भगवान शिव और माता पार्वती को समर्पित है और इसका निर्माण 18वीं शताब्दी में किया गया था। हालांकि आश्रम में एक मंदिर है लेकिन फिर भी जिस गुफा में मुनि वशिष्ठ ने ध्यान किया था, वह आश्रम के भीतर 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस गुफा में अंदर पुजारी विराजमान हैं जो पूजा-अर्चना करते हैं। आश्रम में विशेषकर भगवान शिव की पूजा होती है। शिवलिंग के साथ गणेश जी की मूर्ति और गणेश जी के वाहन मूषक अर्थात् चूहे की भी काफी बड़ी मूर्ति स्थापित है। यह स्थान चारों ओर वन से घिरा हुआ है। वशिष्ठ मंदिर का इतिहास इसकी प्राचीनता और धार्मिक महत्व को दर्शाता है। यह मंदिर असम की सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। वशिष्ठ मंदिर की वास्तुकला शास्त्रीय असमिया मंदिर शैली को दर्शाती है, जो इसकी सादगी और भव्यता की विशेषता है। असमिया वास्तुकला की खासियत, एक शक्काकार छत, हिंदू पौराणिक कथाओं के दृश्यों को दर्शाती जटिल नक्काशीदार पत्थर की दीवारें, मुख्य देवता का निवास स्थान, विभिन्न हिंदू देवी-देवताओं को समर्पित छोटे मंदिर, मंदिर परिसर में हरियाली की जिसके पास वशिष्ठ नदी बहती है, जो इस शांत वातावरण को और सुंदर बना देती है। वशिष्ठ मंदिर में शिवरात्रि सहित कई महत्वपूर्ण हिन्दू त्यौहार मनाए जाते हैं। इन त्यौहारों के दौरान, मंदिर में भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है।

वशिष्ठ आश्रम न केवल गुवाहाटी, बल्कि पूरे असम का एक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है। यह असम राज्य का एक बहुत प्रसिद्ध पर्यटन स्थल भी है। वशिष्ठ के आश्रम से जुड़ा भगवान शिव का एक मंदिर है। हर साल हजारों भक्त भगवान से प्रार्थना करने और पास की धारा के पवित्र जल में डुबकी लगाकर आंतरिक शांति और खुशी प्राप्त करने के लिए यहां आते हैं। मंदिर के प्रांगण से लेकर झरनों तक बंदर भी झुंड में दिखाई देते हैं। ऋषि वशिष्ठ और



इस आश्रम से तथा झरनों से जुड़ी कई किंवदंतियाँ हैं। इन किंवदंतियों का अलग-अलग कालक्रम में अलग-अलग तरीके से व्याख्या किया गया है। मंदिर में एक धँसा हुआ गर्भगृह है, जिसके बारे में माना जाता है कि इसमें ऋषि वशिष्ठ के पैर की छाप है। माना जाता है कि पहाड़ों से आने वाली इन तीन धाराओं (संध्या, ललिता और कंठ) - में स्नान करने वाले भक्त दीर्घायु होते हैं।

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है ।

मैथिलीशरण गुप्त

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की नैतिकता



सुश्री सुकन्या दास
वरिष्ठ अनुवादक

एक ऐसे युग में जहां प्रौद्योगिकी आश्चर्यजनक गति से आगे बढ़ रही है, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) हमारे समय के सबसे शक्तिशाली और परिवर्तनकारी उपकरणों में से एक के रूप में उभरा है। सिरी और एलेक्सा जैसे वॉयस असिस्टेंट से लेकर सेल्फ-ड्राइविंग कार और एआई-जेनरेटेड आर्ट तक, हम अपने रोजमर्रा के जीवन में एआई के व्यापक प्रभाव को देखने लगे हैं। लेकिन जैसे-जैसे यह तकनीक बढ़ती है, वैसे-वैसे उसके नैतिक उपयोग के बारे में भी सवाल उठते हैं। एआई के विकास और तैनाती में सही और गलत क्या है? यहां एआई की नैतिकता न केवल महत्वपूर्ण बल्कि आवश्यक हो जाती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता क्या है?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence या AI) उन मशीनों और प्रणालियों को कहा जाता है जो ऐसे कार्य कर सकती हैं जिनके लिए सामान्यतः मानव बुद्धि की आवश्यकता होती है। जैसे कि भाषा को समझना, निर्णय लेना, पैटर्न पहचानना और अनुभव से सीखना। AI का उपयोग आज कई क्षेत्रों में हो रहा है – जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन और मनोरंजन।



AI में नैतिकता क्यों जरूरी है?

नैतिकता का मतलब होता है सही और गलत का फर्क जानना और न्यायपूर्ण व्यवहार करना। जैसे हम इंसानों से अपेक्षा की जाती है कि हम नैतिक रूप से कार्य करें, वैसे ही जो मशीनें निर्णय ले सकती हैं, उनके लिए भी नैतिकता जरूरी है।

AI के निर्णय अब जीवन के अहम हिस्सों को प्रभावित करने लगे हैं—जैसे कि नौकरी देना, बीमारी की पहचान करना, या अदालतों में फैसलों में मदद करना। ऐसे में जरूरी है कि हम पूछें: क्या ये निर्णय निष्पक्ष हैं? इनमें भेदभाव तो नहीं है? क्या ये हमारी निजता का सम्मान करते हैं?

AI से जुड़ी प्रमुख नैतिक समस्याएँ

1. भेदभाव और पक्षपात

AI जो कुछ भी सीखाती है वह उसे दिए गए डेटा से सीखाती है। यदि वह डेटा पहले से पक्षपाती है—जैसे लिंग, जाति या संस्कृति के आधार पर—तो AI भी वही भेदभाव करना सीख सकती है। इसलिए यह जरूरी है कि AI को निष्पक्ष और विविध डेटा से प्रशिक्षित किया जाए।

2. निजता और निगरानी

AI हमारी व्यक्तिगत जानकारी इकट्ठा करती है—जैसे कि हमारी खोजें, खरीदारी की आदतें, या हमारे चेहरे। यह सेवा को बेहतर बनाने में तो सहायक है, लेकिन इससे हमारी निजता को खतरा भी है।

उदाहरण के लिए, फेस रिकग्निशन तकनीक किसी लापता व्यक्ति को ढूँढने में मदद कर सकती है, लेकिन इसका दुरुपयोग लोगों की निगरानी के लिए भी किया जा सकता है।

3. जवाबदेही और पारदर्शिता

अगर कोई AI सिस्टम गलती कर दे, तो जिम्मेदार कौन होगा? कंपनी, प्रोग्रामर या AI खुद? इसके अलावा, कई AI सिस्टम 'ब्लैक बॉक्स' की तरह होते हैं—उनके फैसलों को समझना कठिन होता है। पारदर्शी AI जरूरी है ताकि लोग यह जान सकें कि निर्णय कैसे लिए गए।

4. रोजगार पर असर

AI के कारण कई कार्य स्वचालित हो रहे हैं जिससे कई लोगों की नौकरियाँ खतरे में हैं, खासकर निर्माण, ट्रांसपोर्ट और खुदरा क्षेत्र में। नैतिक दृष्टिकोण से यह जरूरी है कि ऐसे लोगों को फिर से प्रशिक्षित किया जाए ताकि उन्हें नए अवसर मिलें।

5. मानव नियंत्रण और स्वायत्त

जैसे-जैसे AI शक्तिशाली होती जा रही है, वैसे-वैसे कुछ लोग इसे हथियारों में इस्तेमाल करने की दिशा में भी काम कर रहे हैं। क्या मशीनों को जीवन-मरण से जुड़े फैसले लेने चाहिए?

AI को इंसानों की सहायता करनी चाहिए, न कि उन्हें पूरी तरह से बदल देना चाहिए, खासकर ऐसे मामलों में जो नैतिक रूप से संवेदनशील हैं।

नैतिक AI कैसे बनाई जाए?

उचित डेटा चयन: AI को प्रशिक्षित करने के लिए निष्पक्ष और विविध डेटा का प्रयोग हो।

पारदर्शिता: AI ऐसे तरीके से काम करे जिसे लोग समझ सकें।

नियम और कानून: सरकारों को ऐसे नियम बनाने चाहिए जो AI को जिम्मेदारी से इस्तेमाल करने के लिए बाध्य करे।

समावेशिता: AI सिस्टम के निर्माण में विभिन्न सामाजिक वर्गों के लोगों को शामिल किया जाना चाहिए।

शिक्षा और जागरूकता: छात्रों, डेवलपर्स और आम लोगों को AI की नैतिकता के बारे में शिक्षित करना चाहिए।

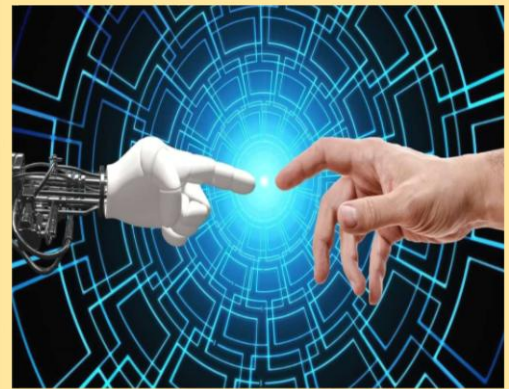
छात्रों की भूमिका

छात्र आज के नहीं, बल्कि कल के इंजीनियर, नेता और वैज्ञानिक हैं। यदि वे आज से ही AI की नैतिकता को समझें, तो वे भविष्य में ऐसी तकनीकों को विकसित करेंगे जो मानवता के हित में होंगी। आप AI क्लब में शामिल होकर, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेकर या विज्ञान मेलों में प्रोजेक्ट बनाकर इसकी शुरुआत कर सकते हैं।

निष्कर्ष

AI में वह क्षमता है कि यह मानवता की बड़ी समस्याओं का हल निकाल सके—जैसे जलवायु परिवर्तन या वैश्विक स्वास्थ्य। लेकिन इसके साथ एक बड़ी जिम्मेदारी भी जुड़ी है।

AI केवल स्मार्ट मशीनों का विषय नहीं है, बल्कि यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि हम इसे कितनी समझदारी और संवेदनशीलता से प्रयोग में लाते हैं। आइए हम मिलकर ऐसा भविष्य बनाएं जहाँ AI इंसानियत को सशक्त बनाए, न कि उसे पीछे छोड़ दे।



हिंदी भाषा वह नदी है जो साहित्य, संस्कृति और समाज को एक साथ बहा ले जाती है ।

रामधारी सिंह दिनकर

जल क्या है



श्री सुबाष प्रसाद
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जल क्या है,
जल ही जीवन है।
स्मरण रहे यह बात।
उपभोग हो इसका उचित रीति से,
अन्यथा पलक झपकते ही
नष्ट हो जाएगा, जीवों का बिसात।
जतन करना है हम सबको इसका
अन्यथा मानव का शून्य औकात,
यह उपहार मिला किस्मत से
न समझें इसको खैरात।
इस अमूल्य निधि की मात्र सीमित है
सोचना सुबह-शाम, दिन-रात
जल...

नीर प्रकृति का अनुपम उपहार
इससे तरता सारा संसार
रंगहीन द्रव रूप में मिलता
स्वादहीन पर बड़ा असरदार
ऊंच-नीच में भेद न करना
प्यासा पथिक जब हो किसी के द्वार
बहे चक्षु से तो अश्रु कहलाता
सरिता में यही लहरों की धार
गुण तो इसके हैं बहुतेरे
पर थोड़े शब्दों में अपनी जज़्बात
जल क्या है,
जल ही जीवन है।

**निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को
मूल।**

भारतेंदु हरिश्चंद्र

जलवायु परिवर्तन



श्री रवि पासवान
कनिष्ठ अनुवादक

पृथ्वी में स्थित किसी विशेष स्थान पर लंबे समय तक चलने वाले मौसम के पैटर्न को उस स्थान का जलवायु कहा जाता है। जलवायु को मुख्यतः पाँच प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है: उष्णकटिबंधीय, उपोष्णकटिबंधीय, समशीतोष्ण, ध्रुवीय एवं उच्चतभूमि। इसके अतिरिक्त जलवायु को विभिन्न कारकों जैसे अक्षांश, ऊँचाई, जल निकायों से निकटता या दूरी के आधार पर भी वर्गीकृत किया जा सकता है। जलवायु परिवर्तन वास्तव में जलवायु की परिस्थिति में बदलाव को कहते हैं। यह मौसम संबंधी तापमान, आर्द्रता, वायुमंडलीय दबाव, हवा और वर्षा के औसत परिवर्तनशीलता पर निर्भर करता है। जलवायु परिवर्तन का अर्थ मौसम में होने वाले जल्दी-जल्दी बदलाव से है। जलवायु में होने वाला परिवर्तन पहले प्रकृति पर निर्भर होता था, लेकिन आज मानवीय कारणों से भी इस पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। वर्तमान में हो रहे तेजी से जलवायु परिवर्तन सभी के चिंता का विषय है, क्योंकि इससे धरती पर रहने वाले सभी इंसानों और जीव-जंतुओं का जीवन प्रभावित हो रहा है। जलवायु परिवर्तन को क्लाइमेट चेंजेस के तौर पर भी हम जानते हैं। इसमें बारिश के मौसम में बारिश न होकर तेज धूप होना भी जलवायु परिवर्तन का एक उदाहरण है। पिछले कई सालों से धरती का क्लाइमेट बेहद गर्म हो गया है, जिसके पीछे का कारण कोई और नहीं क्लाइमेट चेंजेस और ग्लोबल वार्मिंग है। वायुमंडल के तापमान में लगातार वृद्धि होने के कारण धरती पर भी इसका बुरा प्रभाव देखने को मिल रहा है। मानवीय गतिविधियाँ जैसे वनों में पेड़ों का कटना, जीवाश्म ईंधन (फॉसिल फ्यूल) का अधिक उपयोग आदि ग्लोबल वार्मिंग होने का बड़ा कारण है और इस वजह से जलवायु परिवर्तन तेजी से बढ़ रहा है। जलवायु परिस्थितियों में परिवर्तनों के कारण कई पौधों और जानवरों की पूरी जनसंख्या विलुप्त होने लगी है। जंगल में लगने वाली आग, तेज बारिश, ग्लेशियर का पिघलना ग्लोबल वार्मिंग आदि जलवायु परिवर्तन का कारण हैं।

जलवायु परिवर्तन के पीछे वैसे तो कई कारण हैं, लेकिन इनमें सबसे अहम प्राकृतिक और मानवीय कारण हैं।

प्राकृतिक कारण

प्राकृतिक कारण हैं जिनकी वजह से जलवायु में तेजी से परिवर्तन आ रहा है। प्राकृतिक कारणों जैसे ज्वालामुखी का फटना, सौर विकिरण, टेक्टोनिक प्लेट का हिलना आदि शामिल हैं। इन गतिविधियों की वजह से किसी भी क्षेत्र में जीवन को काफी नुकसान पहुंच सकता है। साथ ही इन प्राकृतिक कारणों की वजह से धरती का तापमान भी काफी हद तक बढ़ जाता है जिससे प्रकृति में असंतुलन पैदा हो जाता है।



ज्वालामुखी: ज्वालामुखी की सक्रियता बड़ी मात्रा में सल्फर डाइऑक्साइड, जलवाष्प, धूल कण तथा राख को वायुमण्डल में फैलाने के लिए जिम्मेदार है। हालांकि, ज्वालामुखी की सक्रियता कुछ दिनों की ही हो सकती है, लेकिन भारी मात्रा में निकलने वाली गैसों तथा राख लंबे समय तक जलवायु के पैटर्न को प्रभावित करती है।

महासागरीय धाराएं- महासागरों की जलवायु परिवर्तन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका है। वायुमंडल या भू-सतह की तुलना में दुगुना तापमान इनके द्वारा अवशोषित किया जाता है। महासागरीय प्रवाह चारों ओर तापमान के स्थानांतरण के लिए जिम्मेदार हैं। इनकी वजह से हवाओं की दिशा परिवर्तित कर तापमान को प्रभावित किया जाता है। तापमान को अवशोषित करने वाली ग्रीनहाउस गैस का एक अहम हिस्सा जलवाष्प होती है जो कि वायुमंडल में तापमान को अवशोषित करने का काम करती है।

मिथेन गैस का भंडार- आर्कटिक महासागर की बर्फ के नीचे अतल गहराइयों में मिथेन हाइड्रेट के रूप में ग्रीनहाउस गैस मिथेन का विशाल भंडार है जो विशिष्ट ताप और दाब में हाइड्राइड रूप में रहता है। ताप और दाब में परिवर्तन होने पर यह मिथेन मुक्त होती है और वायुमंडल में घुल जाती है। अपने गैसीय रूप में, मिथेन सबसे शक्तिशाली ग्रीनहाउस गैसों में से एक है, जो कार्बन डाइऑक्साइड की तुलना में पृथ्वी को बहुत अधिक गर्म करती है।

मानवीय कारण

ये सभी जानते हैं कि मनुष्य ने अपनी जरूरतों और लालच की वजह से कई ऐसी गतिविधियां की हैं जिनकी वजह से पर्यावरण को बेहद नुकसान पहुंच रहा है। सिर्फ पर्यावरण को ही नहीं बल्कि ये खुद को भी नुकसान पहुंचाते हैं। इनकी वजह से कई पेड़-पौधे और जीव-जंतु की संख्या कम होती जा रही है। इंसानों की वो गतिविधियां जो जलवायु परिवर्तन का अहम कारण हैं, वो हैं जंगलों का कटना, जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल, कई तरह के प्रदूषण और बहुत कुछ शामिल हैं। ये सभी चीजें जलवायु के लिए बहुत हानिकारक हैं।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव: खेती, मौसम, समुद्र के जल स्तर में वृद्धि, स्वास्थ्य, जंगल और वन्य जीवन में दिखाई देगा।

व्यक्तिगत स्तर पर, हम निम्नलिखित कदम उठा सकते हैं:

पेट्रोल या डीजल का कम प्रयोग करें: परिवहन से दुनिया का 20 प्रतिशत उत्सर्जन निकलता है। सबसे बुरी स्थिति बनती है सड़क यातायात से। परिवहन को कार्बनमुक्त करने के लिए उत्सर्जनों में कटौती का एक आसान तरीका है। पेट्रोल से चलने वाली कारों के बदले ट्रेन, साइकिल, ई-वाहन का इस्तेमाल करें और जहां तक संभव हो पैदल चलकर आना-जाना करें यानी सबसे शून्य उत्सर्जन वाला ट्रांसपोर्ट। शहरों में, ई-स्कूटर से लेकर ई-बसों तक बिजली से चलने वाले परिवहन विकल्प मौजूद हैं और वो एक ठिकाने से दूसरे ठिकाने

तक एक कम उत्सर्जन मार्ग बनाते हैं। इलेक्ट्रिक स्कूटर की तुलना में एक पेट्रोल कार दस गुना ज्यादा कार्बन का उत्सर्जन करती है। इसमें उत्पादन से लेकर कबाड़ के निपटारे तक से जुड़ा उत्सर्जन भी शामिल है। विमान से कभी सफर नहीं करने वाली दुनिया की करीब 10 फीसदी आबादी के लिए विमान के बदले ट्रेनों से आवाजाही का भी एक बड़ा असर पड़ सकता है। यूरोपीय शहरों के बीच एक आम रेल सफर उसी दूरी की उड़ान के मुकाबले 90 फीसदी कम सीओ₂ उत्सर्जित करता है।

हरित और अक्षय ऊर्जा का प्रयोग करें: ऊर्जा के लिए जीवाश्म ईंधनों को जलाना, ग्लोबल ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जनों का सबसे बड़ा स्रोत है। साफ, अक्षय स्रोत जैसे पवन ऊर्जा या सौर ऊर्जा से हरित ऊर्जा हासिल करने का विकल्प बढ़िया है। यह जलवायु तबाह करने वाले कार्बन के मुख्य स्रोत को खत्म कर सकता है। ग्राहक पहले ही अंतर पैदा कर चुके हैं। यूरोपीय संघ में 2019 से, अक्षय ऊर्जा उत्पादन 2005 की तुलना में दोगुना हो चुका है, 34 फीसदी बिजली उसी से आती है। इसका मतलब है कि यूरोपीय संघ की अधिकांश बिजली कोयले से पैदा नहीं की जाती है। कोयला उत्सर्जन के लिए सबसे बड़े जिम्मेदार जीवाश्म ईंधन है। एक घर या मकान या अपार्टमेंट में रहने वाले लोग भी अपनी छतों पर सौर ऊर्जा लगा सकते हैं या गैस हीटिंग के बदले, जहां संभव है, इलेक्ट्रिक हीट पंप लगा सकते हैं। कुछ समुदाय तो अपने आसपास, विशिष्ट रूप से अक्षय ऊर्जा पर ही निर्भर रहने के लिए एक साथ आ रहे हैं।

बिजली का कम प्रयोग करें: हीटिंग को कम करना या बंद करना जैसी सामान्य-सी चीज़ भी बहुत सारी ऊर्जा बचा सकती है। रूसी गैस पर देश की निर्भरता से पैदा हुए ऊर्जा संकट से जूझ रही जर्मन सरकार इसीलिए इन सर्दियों में सरकारी इमारतों में हीटिंग के तापमान को 19 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करेगी।

पेड़ लगाएँ: पेड़ एक बहुत जरूरी कार्बन लिंक है, फिर भी जंगल बड़े पैमाने पर काटे जा रहे हैं। मिसाल के लिए अमेजन जंगल की कटाई में पिछले साल 20 फीसदी की बढ़ोतरी हो गई थी। पहले से कहीं ज्यादा, इस समय पेड़ लगाना मतलब वायुमंडल में सीओ₂ को कम करना है। व्यक्तिगत तौर पर ये सबसे अच्छा उपाय है। पेड़ ना सिर्फ हवा को साफ करते हैं, जैवविविधता को बढ़ाते हैं और मिट्टी की उर्वरता बनाए रखते हैं बल्कि वे ऊर्जा भी बचाते हैं। खासकर शहरों में ये देखा जा सकता है जहां सड़कों पर लगे ज्यादा से ज्यादा पेड़ ठंडक पहुंचाते हैं और एयरकंडिशनिंग की जरूरत में कटौती करते हैं। ये कार्बन मुक्त गैरलाभकारी उपाय हैं। इसी तरह सर्दियों में, पेड़ हवा से महफूज रखने वाले शेल्टर होम की तरह काम करते हैं और इस तरह हीटिंग की कीमतों में 25 फीसदी तक की कमी ले आते हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम में बहुत ही जल्दी-जल्दी और घातक बदलाव होने लगे हैं। साल 2019 दूसरा सबसे गर्म साल रिकॉर्ड किया गया। अब तक का सबसे गर्म दशक 2010- 2019 रिकॉर्ड किया गया। वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य ग्रीनहाउस गैसों का स्तर 2019 में नए रिकॉर्ड तक पहुंच गया। बाढ़, सूखा, झुलसा देने वाली लू, जंगल की आग और क्षेत्रीय चक्रवातों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। जलवायु परिवर्तन के कारण दुनिया भर में समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है। ग्रीनलैंड और अंटार्कटिका में जमी बर्फ के पिघलने की दर बढ़ती जा रही है जिससे समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है। मालदीव की समुद्र तल से ऊंचाई कम होने के कारण यह द्वीपीय राष्ट्र विशेष खतरे में है। इस देश का उच्चतम स्थान समुद्र तल से लगभग 7.5 फीट ऊंचा है जिससे मालदीव के समुद्र में डूबने का खतरे बढ़ता जा रहा है। कई लोग सोचते हैं कि जलवायु परिवर्तन का मुख्य अर्थ गर्म तापमान है।

लेकिन तापमान में वृद्धि केवल कहानी की शुरुआत है। क्योंकि पृथ्वी एक प्रणाली है, जहाँ सब कुछ जुड़ा हुआ है, एक क्षेत्र में परिवर्तन सभी अन्य क्षेत्रों में परिवर्तन को प्रभावित कर सकता है। जलवायु परिवर्तन के परिणामों में अब अन्य बातों के अलावा तीव्र सूखा, जल की कमी, भीषण आग, समुद्र का बढ़ता स्तर, बाढ़, ध्रुवीय बर्फ का पिघलना, विनाशकारी तूफान और जैव विविधता में गिरावट शामिल हैं।



जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए, हमें अपने जीवन में कुछ बदलाव करने होंगे, जैसे कि ऊर्जा का कम उपयोग करना, परिवहन के लिए इलेक्ट्रिक वाहन या सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करना, शाकाहारी आहार खाना, और अधिक पेड़ लगाना। इसके अलावा, सरकारों और उद्योगों को भी जीवाश्म ईंधन के उपयोग को कम करना होगा और अक्षय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करना होगा।

हमें इस जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए हर मुमकिन प्रयास करना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जलवायु परिवर्तन में हो रहे बदलाव एवं निपटान हेतु कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं: क) वर्ष 1979 में विश्व जलवायु सम्मेलन जिनेवा में आयोजित किया गया था। यह जलवायु परिवर्तन पर प्रथम अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन था। ख) वर्ष 1992 में पृथ्वी शिखर सम्मेलन किया गया, जिसमें पर्यावरण एवं विकास पर एक रूपरेखा तैयार किया गया था जो जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु एक अंतरराष्ट्रीय समझौता है। ग) वर्ष 1997 में क्योटो प्रोटोकॉल समझौता था जिसमें औद्योगिक देशों को ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन में कमी लाने का लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। घ) वर्ष 2015 में पेरिस समझौता।

हिंदी पढ़ना और पढ़ाना हमारा कर्तव्य है। उसे हम सबको अपनाना है ।

लाल बहादुर शास्त्री

डिजिटल डिटॉक्स

(हाइपर कनेक्ट दुनिया में अपने जीवन को पुनः प्राप्त करना)

आज की डिजिटल दुनिया में स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और लगातार आने वाले नोटिफिकेशन्स हमारी जिंदगी का अहम हिस्सा बन चुके हैं। टेक्नोलॉजी ने सुविधा और कनेक्टिविटी तो दी है, लेकिन साथ ही इसने डिजिटल ओवरलोड-तनाव, चिंता और एकाग्रता की कमी-को भी बढ़ावा दिया है। डिजिटल डिटॉक्स, यानी जानबूझकर स्क्रीन टाइम को कम करना या बंद करना, अब एक ट्रेंड बन रहा है जो मानसिक शांति और बैलेंस लौटाने में मदद करता है। यह आर्टिकल डिजिटल डिटॉक्स के महत्व, इसके फायदे, इसे अपनाने के आसान तरीकों और बिना टेक्नोलॉजी के जीवन को बेहतर बनाने के तरीकों पर चर्चा करेगा।



श्री शिलादित्य सिन्हा
लेखापरीक्षक

डिजिटल डिटॉक्स की जरूरत क्यों है?

1. डिजिटल लत का बढ़ता प्रभाव -

रिसर्च बताती है कि औसत व्यक्ति रोजाना 6 घंटे से ज्यादा डिजिटल डिवाइस पर बिताता है, और कई लोग हर 10 मिनट में अपना फोन चेक करते हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और ऐप्स को इस तरह डिज़ाइन किया गया है कि वे यूजर्स को ज्यादा से ज्यादा समय तक बांधे रखे। यह लगातार कनेक्टिविटी निम्न समस्याएं पैदा करती है:

- प्रोडक्टिविटी कम होना (मल्टीटास्किंग और डिस्ट्रैक्शन के कारण)
- नींद की समस्या (स्क्रीन की नीली रोशनी मेलाटोनिन हार्मोन को प्रभावित करती है)
- चिंता और डिप्रेशन बढ़ना (सोशल मीडिया पर दूसरों से तुलना)
- रियल-लाइफ रिश्तों में कमी (आमने-सामने की बातचीत घट रही है)



2. लगातार ऑनलाइन रहने का मानसिक प्रभाव

अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (APA) के अनुसार, ज्यादा स्क्रीन टाइम से:

- इफॉर्मेशन ओवरलोड होता है, जिससे निर्णय लेने की क्षमता कम होती है।
- कोंसंट्रेशन कम होता है क्योंकि हम तेजी से कंटेंट कंज्यूम करते हैं।
- FOMO (Fear of Missing Out) की वजह से तनाव और असंतोष बढ़ता है।

डिजिटल डिटॉक्स इन नकारात्मक प्रभावों को कम करके दिमाग को रीसेट करने में मदद करता है।

डिजिटल डिटॉक्स के फायदे

1. **मानसिक स्वास्थ्य में सुधार** - डिजिटल डिवाइस से दूरी बनाने से तनाव और चिंता कम होती है। जर्नल ऑफ सोशल एंड क्लिनिकल साइकोलॉजी के एक अध्ययन में पाया गया कि सोशल मीडिया का उपयोग रोजाना 30 मिनट तक सीमित करने से अकेलापन और डिप्रेशन कम हुआ।
2. **बेहतर नींद** - सोने से पहले स्क्रीन टाइम कम करने से मेलाटोनिन प्रोडक्शन सामान्य होता है, जिससे गहरी और आरामदायक नींद आती है।
3. **फोकस और प्रोडक्टिविटी बढ़ना** - बिना नोटिफिकेशन के दिमाग गहन कार्य कर पाता है, जिससे एकाग्रता और कार्यक्षमता बढ़ती है।
4. **रिश्तों में मजबूती** - डिजिटल डिटॉक्स से आमने-सामने की बातचीत बढ़ती है, जिससे परिवार और दोस्तों के साथ रिश्ते मजबूत होते हैं।
5. **माइंडफुलनेस और प्रेजेंस बढ़ना** - ऑनलाइन दुनिया से ब्रेक लेकर हम वर्तमान पल का आनंद ले पाते हैं, जैसे किताब पढ़ना, मेडिटेशन करना या प्रकृति के साथ समय बिताना।

डिजिटल डिटॉक्स कैसे करें?

1. छोटे-छोटे कदमों से शुरुआत करें

- सुबह उठकर फोन न चेक करें (पहले 30 मिनट टेक्नोलॉजी-फ्री रहें) ।
- बिना फोन के खाना खाएं (परिवार के साथ बातचीत पर ध्यान दें) ।
- हर घंटे 5 मिनट का ब्रेक लें (स्क्रीन से दूर रहकर स्ट्रेच करें या टहलें) ।

2. टेक्नोलॉजी के साथ सीमाएं तय करें

- गैर-जरूरी नोटिफिकेशन बंद करें (सिर्फ कॉल और मैसेज चालू रखें) ।
- ऐप टाइमर का उपयोग करें (iOS में स्क्रीन टाइम, आंड्रॉइड में डिजिटल वेलबीइंग) ।
- टेक-फ्री जोन बनाएं (बेडरूम, डाइनिंग टेबल) ।

3. ऑफलाइन एक्टिविटीज प्लान करें

स्क्रीन टाइम की जगह:

- किताबें पढ़ें
- व्यायाम या पार्क में वॉक करें
- जर्नलिंग या क्रिएटिव हॉबीज अपनाएं
- दोस्तों और परिवार के साथ समय बिताएं

4. पूरे दिन का डिजिटल डिटॉक्स ट्राई करें

- 24 घंटे के लिए डिजिटल डिटॉक्स करें।
- फोन की जगह अलार्म घड़ी का उपयोग करें।
- बोर्ड गेम्स, हाइकिंग या कुकिंग जैसी ऑफलाइन एक्टिविटीज में व्यस्त रहें।

5. डिजिटल मिनिमलिज्म अपनाएं

- बेकार के ऐप्स डिलीट करें।
- उन अकाउंट को अनफॉलो करें जो कोई वैल्यू नहीं देते।
- टेक्नोलॉजी को सोच-समझकर इस्तेमाल करें, न कि आदत वश।

सफलता की कहानियां: डिजिटल डिटॉक्स के असल अनुभव

केस स्टडी 1: एकजीक्यूटिव ने वापस पाया फोकस

एक कॉर्पोरेट मैनेजर, जो ईमेल के चक्कर में हमेशा स्ट्रेस में रहता था, ने शाम 6 बजे के बाद ईमेल चेक न करने और सोशल मीडिया ऐप्स डिलीट करने का फैसला किया। कुछ हफ्तों में ही उसकी नींद, वर्क एफिशिएंसी और फैमिली टाइम में सुधार हुआ।

केस स्टडी 2: सोशल मीडिया ब्रेक ने कम की चिंता

एक कॉलेज स्टूडेंट ने 30 दिन के लिए इंस्टाग्राम ब्रेक लिया और पाया कि उसकी चिंता और खुद को दूसरों से तुलना करने की आदत कम हो गई। उसने स्कॉलिंग की जगह पेंटिंग शुरू की और दोस्तों के साथ ऑफलाइन मिलना बढ़ाया।



चुनौतियां और उनका समाधान

1. FOMO (Fear of Missing Out)

- याद रखें: ज्यादातर ऑनलाइन कंटेंट जरूरी नहीं होता।
- इस बात पर फोकस करें कि आप मानसिक शांति और आराम पा रहे हैं।

2. काम की वजह से डिजिटल डिमांड

- वर्क-लाइफ बैलेंस बनाएं (जैसे ऑफिस टाइम के बाद ईमेल न चेक करना)।
- डीप वर्क सेशन के दौरान डू नॉट डिस्टर्ब मोड चालू करें।

3. सोशल प्रेशर

- दोस्तों और परिवार को अपने डिजिटल डिटॉक्स के बारे में बताएं—शायद वे भी शामिल हों।
- फोन-फ्री मीटअप्स का सुझाव दें।

निष्कर्ष: एक संतुलित डिजिटल जीवन की ओर

डिजिटल डिटॉक्स का मतलब टेक्नोलॉजी को हमेशा के लिए छोड़ना नहीं, बल्कि सचेतन तरीके से उपयोग करना है। समय-समय पर ऑफलाइन होकर हम अपना समय, मानसिक स्वास्थ्य और रिश्तों को नई ऊर्जा दे सकते हैं। छोटे-छोटे बदलावों से शुरुआत करें और वर्तमान पल में जीने का आनंद लें।

जैसा कि *शेरी टर्कल* ने कहा है, "हम अपने टूल्स से प्रभावित होते हैं। अब समय आ गया है कि हम खुद को उन चीजों के इर्द-गिर्द ढालें जो हमारे मानवीय उद्देश्यों की पूर्ति करें।"

नवाबों का शहर “लखनऊ”



श्री अरुण दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

आप सब लोगों ने वह वाक्य तो सुना ही होगा “पहले आप, पहले आप के चक्कर में दो लोगों की ट्रेन छूट गई।” यह वाक्य जिस शहर से संबंधित है, मैं आज उसी नवाबों के शहर ‘लखनऊ’ के बारे में कुछ लिखने जा रहा हूँ जोकि अपनी तमीज़, तहज़ीब एवं नफासत पसंदगी के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

देश के सबसे ज्यादा आबादी वाले राज्य उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ जोकि गोमती नदी के तट पर बसा है, इतिहास के बड़े महत्वपूर्ण घटनाओं का साक्षी भी रहा है। अवध के नवाबों ने बड़े नाज़ से इस शहर को आबाद किया तथा उनके हर शौक की निशानियाँ यहाँ हर तरफ बिखरी हुई हैं। बड़ा इमामबाड़ा, जोकि लखनऊ का सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है, उसमें छिपी है नवाब आसफ-उद-दौला की दरियादिली की कहानी जिसमें अकाल पीड़ित जनता के भरण-पोषण के लिए उन्होंने इस इमारत का निर्माण करवाया था। लखनऊ के हर मोड़ पर उस ज़माने की इमारतें यादगार निशानियाँ बनकर रास्ता रोके खड़ी हैं। छोटा इमामबाड़ा, रूमी दरवाज़ा, छत्तर मंजिल, रेसिडेंसी, बारादरी, दिलकुशा, शाहनफज इमामबाड़ा ऐसे कितने ही अद्भुत स्मारक चिन्ह लखनऊ को एक अलग पहचान देते हैं।



सन् 1856 में अंग्रेजों ने यहाँ के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह को गद्दी से उतारकर अवध के रियासती की समाप्ति की और इसे ब्रिटिश भारत में शामिल कर लिया। सन् 1857 में लड़े गए भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में लखनऊ ने अपनी अलग पहचान बनाई थी। वाजिद शाह की दूसरी पत्नी बेगम हज़रत महल के नेतृत्व में उनकी सेना ने अंग्रेजों को भारी टक्कर दी थी। अंत में सर कॉलिन कैम्बेल ने अंग्रेजों को जीत दिलाकर इस विद्रोह का खात्मा किया।

अंग्रेजों के शासनकाल में इस प्रदेश को ‘युनाइटेड प्रोविंस’ के नाम से जाना जाता था और आज़ादी के पश्चात 12 जनवरी, 1950 को इसका नाम बदल कर उत्तर प्रदेश रखा गया और लखनऊ को इसकी राजधानी घोषित किया गया। 2011 की जनगणना के अनुसार लखनऊ की आबादी करीब 46 लाख (24 लाख पुरुष, 22 लाख महिलाएँ), पुरुष-महिला का अनुपात 1000:917 एवं साक्षरता लगभग 77% है। धर्म के अनुसार बात की जाय तो करीब 77% आबादी हिन्दू, 21.46% मुस्लिम,

0.56% सिक्ख एवं 0.45% ईसाई हैं। इसके अलावा यहाँ बंगाली, दक्षिण भारतीय, बौद्ध एवं जैन समुदाय की भी थोड़ी आबादी मिलती है। भाषा के बारे में बात की जाए तो यहाँ अवधी भाषा की मिठास के साथ-साथ हिंदी भी मिलेगी, अँग्रेजी भी और उर्दू भी।

मौसम के बारे में बात की जाए तो यहाँ ठंड और शुष्क शीतकाल दिसंबर से फरवरी तक और गरम एवं शुष्क ग्रीष्मकाल अप्रैल से जून तक रहता है। जुलाई से सितंबर तक वर्षा ऋतु रहती है। यहाँ दक्षिणी-पश्चिमी मानसून हवाओं का असर रहता है। गर्मी के महीने में यहाँ भीषण कष्टदायक लू बहती है।

लखनऊ में चौक का बाज़ार सबसे पुराना है एवं अपने चिकन कपड़ों की दुकान और इनके कारीगरी की वजह से विश्व प्रसिद्ध है। लखनऊ का चिकन न केवल देश अपितु विदेश में भी एक्सपोर्ट होता है। आज के समय में सबसे ज़्यादा चर्चा होती है हजरतगंज के बाज़ार की जोकि दिल्ली के कनाट प्लेस जैसी ही है।

शिक्षा की तरफ से देखा जाए तो यहाँ किंग जार्ज मेडिकल कॉलेज (के.जी.एम.यू.), एस.जी.पी.जी और बीरबल साहनी अनुसंधान संस्थान प्रमुख हैं। यहाँ 06 विश्वविद्यालय हैं तथा उच्च प्रबंधन संस्थान में भारतीय प्रबंधन संस्थान लखनऊ (आई.आई.एम.एल) भी है।



प्रसिद्ध भारतीय नृत्य 'कथक' ने अपना स्वरूप यहीं पाया है। प्रसिद्ध गजल गायिका बेगम अख्तर यहीं की हैं तथा नौशाद अली, तलत महमूद एवं बाबा सहगल भी लखनऊ से संबंधित हैं।

अर्थव्यवस्था की ओर से देखा जाए तो यह शहर नौकरी पेशा वाले लोगों का शहर माना जाता है। राज्य सरकार का केंद्र होने के कारण यहाँ तमाम विभागों के मुख्यालय स्थित हैं।

लखनऊ क्षेत्र की अपनी एक अलग खास नवाबी खानपान शैली है जिसमें विभिन्न प्रकार के बिरयानी, कोरमा, नाहरी, कुल्चे, शीरमाल और वर्की पराठा शामिल हैं। यहाँ की सबसे प्रसिद्ध दुकान है 'टुंडे कबाबी' जोकि अपने कबाबों के लिए मशहूर हैं और खानपान के शौकीन लोग लखनऊ आने पर एक बार यहाँ का ज़ायका लेने जरूर आते हैं।

पिकनिक करने के लिए कुकरेल फॉरेस्ट जोकि घड़ियाल एवं कछुओं का एक अभसारण्य है, बहुत ही उत्तम जगह है। इसके अलावा यहाँ हाथी पार्क, बुद्ध पार्क, नींबू पार्क, मरीन ड्राइव एवं इंदिरा गांधी तारामंडल भी दर्शनीय हैं।

यातायात हेतु बहुत से राजमार्ग भी यहाँ मौजूद हैं जैसे कि एन.एच. 30 एवं एन.एच. 27।

उत्तर रेलवे का पूर्वोत्तर रेलवे का यह प्रमुख रूट है। इसके अलावा यहाँ अमौसी हवाई अड्डा भी है जोकि अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है। 2013 से यहाँ मेट्रो यातायात भी प्रारंभ की गई है जिससे यहाँ के लोगों को बहुत सुविधा मिली है।

क्रिकेट प्रेमियों के लिए सन् 2017 में भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी एकना क्रिकेट स्टेडियम का भी उदघाटन हुआ है।

अंत में इस लेख का समापन मैं यह बता कर करना चाहूँगा कि यह वह शहर है जिसमें मैंने अपना बचपन गुज़ारा है एवं इस शहर से मैं अपने दिल से अपने अंतिम समय तक जुड़ा रहूँगा।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गर्व का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता ।

डॉ राजेंद्र प्रसाद

पर्यावरण प्रदूषण

पर्यावरण प्रदूषण हमारे समय की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है, जो मानव स्वास्थ्य और ग्रह की स्थिरता के लिए गंभीर खतरा पैदा करता है। इसमें वायु, जल, मिट्टी और यहाँ तक कि औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, और वनों की कटाई जैसी मानवीय गतिविधियों के कारण होने वाले ध्वनि और प्रकाश प्रदूषण भी शामिल हैं। प्रदूषण प्राकृतिक प्रणालियों को बाधित करता है और जलवायु परिवर्तन गंभीर परिणामों को जन्म देता है। प्रदूषण के प्रकारों, उनके कारणों को समझना और प्रभावी उपायों को लागू करना इसके प्रभाव को कम करने और भविष्य की पीढ़ियों के लिए हमारे पर्यावरण की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। यह पर्यावरण प्रदूषण के प्रमुख प्रकारों, उनके मूल कारणों और इस वैश्विक संकट को दूर करने के लिए समाधानों का उल्लेख करेगा।



सुश्री डिम्पल प्रसाद
कनिष्ठ अनुवादक

पर्यावरण प्रदूषण के कारण:-

उद्योगों के विस्तार और रोजगार के अवसरों की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी केन्द्रों की ओर लोगों के निरंतर पलायन के कारण अपर्याप्त आवास की स्थिति की समस्या बढ़ती जा रही है।

पर्यावरण प्रदूषण को पाँच मुख्य प्रकारों में रेखांकित किया जा सकता है: वायु, जल, भूमि, ध्वनि और प्रकाश प्रदूषण। नीचे इन श्रेणियों का एक संक्षिप्त विवरण दिया गया है।



1. वायु प्रदूषण: वायु प्रदूषण आज की दुनिया में एक बड़ी समस्या है। कारखानों की चिमनियों और गाड़ियों से निकालने वाला धुआँ हमारी सांस लेने वाली हवा को प्रदूषित करता है। इस धुएँ के साथ कार्बन डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड और सल्फरडाइऑक्साइड जैसी गैसें निकलती हैं जो हवा में मिलकर मानव शरीर, वनस्पतियों और जीवों को बहुत नुकसान पहुंचाती हैं।

2. जल प्रदूषण: जल प्रदूषण सबसे गंभीर पर्यावरण मुद्दों में से एक है। बढ़ते उद्योगों और सीवेज के पानी से निकलने वाले उत्पादों को नदियों और अन्य जल निकायों में डालने से पहले ठीक से उपचारित नहीं किया जाता है, जिससे जल प्रदूषण होता है।

3. भूमि प्रदूषण: भूमि प्रदूषण जहरीले रासायनिक वाले रसायनों के खुले मैदान में जमाव आदि के कारण होता है। प्लास्टिक, पॉलीथीन और बोतलों जैसे पदार्थ भूमि प्रदूषण का कारण बनते हैं।

4. ध्वनि प्रदूषण: बढ़ती आबादी, शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के साथ, ध्वनि प्रदूषण मानव जीवन, स्वास्थ्य और दैनिक जीवन में आराम को प्रभावित करने वाला एक गंभीर रूप बनते जा रहा है। वाहनों के हॉर्न, लाउडस्पीकर, म्यूजिक सिस्टम ध्वनि प्रदूषण में योगदान करते हैं।

सुधार के उपाय: विभिन्न प्रकार के प्रदूषण से बचने के लिए चाहिए कि अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाएँ, हरियाली की मात्रा अधिक हो। सड़कों के किनारे घने वृक्ष हों। आबादी वाले क्षेत्र खुले हों, हवादार हों, हरियाली से ओतप्रोत हों। कल-कारखानों को आबादी से दूर रखना चाहिए।

भारत में हर भाषा का सम्मान है,
पर हिंदी ईश्वर का वरदान है।

दैनिक जीवन में गणित का महत्व



श्री अजीत कुमार यादव
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

गणित सिर्फ एक स्कूली विषय नहीं है; यह एक बुनियादी उपकरण है जो हमारे दैनिक जीवन को आकार देता है, सरल कार्यों से लेकर जटिल गणनाओं तक। यह हमें वित्तीय मामलों को संभालने, भोजन पकाने, संरचनाएँ बनाने और यहाँ तक कि हमारे आस-पास की दुनिया को समझने में मदद करता है। अनिवार्य रूप से, गणित हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं में समस्याओं को समझने और हल करने के लिए रूपरेखा प्रदान करता है। यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं कि गणित कैसे हमारे दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण है :-

1. वित्त और अर्थशास्त्र:

बजट और बचत: चाहे मासिक खर्चों के लिए बजट बनाना हो या भविष्य के लिए बचत करनी हो, गणित हमें सूचित वित्तीय निर्णय लेने में मदद करता है।

ब्याज दरें, निवेश और वित्तीय योजना को समझना: बचत खातों पर ब्याज दरों को समझने से लेकर निवेश पर रिटर्न की गणना करने तक, बैंकिंग में गणित बहुत ज़रूरी है। चक्रवृद्धि ब्याज की दर के फॉर्मूले हमें दीर्घकालिक वित्तीय लक्ष्यों की योजना प्रभावी ढंग से बनाने में मदद करते हैं।

2. खाना पकाना और भोजन तैयार करना:

सामग्री को मापना और व्यंजनों का पालन करना: खाना पकाने और बेकिंग में माप, अनुपात और समानुपात महत्वपूर्ण हैं। व्यंजनों में अक्सर अलग-अलग सर्विंग्स के लिए समायोजन की आवश्यकता होती है, जिसमें बुनियादी अंकगणित शामिल होता है। उदाहरण के लिए, किसी रेसिपी को दोगुना या आधा करने से यह सुनिश्चित होता है कि सामग्री की सही मात्रा का उपयोग किया गया है।

खाना पकाने के समय और तापमान की गणना: गणित विभिन्न व्यंजनों के लिए सही समय और तापमान निर्धारित करने में मदद करता है।

3. निर्माण और गृह सुधार:

क्षेत्रफल और आयतन मापना और गणना करना: घर की मरम्मत, निर्माण परियोजनाओं और बागवानी के लिए ज्यामितीय अवधारणाओं को समझना महत्वपूर्ण है।

आवश्यक सामग्री की गणना: पेंटिंग के लिए दीवारों के क्षेत्रफल की गणना करना या फ्लोरिंग के लिए ज़रूरी टाइलों की संख्या निर्धारित करने के लिए गणितीय ज्ञान की ज़रूरत होती है।

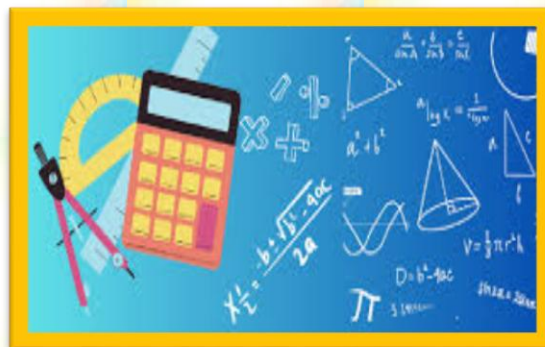
4. समय प्रबंधन:

समय-निर्धारण और योजना: हम सभी अपने समय का प्रबंधन और बुद्धिमानी से खर्च करना चाहते हैं। जब हमारा दिन सुबह शुरू होता है, तो हम दिन के लिए एक उपयुक्त शेड्यूल बनाना शुरू करते हैं। अपने कार्यों को समयबद्ध तरीके से पूरा करने के लिए, हम सीधे-साधे हिसाब-किताब करते हैं। एनालॉग घड़ी को पढ़ने का सरल कार्य भी गणित से जुड़ा होता है।

यात्रा समय और दूरी की गणना: चाहे स्कूल जाना हो या यात्रा की योजना बनाना हो, नेविगेशन और यात्रा के लिए गणित आवश्यक है। हम दूरी, गति और समय त्वरण को मापने के लिए गणितीय अवधारणाओं का उपयोग करते हैं। एक ड्राइवर गणना करने, समायोजन करने और गियर बदलने के लिए गणित का उपयोग करता है। मानचित्र और GPS दूरी की गणना करने के लिए ज्यामिति और त्रिकोणमिति का उपयोग करते हैं, जबकि ट्रैफिक पैटर्न और यात्रा समय का अनुमान सांख्यिकीय विश्लेषण पर निर्भर करता है।

5. रोजमर्रा के कार्य:

सामान की खरीदारी: खरीदारी सबसे स्पष्ट परिदृश्य है जहाँ हम मौलिक गणितीय अवधारणाओं के अनुप्रयोग को देखते हैं। हम कीमतों की तुलना करने, सर्वोत्तम सौदे का निर्धारण करने और खरीदी जाने वाली मात्रा, वजन, प्रति इकाई मूल्य, छूट और खरीदारी करने से पहले आइटम की कुल लागत की गणना करने के लिए गणित का उपयोग करते हैं। हम कुल खरीद लागत की गणना करते समय भी गणित का उपयोग करते हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हम बजट में बने हुए हैं और लागत को कवर करने के लिए हमारे पास पर्याप्त पैसा है।



खेल को समझना: खेल का आनंद लेने के अलावा खेलों में संख्याएँ अगली सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है। गणित मैदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और खिलाड़ी की दक्षता को प्रभावित करता है। गणित का उपयोग स्कोरिंग, सांख्यिकी ट्रैकिंग और खेल रणनीतियों का विश्लेषण करने में किया जाता है।

संगीत और नृत्य: संगीत सुनना और नृत्य करना मनुष्य के दो सबसे लोकप्रिय शौक हैं। यहाँ, हम संगीत का वर्णन करने और सिखाने के लिए अक्सर संख्याओं और गणित का उपयोग करते हैं। अंशों और अनुपातों को समझना संगीत नोट लय की समझ को आसान बनाता है। इसके अलावा, नृत्य करते समय समन्वय को बेहतर बनाने के लिए सरल गणितीय प्रक्रियाओं का उपयोग किया जाता है।

शारीरिक फिटनेस: गणित शरीर के वजन, कैलोरी सेवन और व्यायाम दिनचर्या जैसे स्वास्थ्य मीट्रिक को ट्रैक करने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, आपके बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) की गणना करना या आपकी हृदय गति को मापना बुनियादी गणित से जुड़ा होता है।

व्यायाम: गणित हमारे वर्कआउट रूटीन का एक अभिन्न अंग है। हम इसका उपयोग दोहराव की गिनती करने, समय की गणना करने, वजन मापने आदि के लिए करते हैं। हम अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम के अनुसार पूरी तरह से गणित के आधार पर अपना नियम बनाते हैं। इसलिए अगली बार जब आप व्यायाम करें, तो ध्यान रखें कि आप इसे कितनी बार करते हैं।

1. **प्राद्व्योगिकी:** गणित कई तकनीकों का एक महत्वपूर्ण घटक है जिसका हम हर दिन उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, कंप्यूटर एल्गोरिदम, मोबाइल फोन, इंटरनेट और सॉफ्टवेयर हर कार्य और आदेश को उचित क्रियाओं की श्रृंखला में पूरा करने के लिए कैलकुलस, रैखिक बीजगणित और एल्गोरिदम जैसी उन्नत गणितीय अवधारणाओं का उपयोग करते हैं। पासवर्ड (क्रिप्टोग्राफी) सेट करने से लेकर इंटरनेट डेटा प्लान को समझने तक, गणित सुनिश्चित करता है कि हम तकनीक का प्रभावी ढंग से इस्तेमाल करें।
2. **अन्य विषयों की नींव:** वैसे तो गणित एक रोमांचक विषय है, लेकिन आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि यह भौतिकी, रसायन विज्ञान, अर्थशास्त्र, इतिहास, लेखाशास्त्र और सांख्यिकी सहित कई विषयों के लिए आधार का काम करता है। इन सभी विषयों में गणित शामिल है।
3. **मूल बातों से आगे :**

महत्वपूर्ण सोच: गणित तार्किक सोच और समस्या-समाधान कौशल को तेज करता है। उदाहरण के लिए, पहिलियाँ सुलझाना या रणनीतिक निर्णय लेना, जैसे दोस्तों के बीच बिल का बंटवारा कैसे करना है, इसके लिए त्वरित मानसिक गणित और तर्क की आवश्यकता होती है।

करियर के अवसर: गणित STEM क्षेत्रों और अन्य व्यवसायों में कई करियरों का आधार है।

निष्कर्ष : गणित एक ऐसा विषय है जिसका उपयोग हम अपने दैनिक जीवन में करते हैं, सरल गणनाओं से लेकर अधिक जटिल समस्या-समाधान तक। यह एक शक्तिशाली उपकरण है जो हमें अपने आस-पास की दुनिया को समझने और उसमें नेविगेट करने में मदद करता है। इसलिए, सूचित निर्णय लेने के लिए बुनियादी गणित अवधारणाओं को समझना आवश्यक है।

हमारी नागरी लिपी दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपी है ।

राहुल सांकृत्यायन

मंजिल अभी दूर है



श्री प्रमोद कुमार दास
कनिष्ठ अनुवादक

कहते हैं कि कर्म करो, फल की चिंता मत करो, फल तो दूसरी शक्ति पर निर्भर है। परंतु वास्तव में ऐसा होता नहीं है। हम कपड़ा लेते समय सोचते हैं कि क्या पहनने से हम अच्छा दिखेंगे, बाहर खाने जाते हैं तो पैसा खर्च करने से पहले सोचते हैं कि क्या स्वादिष्ट होगा और खाने से पेट भरेगा। कर्म करने वाले फल के बारे में सोच कर ही मेहनत करते हैं। आज सूर्योदय के साथ लंबी प्रतीक्षा का अंत होने वाला है। क्योंकि आज कॉलेज में परीक्षा का परिणाम घोषित होने वाला दिन है। जिनके पास मोबाइल, कंप्यूटर, इंटरनेट आदि की सुविधा उपलब्ध है, वे आज घर में बैठे हैं लेकिन जो इन सुविधाओं से वंचित हैं, उनको तो कॉलेज जाना ही होगा। कुछ विद्यार्थी तो इस लिए उत्साहित हैं कि आज कॉलेज में अपने दोस्तों से मुलाकात होगी, तो कुछ परिणाम को लेकर उत्साहित हैं। कुछ तो डर से कॉलेज नहीं जाना चाहते कि यदि रिजल्ट खराब हुआ तो सभी के सवालियों के क्या जवाब देंगे। कुछ नई कक्षा में जाने, नई किताबें पढ़ने के लिए बेचैन हैं। सुबह के दस बज चुके हैं। स्कूल, कॉलेज, ऑफिस, बाजार जाने वाले लोगों की भीड़ सड़क पर दिख रही है। गड़ियों के चलने तथा उसके हार्न की आवाज चारों तरफ गुंज रही है।

नवीन हमेशा की तरह आज भी तैयार होकर कॉलेज के लिए निकलने वाला ही था कि उसकी मां की नजर उसके बैग में रखे हॉकी स्टिक पर पड़ी।

मां ने पूछा- “नवीन, ये क्या है? तुम कब से हॉकी खेलने लग गए?”

नवीन ने कोई जवाब नहीं दिया।

मां को संदेह हुआ, क्योंकि वह कई बार नवीन को कॉलेज से जख्म के साथ लौटते हुए देखी थी। इसलिए उन्होंने नवीन को अपने पास बुलाया और पूछा- “बेटा, क्या बात है? आज-कल तुम न तो ठीक से खाना खाते हो, न ही तुमको कई दिनों से पढ़ते देखा है और न ही तुम्हारे दोस्तों को यहां आते देखा है। सब ठीक तो है; या फिर कोई प्रॉब्लम है?”

नवीन को समझ में नहीं आ रहा था कि वह अपनी मां को क्या जवाब देगा। फिर उसकी मां ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा - “ये हॉकी स्टिक किसको पीटने के लिए है? क्या कॉलेज में किसी से हाथापाई हुई है?”

नवीन कैसे बताता कि उसका बेटा कई बार मार खा कर आया है। कॉलेज में रैगिंग की जो समस्या है वो तो है ही लेकिन अच्छी पढ़ाई कर के अच्छा मार्क्स लाने पर भी समस्या है क्योंकि कुछ लोग नहीं चाहते हैं कि किसी के मार्क्स उनसे ज्यादा हो। नवीन की चुप्पी से मां को अब गुस्सा आ रहा था। फिर भी अपने इक लौते बेटे को इस तरह से किसी गुंडादर्री में शामिल हो कर भविष्य बर्बाद होते हुए वह नहीं देख सकती थी। इसलिए संयमित होकर ठंडे दिमाग से बेटे के सर को सहलाते हुए फिर से पूछा- “कोई लड़की का चक्कर है क्या?”

अब नवीन से रहा नहीं गया और उसने कहा- “कॉलेज में कुछ सीनियर्स गुंडे बन बैठे हैं और उनके सहारे मेरे क्लासमेट मुझे ठीक से पढ़ने भी नहीं देते। पिछली बार मेरे मार्क्स उनसे ज्यादा आए तो उन्होंने मुझे पीटा था और कहा कि अगर अगली बार मेरे मार्क्स उनसे ज्यादा आते हैं तो फिर से मुझे पीटेंगे।”

“क्या!”

“क्या प्रोफेसर्स आपको कुछ नहीं कहते हैं?” - मां ने पूछा।

“प्रोफेसर्स को समझा दिया गया है कि वे सिर्फ अपना काम करें बाकी चीजों पर टांग न अड़ाए।”
- नवीन ने जवाब दिया।

“तो तुम इस स्टिक से क्या करने वाले हो?”

नवीन ने कहा - “आत्मरक्षा।”

“तो तुम अब मारपीट करोगे?”

“हां, मां, करना पड़ेगा।”

“ऐसे में तुम अगर बढ़िया मार्क्स ला भी लेते हो तो भी यदि तुम पर दाग लग गया तो नौकरी नहीं मिलेगी। फिर क्या करोगे?”

“तो क्या करूं मां, उनसे मार खाता रहूं?”

“नहीं।”

“तुम अपने दोस्तों के साथ क्यों नहीं रहते? एक साथ रहोगे तो फिर वे डर से तुमको परेशान नहीं करेंगे।”

“क्या मां, तुम भी न किन डरपोकों के साथ रहने बोल रही हो। वे तो उनके डर से उनकी हां में हां मिलाते रहते हैं। एक दो जो मेरे साथ थे, उनको भी अपनी जाति का अहंकार है और वे भी मेरे साथ रहना पसंद नहीं करते। मेरे अच्छे मार्क्स से वे भी चिढ़ते हैं। कई बार तो उन्होंने ऐसा कहा है कि मेरा मार्क्स भी अच्छा है और ऊपर से मैं रिजर्वेशन में मैं भी आता हूं तो मुझे नौकरी लग जाएगी और फिर मैं उनसे आगे हो जाऊंगा। इसलिए वे भी चाहते हैं कि मेरे मार्क्स न बढ़ें।”



“आज के समय में भी लोग ऐसा सोचते हैं! क्या इतने सारे संत-फकीरों, महात्माओं, बुद्धिजीवियों की बातों का उन पर कोई असर नहीं हुआ है। क्या आज भी उनकी मानसिकता में कोई बदलाव नहीं हुआ है?” - दीवार पर लटके कबीर दास, स्वामी विवेकानंद, गांधी जी तथा बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर की तस्वीरों की ओर दिखाते हुए मां ने पूछा।

“हुआ है न मां। वे अब पहले जैसे नहीं रहे। लेकिन जब उनको ये लगता है कि ये हमसे आगे हो जाएंगे तो फिर सारा भाईचारा खत्म हो जाता है। वे हमें अपने साथ लेकर चलने को तैयार तो हैं लेकिन वे हमें अपने से आगे बढ़ते नहीं देख सकते। जब तक हम उनका अनुचर बन कर रहते हैं तब तक वे हमें अपने साथ रखते हैं। किन्हीं कारणों से उनके साथ हितों का टकराव हुआ तो फिर सब कुछ भूलकर अपने पे आ जाते हैं; लोगों को सोचना चाहिए कि अपनी अगली पीढ़ी को वे विरासत में क्या देकर जा रहे हैं।”

“तो क्या उनको वे गुंडे परेशान नहीं करते?”

“करते हैं न, लेकिन अपने पैसे के दम पर वे उनको अपने साथ मिला लेते हैं।”

“क्या सभी ऊंची जाति वाले वैसे ही हैं?”

“नहीं, नहीं। सब वैसे नहीं है। मनीष और रतन तो वैसे नहीं करते। वे भी बेचारे न तो उनके साथ शामिल हो पाते हैं और न ही मेरा साथ पूरी तरह से दे पाते हैं।”

“वे भी बेचारे का क्या मतलब?”

“मतलब कि जब से उनके पापा का बिजनेस डूब गया तब से वे काफी परेशान रहते हैं। समय हो रहा है, मैं कॉलेज चलता हूँ।”

“रुको।” मां ने ऊंची आवाज में कहा।

“अब क्या हुआ, मां?”

“यह हॉकी स्टीक यहीं रख कर जाओ।”

“नहीं मां, आज तो पक्का मार पड़ने ही वाली है। मैं आज उनको जवाब दे कर आऊंगा।”

“तुम ऐसा नहीं करोगे। मैं चलती हूँ न तुम्हारे साथ।”

“तुम! मेरे कॉलेज आओगी?” - आश्चर्य होकर नवीन ने कहा।

“हां। क्यों? नहीं आ सकती क्या?”

“हां, आ सकती हो न। लेकिन किसी भी स्टूडेंट के पैरेंट्स कॉलेज नहीं जाते। जिनके मार्क्स कम आते हैं, उनके अभिभावक बुलाए जाते हैं, बस।”

“आज मैं भी साथ चलूंगी। और अब ये मारपीट नहीं करना होगा। जरूरत पड़ी तो पुलिस स्टेशन चलेंगे।”

“नहीं मां, कॉलेज में पुलिस वाले आएंगे तो कॉलेज की बदनामी होगी और फिर प्रोफेसर्स मुझे डांटेंगे। मैं अकेला ही चला जाता हूँ।”

“ठहरो, मैं भी साथ चलती हूँ।”

“ठीक है, तो चलो।”

कॉलेज के लिए दोनों साथ निकलते हैं। बस स्टैंड पर उनकी मुलाकात उन पंडित जी से होती है जिन्होंने नवीन के गृह प्रवेश का पूजा किया था। नवीन उनके पैर छू कर उनसे आशीर्वाद लेता है। नवीन की मां को साथ देख कर वह पूछते हैं - “दोनों एक साथ कहाँ चले?”

नवीन की मां कहती हैं - “आज नवीन का रिजल्ट आने वाला है और कॉलेज में कुछ लड़के इसको परेशान करते हैं इसलिए साथ जा रही हूँ।”

“क्या! कॉलेज में ऐसा भी होता है।”

इतने में बस आ जाती है। सभी बस पर चढ़ते हैं। नवीन, उसकी मां और पंडित जी को एक साथ बैठने की जगह मिल जाती है। नवीन की मां आंचल के छोर में बंधे गांठ से 20 रुपये निकाल कर कंडक्टर को देती हैं। पंडित जी भी अपने बटुए से 50 रुपये का नोट कंडक्टर को देकर शेष 40 रुपये वापस लेते हैं। पंडित जी का एक लड़का उसी कॉलेज में साइंस लेकर पढ़ाई कर रहा होता है इसलिए वह जानना चाहते हैं और पूछते हैं - “उनके बेटे का रिजल्ट भी आज ही आएगा क्या?” नवीन कहता है - “वह आर्ट्स ले कर पढ़ाई कर रहा है और साइंस वाले से बातचीत कम ही होती है तो उसको इसकी जानकारी नहीं है लेकिन पिछले साल तो सभी स्ट्रीम का रिजल्ट्स एक साथ आया था। तो इस बार भी साथ ही आना चाहिए।”

पंडित जी पूछते हैं - “शुभाशीष को तो जानते ही होंगे न?”

“कौन? जो बुलेट बाइक लेकर आता है वो?”

“हां, वही।”

“क्या तुम उसको जानते हो?”

“हां, जानता तो हूँ।”

“तो हूँ, मतलब?”

“कुछ नहीं, वो.....।”

“कोई बात है तो बताओ।”

“जो स्टूडेंट्स मुझे परेशान करते हैं उनके साथ शुभाशीष का भी उठना बैठना है।”

“परेशान क्यों करते हैं?”

नवीन की मां कहती है - “कुछ नहीं, बस एक ही कॉलेज में सभी पढ़ते हैं तो इसलिए थोड़ी बहुत तो खटपट होती ही रहती है।”

पंडित जी कहते हैं - “शुभाशीष को कह दूंगा कि वह अपने दोस्तों से कहे कि नवीन को परेशान न करे।”

बस रुकती है। पंडित जी से विदा लेकर दोनों कॉलेज पहुँचते हैं। कॉलेज में रिजल्ट वाले दिन की तरह कोई उत्साह नहीं रहता है। कैम्पस में पुलिस वाले रहते हैं जो भीड़ को नियंत्रित कर रहे होते हैं और उसी के बीच से एक एंबुलेंस निकलती है। सभी जिज्ञासा की मुद्रा में एंबुलेंस को जाते हुए देखते हैं।

दूसरे विद्यार्थियों से पता चलता है कि एंबुलेंस में लेटी छात्रा प्रथम वर्ष की है और साइंस लेकर पढ़ाई कर रही थी। वह पढ़ने में बहुत अच्छी थी। परीक्षा देते समय किसी दूसरे छात्र की कॉपी उसी बेंच के नीचे पड़ी थी जिस पर बैठ कर वह परीक्षा दे रही थी। सभी प्रश्नों के उत्तर उसे आते थे। परीक्षा में वह बहुत अच्छा लिखी थी लेकिन प्रोफेसर जब पेपर लेने उनके पास पहुंचे तो उनकी नजर उस कॉपी पर पड़ी और उन्होंने यह मान कर कि राधिका चीटिंग करके लिखी है, उस कॉपी को उसके पेपर के साथ अटैच कर दिया। राधिका के बहुत कहने पर भी प्रोफेसर नहीं माने और उसका पेपर छीन लिया। बेचारी बहुत मेहनती थी। अपने पापा की मृत्यु के बाद वह स्वयं अपनी पढ़ाई का खर्च उठा रही थी। इसी पढ़ाई पर उसे पूरी उम्मीद थी। कॉलेज में प्रवेश लेते समय एडमिशन के नाम पर छात्र संगठन द्वारा उससे जो पैसा ऐंठा गया था, उस रकम को अपनी पढ़ाई के दम पर वापस पा लेगी, ऐसा सोचकर वह पढ़ाई करती थी। लेकिन जब रिजल्ट में उस पेपर में वह स्वयं को अनुत्तीर्ण पायी तो उससे रहा नहीं गया और तीसरी मंजिल से कूदकर जान दे दी।



ये सब सुनकर नवीन की मां अचंभित रह गई। वह सोच नहीं पा रही थी कि बच्चे पढ़ाई को लेकर इतना सीरियस रहते हैं और उसका बेटा भी पढ़ने में बहुत अच्छा है। वह सोच में पड़ गई। इतने में नवीन अंदर जाकर अपना रिजल्ट देख आया। आस्ट्रेस स्ट्रीम में नवीन का रिजल्ट सबसे अच्छा था और आज उसको कोई परेशान भी नहीं किया तो वह खुश था। लेकिन उसकी मां खुश नहीं थी। वह सोच रही थी कि किसी भी स्टूडेंट के साथ ऐसा न हो कि उसके मेहनत का सही फल उसे न मिले।

दोनों घर लौटते हैं। सड़क पर काफी भीड़ रहती है। बस में बैठे-बैठे नवीन भविष्य की कल्पना में विचरण करने लगा। तृतीय वर्ष स्नातक की कक्षा का प्रथम दिन, प्रोफेसर द्वारा सराहना किया जाना, कक्षा का आकर्षण केंद्र बने रहना, नई किताबें, किताबों की नई दुनिया.... उफ़ क्या शानदार

समय रहेगा। नवीन की मां भी किन्हीं कल्पना में खोई रहती है। विद्यार्थियों द्वारा भविष्य की चिंता में कड़ी मेहनत करना, कठिन परीक्षा में सफल होने के लिए लगातार प्रयास करते रहना, उत्तम परिणाम की चिंता में सुध-बुध खो देना, खानपान, खेलकूद, मनोरंजन सब कुछ त्याग कर पढ़ाई करना, माता-पिता के सपनों को साकार करने का दबाव, कहीं अभिभावक का पैसा डूब न जाए इसकी चिंता.... इत्यादि इत्यादि। फिर एकाएक परीक्षा परिणाम घोषित होने का दिन और फिर.... नहीं नहीं..अब नहीं। ऐसा नहीं होना चाहिए। मैं ऐसा होने नहीं दूंगी और अचानक से नवीन का हाथ पकड़ कर कहती है - “बेटा! तुम ऐसा कुछ मत करना।”

नवीन अपनी काल्पनिक दुनियां से बाहर आता है और पूछता है - “क्या हुआ, क्या नहीं करना है?”

मां कहती है - “अब आगे रिजल्ट चाहे जो भी हो, चाहे कोई तुमको अपना रिजल्ट खराब करने का कितना भी दबाव बनाए, तुम अपने तरफ से बिना किसी दबाव में आए, अगली कक्षा की पढ़ाई करना।” “हां मां, मैं कहां किसी के कहने पर जाता हूं। तृतीय वर्ष के लिए मैंने अभी से कमर कस लिया है और अब कोई भी मुझे रोक नहीं सकता।”

“ठीक है लेकिन अब कुछ दोस्त भी बनाओ और अपनी दोस्ती को और मजबूत करो। जीवन में दोस्तों की बहुत जरूरत पड़ती है।”

“मनीष और रतन है न। मुझे और किसी की जरूरत नहीं है, और तुम भी तो हो न। पिताजी नहीं है फिर भी तुमने कभी मुझे ऐसा महसूस होने नहीं दिया। तो भला और किसी की क्या जरूरत।”

“इसी बात की तो चिंता है बेटा। माता-पिता, भाई-बहन के साथ जीवन में दोस्तों की बहुत अहमियत होती है। जो कुछ तुम हमसे नहीं कह सकते, वह अपने दोस्तों से शेयर कर सकते हो। पेरेंट्स बहुत कुछ जानते हैं, समझते हैं, बच्चों के लिए करते हैं, ये सब सही है लेकिन पेरेंट्स सब कुछ नहीं कर सकते न। तुम जो कुछ अपने दोस्तों से शेयर कर सकते हो, उनसे जान सकते हो और हर जरूरत के समय जहां तक दोस्त साथ देते हैं वहां तक पेरेंट्स भी साथ नहीं दे पाते। तुम अब से अगली कक्षा के लिए सिर्फ पढ़ाई नहीं करोगे, खेलने भी जाओगे, दोस्त बनाओगे, दोस्तों के साथ छोटी-छोटी यात्रा करोगे। अपनी आगामी योजनाओं के बारे चर्चा करोगे।”

“इस तरह से तो पढ़ाई का वक्त बर्बाद होगा न, और फिर अपनी रणनीति के बारे में दूसरों से चर्चा कौन करता है? वे दोनो भले ही बहुत अच्छे दोस्त हैं लेकिन उनकी सोच पूरी तरह से बदली नहीं है। अच्छा हुआ कि बाबा साहेब डॉ. अंबेडकर ने कानून बनाकर अमानवीय, असामाजिक तथा अनैतिक विचारधारा को खत्म कर दिया। समय भले ही बदला है लेकिन लोग वहीं खड़े हैं। रिजल्ट वाले दिन ये लोग मुझे परेशान ही नहीं करते, बल्कि कोटा में एडमिशन लेकर आया हुआ विद्यार्थी भी कहते हैं। इसलिए मनीष के भैया जिनसे मैं ट्यूशन लेता हूं, वे मुझसे खूब मेहनत करने के लिए कहते हैं क्योंकि उन्होंने भी कई बार ऑफिस में यह कहते हुए सुना है कि कोटे में आने वाले को कुछ नहीं भी आता है तो भी वह नौकरी कर रहा है और जो अच्छा जानकार है, अच्छा नंबर भी लाता है फिर भी उसको नौकरी नहीं मिलती।”

“अब इतना भी क्या सोचना, नवीन। तुम बेकार में इतना परेशान होते हो।”

“नहीं मां, संविधान बहुत जरूरी है। कानून के बिना लोग अत्याचार करने से रुकेंगे नहीं। कानून की कड़ाई से पालन भी जरूरी है।”

“अब तुम इस बात को तिल का ताड़ मत बनाओ। कानून और वैचारिक परिवर्तन दोनों जरूरी है।”

“ये महज बात नहीं है न मां। क्या संसार में सारी योग्यताएं किसी एक वर्ग विशेष में ही हैं, और शेष सभी बेकार ही हैं? ऐसा तो नहीं हो सकता है न। मैं बस इतना ही चाहता हूं कि जो योग्य हैं, उनको उनकी योग्यता का सम्मान मिले, चाहे वह कोई भी हो, किसी भी वर्ग-समुदाय से हो।”



“खैर जो भी हो, तुम्हें इस बहस में नहीं जाना है, अपनी पढ़ाई लगन से करो। मनमुताबिक मार्क्स न भी मिले तो भी घबराना नहीं। जितनी पढ़ाई किए हो उसके आधार पर कोई और भी काम मिल जायेगा। इसलिए कभी कोई ऐसा कदम न उठना कि हमारे पैरों तले

जमीन खिसक जाए।”

“ठीक है मां। मैं किसी से कोई बहस नहीं करूंगा। अपनी पढ़ाई ठीक से करूंगा, और तुम्हारी सारी बातें मानूंगा। अब खुश?”

हार्न की आवाज में उसकी मां की आवाज दब जाती है। बस रुक-रुक कर चलती है। भीषण गर्मी में नवीन पसीना से लथपथ हो जाता है। रास्ते की धूल और गाड़ियों के धुं से नवीन का दम घूंटता है। इन सब से तंग आकर नवीन बस की खिड़की से बाहर झांकता है। उसे मंजिल अभी भी बहुत दूर दिखाई देती है।

हिंदी का प्रचार और विकास कोई रोक नहीं सकता।

पंडित गोविंद बल्लभ पंत

डिजिटल खतरा

जैसे-जैसे तकनीक विकसित हो रही है, वैसे-वैसे खतरे में भी लगातार बढ़ावा हो रही है। 21वीं सदी में सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति ने हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। स्मार्टफोन, इंटरनेट, सोशल मीडिया और क्लाउड कंप्यूटिंग ने जीवन को सुगम और त्वरित बनाया है। परंतु, इन सभी डिजिटल विकासों के साथ-साथ एक गंभीर चुनौती भी उभर कर सामने आई है- **डिजिटल खतरा**। यह खतरे व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक और राष्ट्रीय सुरक्षा पर असर डालते हैं। यह डिजिटल खतरे अनेक प्रकार के हैं जैसे- साइबर अपराध, डेटा चोरी, ऑनलाइन धोखाधड़ी, डिजिटल अरेस्ट, डीप फेक, फेक न्यूज, हैकिंग, फिशिंग आदी। यह तकनीकी रूप से उन्नत अपराधियों द्वारा अंजाम दिए जाते हैं जिनका मकसद जानकारी चुराना, आर्थिक नुकसान पहुंचाना या अवैध लाभ अर्जित करना होता है।



श्री शिबेंद्र कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



आज के समय में ऑनलाइन बैंकिंग, यूपीआई और डिजिटल भूगतान का चलन बहुत बढ़ गया है। इसके साथ ही डिजिटल ठग भी सक्रिय हो गए हैं जो नकली वेबसाइट, लिंक और ऐप्स के माध्यम से लोगों से पैसे ठगते हैं। जब कोई व्यक्ति किसी ऐसे ऐप या वेबसाइट पर लॉगिन करता है, तो अपनी व्यक्तिगत जानकारी वहाँ दर्ज करता है परंतु कई बार यह डेटा सुरक्षित नहीं होता और हैकर्स द्वारा चोरी कर लिया जाता है। इन सभी साइबर अपराध इंटरनेट के माध्यम से किया जाता है। इंटरनेट के विस्तार ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिए अपरिचित तथा दुनिया भर के सभी लोगों से जुड़ना सुगम बना दिया है, परंतु यह प्लेटफॉर्म फेक प्रोफाइल्स, ट्रोलिंग, साइबर बुलिंग और फेक न्यूज के केंद्र बन गए हैं। फेक न्यूज के माध्यम से समाज में भ्रम फैलाया जाता है। यह डिजिटल प्लेटफॉर्म पर तीव्र गति से फैलती है और कई बार यह देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए भी खतरा बन जाती है।

इन डिजिटल खतरे से निपटने हेतु भारत सरकार ने डिजिटल सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए अनेक पहल शुरू किया है। भारत में सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) अधिनियम, 2000 के तहत साइबर अपराधों से निपटने का प्रावधान है परंतु समय के साथ सुरक्षा के नए उपाय भी किए जा रहे हैं। जिनमें इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत, भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया दल (CERT-In) संस्था का गठन किया गया है जो साइबर हमलों की निगरानी और समाधान में मदद

करती है। इसी कड़ी में गृह मंत्रालय द्वारा भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (आई4सी) की स्थापना की गई जिसका उद्देश्य साइबर अपराध से समन्वित और व्यापक रणनीति बनाना तथा कानून प्रवर्तन एजेंसियों को साइबर अपराध की रोकथाम, जांच और अभियोजन के लिए आवश्यक प्रशिक्षण, संसाधन और समर्थन प्रदान करना है। यह सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन करता है। I4C का मुख्य उद्देश्य भारत को सुरक्षित साइबर स्पेस बनाना है जहां सभी लोग सुरक्षित और निर्भय रूप से ऑनलाइन रह सकें। हाल ही में भारत ने अपनी पहली डिजिटल खतरा रिपोर्ट 2024 जारी किया है जिसका उद्देश्य देश की बैंकिंग, वित्तीय सेवाओं और बीमा क्षेत्र में साइबर सुरक्षा को मजबूत करना है। इस रिपोर्ट के अंतर्गत देश में उभरते डिजिटल खतरों पर प्रकाश डाला गया है और देश के वित्तीय बुनियादी ढाँचे की सुरक्षा के लिए रणनीतिक उपायों तथा खतरे का पता लगाने की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए रूपरेखा तैयार की गई है।



डिजिटल युग हमें अनेक सुविधाएं प्रदान करता है, परंतु इसके साथ ही अनेक खतरे भी समाहित हैं। हमें एक सतर्क, शिक्षित और उत्तरदायी डिजिटल नागरिक बनने की आवश्यकता है। डिजिटल सुरक्षा की शुरुआत शिक्षा से होती है। लोगों को यह जानकारी होनी चाहिए वे कैसे सुरक्षित रूप से इंटरनेट का प्रयोग करें, फर्जी वेबसाइट और लिंक से

कैसे बचें, और मजबूत पासवर्ड कैसे बनाएं। यह केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। देश को अपने साइबर सुरक्षा फ्रेमवर्क को सुदृढ़ करने, डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने और इन खतरों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिये सख्त सुरक्षा उपायों में निवेश तथा कुशल कार्यबल का निर्माण करके अपने नागरिकों को डिजिटल खतरों के जोखिमों से बचा सकता है और यदि हम स्वयं सजग और जागरूक रहेंगे, तो निश्चय ही इस चुनौती पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

**हम भारतीय सभी भाषाओं का करते हैं सम्मान,
पर हिंदी ही है हमारी पहचान ।**

समझ



श्री नदीश जायसवाल
लेखापरीक्षक

“केवल पहनने वाले को ही पता है कि जूता कहां चूभता है।”

यह कहावत अंग्रेजी के एक प्रसिद्ध कहावत का हिंदी रूपांतरण है जिसे हममें से प्रत्येक ने एक न एक बार अवश्य सुना है, परंतु इसके वास्तविक अर्थ को शायद हममें से कुछ ने ही गहराई से समझा है।

भगवान ने प्रत्येक इंसान को एक दूसरे से काफी भिन्न बनाया है। चाहे ये विभिन्नता रंग-रूप, सोच-विचार, गुण-अवगुण की हो या किसी विशेष बात को लेकर अपने विचारों को व्यक्त करने की या उसे समझने की हो।

दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति की एक अपनी कहानी है। कुछ अपनी कहानी में खुश और संतुष्ट होते हैं तो कुछ नाखुश व असंतुष्ट। हर व्यक्ति की अपनी पीड़ा, अपनी परेशानी है और उन परेशानियों से लड़ने के अपने तरीके होते हैं। हममें से कोई भी किसी की समस्या या संघर्ष को तब तक पूरी तरह से नहीं समझ सकता जब तक वही खुद उस स्थिति में न हो।

उदाहरण के तौर पर एक परिवार में कई सदस्य होते हैं। प्रत्येक की अपनी सोच, अपनी जिम्मेदारी, अपनी परिस्थितियाँ या अपनी व्यक्तिगत परेशानियाँ होती हैं। जैसे एक औरत की जिम्मेदारी पूरे घर को संभालना, परिवार के सदस्यों का ख्याल रखना, खाना बनाना व अनेक घरेलू कार्यों को करना होता है। उसे इन कार्यों से किसी भी दिन छुट्टी नहीं मिलती है। वह निरंतर इन कार्यों को करती है। शायद देखने वालों को उसका कार्य बहुत सुलझा व आसान लगे, पर वह अपने कार्यों का निर्वाह किन परेशानियों से गुजरते हुए करती है, यह सिर्फ वही समझ सकती है।

उसी प्रकार एक आदमी की जिम्मेदारी भी घर को संभालना व घर के सभी सदस्यों की जरूरतों को पूरा करना होता है। जिसके लिए वह घर से बाहर निकलता है व अपनी क्षमता के अनुसार कार्य ढूँढ़ता है व करता है। कोई रोज बिना थके दफ्तर जाता है, तो कोई मेहनत-मजदूरी करके अपना घर चलाता है। इस दौरान वह न जाने कितने व्यक्तिगत, मानसिक या अन्य परेशानियों से गुजरता है, परंतु अपने परिवार के लिए निरंतर अपने कार्यों को करते जाता है।

इस तरह एक औरत व आदमी मिलकर घर चलाते हैं व परिवार का पालन-पोषण करते हैं। यहाँ किसी के भी कार्य को कम समझना या आंकना गलत होगा क्योंकि किसी भी व्यक्ति के व्यक्तिगत अनुभव को पूरी तरह से तब तक नहीं समझ सकते हैं, जब तक हम खुद उस अनुभव से न गुजरे।

जब कोई कलाकार मंच पर जाकर अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करता है तो एक दर्शक के रूप में, हम उसमें बहुत सी कमियाँ निकालते हैं, परंतु जब हमें खुद उस मंच पर जाने को कह दिया जाए तो हम भी घबरा जाएंगे।

इसलिए कभी भी दूसरों के बारे में टिप्पणी करने से पहले हमें खुद को उसके स्थान पर रखकर देखना चाहिए, शायद तभी हम उसके अनुभव, परेशानी या दर्द को महसूस करने की कोशिश कर सकते हैं।

इंसानियत के नाते यह हमारा कर्तव्य होना चाहिए कि हम प्रत्येक व्यक्ति के दुःख, दर्द, परेशानी, कठिनाई, संघर्ष, अनुभव व उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों का सम्मान करें न कि उनके दर्द या कार्य को कम आँकें।

इसलिए मेरा मानना है कि यदि इस संसार का प्रत्येक व्यक्ति, एक-दूसरे का सम्मान करे, एक-दूसरे की परेशानी या समस्या को चाहे हल कर पाए या ना कर पाए, परंतु उसे समझने की पूरी कोशिश करे व उसे गंभीरता से सुने तो व्यक्ति की आधी परेशानी तो वैसे ही दूर हो जाएगी। इस तरह से अपने विचारों में परिवर्तन लाकर हम दूसरों की खुशी का भी कारण बनेंगे व अपनी जिंदगी को भी खुशहाल बनाएंगे।

भारत माता के माथे पर बिंदी का जो है स्थान ,
वहीं है हिंदी का सभी भाषाओं में स्थान ।

पहलगाम हमले का कश्मीरी जनता पर व्यापक और गहन प्रभाव



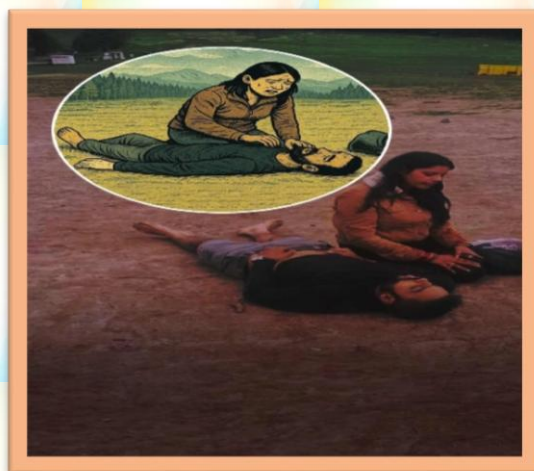
श्री आशीष कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्रस्तावना:

22 अप्रैल 2025 को जम्मू-कश्मीर के पर्यटन स्थल पहलगाम में हुआ आतंकवादी हमला न केवल मानवीय त्रासदी था, बल्कि कश्मीर की सामाजिक-राजनीतिक जटिलताओं और संवेदनशीलता को भी उजागर करता है। इस हमले ने सुरक्षा, आर्थिक, सामाजिक, मानसिक और राजनीतिक आयामों पर गहरा प्रभाव डाला है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, इस हमले में 26 नागरिक मारे गए और 20 से अधिक घायल हुए। ऐसे हमले न केवल तत्काल पीड़ितों पर असर डालते हैं, बल्कि पूरे क्षेत्र की स्थिरता और विकास को प्रभावित करते हैं।

सुरक्षा: असुरक्षा की भावना और रणनीतियों की चुनौतियाँ:

विश्व बैंक की 2023 की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि कश्मीर में पिछले 10 वर्षों में आतंकवादी घटनाओं में 35-40% की कमी आई है। फिर भी, समय-समय पर होने वाले हमलों ने स्थानीय सुरक्षा की छवि को प्रभावित किया है। पहलगाम हमले के बाद राज्य सरकार ने सुरक्षा बढ़ाने के लिए लगभग 10,000 अतिरिक्त बल तैनात किए, और सीमाओं पर चौकसी सख्त कर दी। परंतु, मानवीय अधिकारों के विशेषज्ञ कहते हैं कि "सख्त सुरक्षा उपाय जब तक स्थानीय समुदायों की भागीदारी के साथ नहीं होते, वे स्थायी समाधान नहीं ला सकते।" (Human Rights Watch, 2024) स्थानीय निवासियों का कहना है कि कर्फ्यू और आवाजाही प्रतिबंध जीवन को कठिन बनाते हैं, जिससे सरकारी नीतियों के प्रति अविश्वास बढ़ता है। इस संदर्भ में संवाद और पारदर्शिता बढ़ाना आवश्यक है।



आर्थिक प्रभाव: पर्यटन उद्योग पर गंभीर असर:

कश्मीर सरकार के पर्यटन विभाग के आंकड़ों के अनुसार, पहलगाम में सालाना औसतन 1.5 करोड़ पर्यटक आते थे, जो राज्य की कुल पर्यटन संख्या का लगभग 20% है। इस हमले के बाद एक महीने में ही पर्यटन में लगभग 60% की गिरावट दर्ज की गई। ट्रेवल एंड टूरिज्म काउंसिल ऑफ इंडिया (TTDC) की रिपोर्ट बताती है कि कश्मीर में पर्यटन उद्योग 2024 में लगभग 15% गिरावट का सामना कर चुका है, जिसके कारण लगभग 50,000 से अधिक लोग बेरोजगार हुए। स्थानीय व्यवसायी और हस्तशिल्पकार विशेष रूप से प्रभावित हुए हैं। पर्यटन क्षेत्र के विशेषज्ञ का कहना है, "सुरक्षा के साथ-साथ आर्थिक पुनर्निर्माण के लिए पर्यटकों को भरोसा दिलाना और बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर बनाना जरूरी है।"

सामाजिक समरसता: बहुलतावाद की चुनौती और अवसर:

कश्मीर में मुस्लिम, हिंदू, बौद्ध, सिख और अन्य धार्मिक समुदाय सदियों से सह-अस्तित्व में रहे हैं। लेकिन हाल की दशकों की हिंसक घटनाओं ने इन रिश्तों को तनावग्रस्त किया है। एक अध्ययन (Jammu Kashmir Studies, 2023) के अनुसार, 2022 में कश्मीर में समुदायों के बीच सामाजिक संवाद में 25% की कमी आई है। पहलगाम हमले के बाद यह दूरी और बढ़ी है। स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ता कहते हैं, "सांप्रदायिक सहिष्णुता को पुनः स्थापित करने के लिए शिक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रम और सामूहिक मेल-मिलाप की पहल आवश्यक है।" यह भी ध्यान देना होगा कि सामाजिक विघटन की जड़ केवल हिंसा नहीं, बल्कि आर्थिक और राजनीतिक अस्थिरता भी है।

मानसिक स्वास्थ्य: छुपा हुआ और अनदेखा संकट:

WHO की 2022 की रिपोर्ट के अनुसार, युद्ध प्रभावित क्षेत्रों में PTSD (पोस्ट-ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर), चिंता और अवसाद के मामले सामान्य आबादी की तुलना में 2-3 गुना अधिक होते हैं। कश्मीर में मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं लगभग 0.5 प्रति 100,000 आबादी के हिसाब से उपलब्ध हैं, जो राष्ट्रीय औसत से काफी कम है। कश्मीर यूनिवर्सिटी के मनोविज्ञान विभाग की रिपोर्ट (2024) में उल्लेख है कि पहलगाम हमले के बाद PTSD और मानसिक तनाव के मामलों में लगभग 40% की वृद्धि हुई है। हमले के बाद मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यरत संस्थाओं को सशक्त बनाना और सामाजिक कलंक को खत्म करना प्राथमिकता होनी चाहिए।

राजनीतिक प्रभाव: संवेदनशीलता, विवाद और संवाद की आवश्यकता:

2019 में जम्मू-कश्मीर के विशेष दर्जे को समाप्त करने के बाद से राजनीतिक तनाव बढ़ा है। राजनीतिक विश्लेषक रमेश शर्मा कहते हैं, "पहलगाम हमला एक बार फिर कश्मीर में राजनीतिक स्थिरता की चुनौतियों को सामने लाया है।" कश्मीरी नेताओं ने इस घटना को स्थानीय जनभागीदारी और संवाद बढ़ाने की आवश्यकता के रूप में देखा है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने भी इस हमले को भारत-पाक तनाव के संदर्भ में देखा, जिससे कश्मीर मुद्दे की वैश्विक संवेदनशीलता का पुनः आंकलन हुआ। शांति प्रक्रिया के लिए संवाद के बिना कोई स्थायी समाधान संभव नहीं, यह व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है।

मीडिया की भूमिका: संतुलित रिपोर्टिंग की जरूरत

मीडिया अक्सर कश्मीर को हिंसा के संदर्भ में चित्रित करता है। एक सर्वे (Media Watch, 2024) के अनुसार, कश्मीर संबंधी रिपोर्टिंग का लगभग 70% हिस्सा सुरक्षा और आतंकवाद पर केंद्रित है, जबकि सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं को केवल 20% कवर मिलता है। स्थानीय पत्रकार और समुदाय कहते हैं कि यह एकतरफा दृष्टिकोण कश्मीर की जटिलता को समझने में बाधक है। संतुलित, तथ्यात्मक और मानवीय दृष्टिकोण से रिपोर्टिंग से ही सही समाधान और समझ पैदा हो सकती है।

सरकारी और स्थानीय प्रतिक्रिया: विश्वास निर्माण की दिशा में कदम:

सरकार ने हमले के बाद सुरक्षा बढ़ाने के लिए कई उपाय किए, लेकिन इनमें से कुछ को जनता ने दमनकारी भी माना। स्थानीय समुदायों ने भी सुरक्षा और स्वतंत्रता के बीच संतुलन की मांग की है। विशेषज्ञ मानते हैं कि प्रशासन और जनता के बीच संवाद को बढ़ाना और जवाबदेही सुनिश्चित करना स्थिरता के लिए जरूरी है।

कश्मीरी समाज की सहानुभूति और पुनर्निर्माण की आशाएं:

पहलगाम हमले के बाद स्थानीय समुदायों और गैर-सरकारी संगठनों ने पुनर्निर्माण और शांति के लिए कदम बढ़ाए हैं। शांति और सहिष्णुता के लिए सामाजिक मेल-मिलाप कार्यक्रम बढ़ाए जा रहे हैं, जो उम्मीद जगाते हैं। यह स्पष्ट है कि स्थायी शांति के लिए सामूहिक सहानुभूति और मानवीय दृष्टिकोण जरूरी हैं।

निष्कर्ष:

पहलगाम हमला केवल एक हिंसक घटना नहीं, बल्कि कश्मीर के सुरक्षा, आर्थिक, सामाजिक, मानसिक और राजनीतिक पहलुओं की जटिलताओं का दर्पण है। विश्वसनीय आंकड़े, विशेषज्ञों के विचार और स्थानीय अनुभव यह बताते हैं कि केवल कड़ी सुरक्षा या राजनीतिक कठोरता से समाधान नहीं होगा। स्थायी शांति और विकास के लिए समावेशी नीतियां, संवाद, सामाजिक सहिष्णुता, मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान, और मीडिया की जिम्मेदार रिपोर्टिंग अनिवार्य हैं। केवल संयुक्त प्रयासों से ही कश्मीर में स्थायी स्थिरता और खुशहाली लाई जा सकती है।

पृथ्वी की पुकार

पृथ्वी अर्थात् धरती अगर इसे माँ का दर्जा दिया जाए तो कुछ ज़्यादा नहीं होगा। जिसने जीवन को जन्म देने के अनुकूल वातावरण तैयार किया, पेड़, पर्वत दिये, ग्लेशियर को अपने घर में स्थान दिया, पाँच बड़े महासागरों को अपने छाती पर स्थान दिया और सबसे ज़रूरी बात अनाज रूपी भोजन को अपने शरीर पर उगाकर सभी जीवों का पेट भरने वाली धरती माँ आज खतरे में है। लोग ऐसे अपनी माँ को लहू-लुहान करने पर उतारू हैं कि ऐसा लगता है वैज्ञानिकों द्वारा गणना की गई पृथ्वी की आयु आजकल घटने लगी है। अपने संतान रूपी जीवों की निष्ठाुरता से तंग आकर धरती माँ काल के गाल में समा जाना चाहती हैं। हम सभी को अपनी माँ अर्थात् धरती पर किए जा रहे अत्याचारों को कम करके इसे अगले पीढ़ी के लिए बचाना होगा।



श्री अमरेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

“धरती माता जो कभी हरी-भरी खुशहाल है

आज वह थकी-हारी, परेशान और काफी निराश है।”

मौसम वैज्ञानिकों और कई पर्यावरण संस्थाओं के रिपोर्ट काफी चौकाने वाले हैं। ऐसा लगता है पूरी दुनिया ने कानों में उंगली और आँखों पर पट्टी डाल ली हो। रिपोर्ट की यथावत को समझना और इसका निराकरण करना इंसानों द्वारा मुनासिब नहीं समझा जा रहा है। इन रिपोर्टों की कुछ झलकियाँ निम्नलिखित हैं।



- ❖ वैश्विक तापमान में वृद्धि- आंकड़ों के अनुसार वैश्विक तापमान में 1.2°C वृद्धि देखी गयी है और ऐसा अनुमान है 2100 तक तापमान 4°C से ज़्यादा बढ़ सकता है।
- ❖ CO_2 उत्सर्जन- 2023 में कार्बन उत्सर्जन 421 ppm था जिसने पिछले 8 लाख वर्षों का रिकॉर्ड तोड़ा है। CO_2 उत्सर्जन के मामले में चीन, अमेरिका के बाद भारत का स्थान आता है, जो एक चिंता का विषय है।
- ❖ समुद्र स्तर में लगातार वृद्धि- सन् 1900 से अब तक लगभग 20cm समुद्र स्तर की वृद्धि देखी गयी। साथ ही साथ हिमालय नदियों में पानी की कमी लगातार हो रही है। अगर इसी दर से तापमान में वृद्धि हुई तो सन् 2100 तक समुद्री स्तर में 1 मीटर तक वृद्धि हो सकती है।
- ❖ चरम मौसमी घटनाएँ:- आज पूरे विश्व में चरम मौसमी घटनाएँ हो रही हैं। कहीं अति वर्षा तो कहीं सूखा पड़ा है, जिससे पूरे विश्व में खाद्य संकट का खतरा मंडरा रहा है।

ऊपर कही गई घटनाएँ तो सिर्फ ट्रेलर है पिक्चर अभी बाकी है मेरे दोस्त:-

अमेरिका जैसे विकसित देश के लिए क्या जलवायु परिवर्तन कोई संकट नहीं है? इंसान अपने स्वार्थ के लिए इतना तक गिर सकता है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण इंडोनेशिया जैसे तटीय देश के अस्तित्व पर खतरा मँडराने लगा है। सिर्फ इंडोनेशिया ही नहीं बल्कि कई यूरोपियन तटीय राजधानियाँ

समुद्र का जल स्तर बढ़ने से समुद्र में समा जायेंगी और मनुष्य सिर्फ एक मूक दर्शक बनकर देखता रह जाएगा। विकास के नाम पर और पूरे विश्व में अपनी सर्वोच्चता को साबित करने के लिए पर्यावरण और धरती को इतने बेरहम तरह से नुकसान पहुंचाना कैसा विकास है? सतत एवं समावेशी विकास का तरीका अपनाना ही सच्चा विकास माना जा सकता है।

वो भी क्या दिन थे जब कोयल के कु-कु और गौरैया के चीं-चीं से नींद खुला करती थी और शाम में आकाश में लाखों चिड़ियाँ अपने घर लौटते देखी जाती थी। आज गौरैया, गिद्ध जैसे पक्षियों का दर्शन पाना ईद के चाँद जैसा हो गया है। इन जीवों का अस्तित्व मिटाकर मनुष्य पृथ्वी पर राज करना चाहता है। लेकिन उन्हें शायद यह नहीं पता सभी जीव खाद्य-शृंखला से बंधे हैं। खाद्य- शृंखला की एक कड़ी टूटना, पूरे जीवों का विनाश का कारण बन सकती है।



हालांकि सरकारों से उम्मीद लगाना व्यर्थ ही होगा क्योंकि जनता को पक्की सड़कें चाहिए, व्यक्तिगत गाड़ियाँ चाहिए, साल दर साल नई गाड़ियों का शौक भी बढ़ता जा रहा है। घरों में एसी चाहिए, फैक्ट्री चाहिए, सप्ताह में सात दिन अलग-अलग कपड़े चाहिए, नगरों को सजाने तथा चका-चौंध करने के लिए बिजली चाहिए, त्योहारों पर जश्न मनाने के लिए खूब सारे

पटाखे चाहिए, खाद्य संकट से निपटने के लिए खूब सारे रसायनों का प्रयोग करना चाहिए, घरों को आलीशान बनाने के लिए स्विमिंग पूल चाहिए और सबसे बड़ी बात सरकारों को सिर्फ जनता का वोट चाहिए।

हालांकि ऐसा नहीं है कि इन समस्याओं का समाधान नहीं है- जैसे पब्लिक बस का प्रयोग, एसी का कम से कम प्रयोग, पटाखों का प्रयोग न करना, रोड के किनारे वृक्षारोपण करना इत्यादि। लेकिन हम मनुष्यों की बस एक ही प्रवृत्ति है, पर्यावरण को लेकर हम ना ही सुधरेंगे और ना ही सुधारेंगे।

धरती सिर्फ मनुष्यों के बाप-दादा द्वारा दी गई जागीर नहीं है बल्कि और जीवों का उसपर उतना ही हक है जितना मनुष्यों का है। ज़रा उन मासूम जीवों के बारे में सोचिए जिनका आशियाना उजाड़ कर मनुष्य अपना आलीशान महल का निर्माण करता है और खबरें क्या चलती है? जंगली जानवर शहर में घूमता हुआ पाया गया। वह जानवर शहर में नहीं बल्कि मनुष्य उसके घर में अपना घर बना लिया है। मनुष्यों का निष्ठुर स्वभाव इन जानवरों को काल के गाल में ले जा रहा है।

अभी हैदराबाद विश्वविद्यालय के समीप स्थित 400 एकड़ वनों की कटाई काफी हृदय विदारक रहा। सरकार द्वारा मशीनरी का प्रयोग किया गया, कई जानवरों, पक्षियों का इधर-उधर दौड़ते हुए तस्वीरों ने पूरे सोशल मीडिया को हिला कर रख दिया। तब जाकर लोगों के मन में सहानुभूति की भावना जगी और भारत के माननीय सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप के बाद उसपर रोक लगा दी गई। एक वन को तैयार होने में सैकड़ों वर्ष लग जाते हैं लेकिन मनुष्य अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए कुछ दिनों में ही पूरे जंगल को नष्ट कर देता है। और उनमें पाये जाने वाले जानवर या तो मनुष्यों द्वारा मारे जाते हैं या भूखे-प्यासे मर जाते हैं।

हालांकि कुछ धार्मिक परंपराएँ भी ऐसे हैं जो जानवरों की बलि करवाने को बढ़ावा देती हैं। कई धर्म ऐसे हैं जिसमें मोर के पंख का प्रयोग बड़े पैमाने पर किया जाता है। लेकिन क्या मनुष्य कभी यह सोच पाया है कि इतने मोर के पंखों को कहाँ से लाया जा रहा है? कितनी संख्या में मोरों की जान ली जा रही है। मनुष्यों द्वारा किए जा रहे पृथ्वी पर अत्याचार से तंग आकर प्रकृति ने बदला लेना शुरू कर दिया है। हीट वेव, मुसलधार वर्षा, बादल का फटना, भू स्खलन, सुनामी, सूखा जैसी प्राकृतिक विपदाएँ अब आए दिन ही देखने को मिल रही हैं। अभी पूरा पूर्वोत्तर भारत बाढ़ के चपेट में है, सारी नदियाँ उफान पर हैं तो वहीं पूर्व भारत भीषण गर्मी के चपेट में है।

वैसे देर तो काफी हो चुकी है लेकिन फिर भी धरती को बचाने के लिए सरकारों के साथ-साथ मनुष्यों को भी कदम से कदम मिलाकर काम करना होगा ताकि हम अपने आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ-न-कुछ बचा सकें। आज पृथ्वी संकट के दौर से गुज़र रही है। प्रदूषण, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के दहन से सेहत कमजोर हो रही है। पृथ्वी हमसे कुछ नहीं मांगती, केवल संरक्षण और संवेदनशीलता की अपेक्षा रखती है।

आइए हम सब मिलकर पृथ्वी की इस पुकार को सुने, उसे बचाने का संकल्प लें। यही हम सब के लिए सच्चा पर्यावरण प्रेम और धरती माता के प्रति हमारी श्रद्धांजलि होगी।

**राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना
देश की उन्नति के लिए आवश्यक है ।**

महात्मा गांधी

आमार सोनार बांग्ला

আমার সোনার বাংলা, আমি তোমায় ভালোবাসি।

চিরদিন তোমার আকাশ, তোমার বাতাস, আমার প্রাণে বাজায় বাঁশি॥

■ कविगुरु रवींद्रनाथ टैगोर



श्री राजीव दे

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

उपरोक्त गीत "आमार सोनार बांग्ला" 1905 में नोबेल पुरस्कार विजेता और सांस्कृतिक प्रतीक रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा अंग्रेजों द्वारा बंगाल के विभाजन के विरोध में एक गीत के रूप में लिखा गया था। विभाजन का उद्देश्य हिंदुओं और मुसलमानों को विभाजित करना था, जो बंगाल में बढ़ते राष्ट्रवादी आंदोलन को कमजोर करने के लिए अंग्रेजों द्वारा एक राजनीतिक रणनीति थी।

टैगोर का गीत सिर्फ कविता से कहीं ज्यादा था - यह धर्म और राजनीति से परे जाकर लोगों को अपनी भूमि के प्रति प्रेम में एकजुट करने का एक भावनात्मक आह्वान था। "सोनार बांग्ला" वाक्यांश एक समृद्ध, सामंजस्यपूर्ण और सांस्कृतिक रूप से जीवंत बंगाल की छवि को दर्शाता है - जिसे बचाने के लिए लोग लड़ रहे थे।

जब आप बांग्ला और बंगालियों के बारे में सोचते हैं, तो आप तुरंत एक ऐसी संस्कृति के बारे में सोचते हैं जो भावनात्मक रूप से गहरी, कलात्मक रूप से समृद्ध और बौद्धिक रूप से प्रखर है। परंपरा में निहित लेकिन बदलाव के लिए खुली, बंगाली संस्कृति भारत और बांग्लादेश में सबसे विविध और रंगीन में से एक है। चाहे वह साहित्य, भोजन, संगीत त्योहारों या खेल के माध्यम से हो, बंगाली विरासत एक स्थायी छाप छोड़ती है।

बंगाली भाषा: विरासत, भावना और पहचान की आवाज़:

बंगाली भाषा या बांग्ला, सिर्फ संचार का माध्यम नहीं है। यह दुनिया की सबसे प्रभावशाली साहित्यिक परंपराओं में से एक की नींव है। टैगोर के अलावा, काजी नज़रुल इस्लाम, शरत चंद्र चट्टोपाध्याय और हुमायूं अहमद (बांग्लादेश में) जैसे समकालीन लेखक इस साहित्यिक परंपरा को जीवित रखते हैं।

बंगाली व्यंजन: स्वाद, भावनाओं और परंपरा की यात्रा

बंगाली भोजन संतुलन और गहराई पर आधारित है। बंगालियों के बीच एक कहावत है: "माछे भाते बंगाली" - जिसका अर्थ है, "Fish and Rice make a Bengali". हाँ, यह सच है। लेकिन बंगाली इससे कहीं आगे हैं। बेगुनेर भरता, आलू पोस्तो, शुक्तो से लेकर चिंगरी मलाइकारी, मटन काशा तक - बंगाली कुछ भी नहीं छोड़ते और बहुत चौकस रहते हैं। आप उनके नमकीन व्यंजनों में भी मिठास का स्वाद चखेंगे, और जब मिठाइयों की बात आती है, तो रसगुल्ला, संदेश, पायेश और मिष्ठी दोई (मीठा दही) लोगों की पसंदीदा है। बंगाली रसगुल्ला, जिसे विशेष रूप से "बांग्लार रसगुल्ला" के नाम से जाना

जाता है और "नलेन गुरेर संदेश", को भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग दिए गए हैं। जब खाने की बात आती है, तो बंगाली बहुत भावुक होते हैं, बिल्कुल गुजरातियों या पंजाबियों की तरह।

बंगाली त्यौहार: संस्कृति, समुदाय और भक्ति का उत्सव:

बंगाली लोग जीवन का जश्न बेमिसाल उत्साह के साथ मनाते हैं। बंगाल में भारत का सबसे बड़ा और सबसे प्रसिद्ध त्यौहार, दुर्गा पूजा मनाया जाता है - पूजा, कला, संगीत, भोजन और सामुदायिक बंधन के छह दिन। पंडालों (अस्थायी मंदिरों) को विस्तृत रूप से सजाया जाता है, और रात भर सांस्कृतिक कार्यक्रम चलते रहते हैं। इसे वर्ष 2021 में यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का टैग भी दिया गया था। हर साल बंगाल के हर जिले में दुर्गा पूजा के उपलक्ष्य में रैलियाँ आयोजित की जाती हैं।

जैसा कि कहा जाता है, बंगाली त्योहारों के प्रेमी होते हैं; दुर्गा पूजा के अलावा बंगाली हर समुदाय के त्योहारों को अपना त्योहार मानकर मनाते हैं। चाहे ईद हो या क्रिसमस या छठ, कोई भी त्यौहार हो, बंगाली लोग माहौल को अप्रतिम उत्साह से भर देते हैं।

संगीत और कला:

संगीत हर बंगाली के खून में है। शास्त्रीय रवींद्र संगीत से लेकर आधुनिक बांग्ला बैंड रॉक तक, इसकी रेंज बहुत बड़ी है। एकतारा और तबला जैसे वाद्यों का आमतौर पर इस्तेमाल किया जाता है, और बाउल गीतों जैसे लोकगीतों में आध्यात्मिक गहराई होती है।

दृश्य कलाएं (visual Arts) भी फल-फूल रही हैं - कोलकाता चित्रकारों, मूर्तिकारों और डिजिटल कलाकारों के लिए रचनात्मक केंद्र हैं।

सिनेमा और रंगमंच: कथाएं जो सच बोलती हैं

बंगाली सिनेमा की विरासत सम्मान की हकदार है। यह यात्रा हीरालाल सेन के साथ मूक युग (Silent Era) में शुरू हुई, जिसे सत्यजीत रे, ऋत्विक् घटक और मृणाल सेन जैसे दूरदर्शी लोगों ने आगे बढ़ाया और रितुपर्णा घोष, श्रीजीत मुखर्जी और कौशिक गांगुली के साथ शिखर पर पहुंची। सत्यजीत रे की अपू त्रयी (Apu's Trilogy) विश्व सिनेमा की आधारशिला बनी हुई है।

रंगमंच भी मजबूत स्थिति में है, विशेष रूप से कोलकाता में, जहां स्थानीय प्रस्तुतियां बौद्धिक रूप से चुनौतीपूर्ण और राजनीतिक रूप से जागरूक हैं।

बंगाल की खेल संस्कृति: जुनून, गर्व और समृद्ध विरासत

“সব খেলার সেরা বাঙালির তুমি ফুটবল”

फुटबॉल बंगालियों की जीवनरेखा है और इस खेल के साथ असीम भावना और प्रेम जुड़ा हुआ है। एशिया के सबसे पुराने फुटबॉल क्लबों में से एक, कोलकाता के मोहन बागान ने 1911 में IFA शील्ड फाइनल में ब्रिटिश ईस्ट यॉर्कशायर रेजिमेंट टीम को हराकर इतिहास रच दिया था। यह सिर्फ मैदान पर जीत नहीं थी; इसे राष्ट्रवादी जीत के रूप में देखा गया था। तब से, बंगाल फुटबॉल ने एक लंबा सफर तय किया है। यदि आप कभी भारतीय खेलों में सच्ची भावना (raw emotion) का अनुभव करने गए हैं, तो आपको कोलकाता से आगे देखने की जरूरत नहीं है। क्योंकि जब एशिया के दो सबसे प्रसिद्ध क्लब, ईस्ट बंगाल, मोहन बागान के खिलाफ भिड़ते हैं, तो शहर सिर्फ देखता नहीं है - यह सांस लेता है, खून बहाता है और अपनी टीमों के साथ संघर्ष करता है।

इसके अलावा, जब बात बंगाल की खेल संस्कृति की आती है, तो आपको क्रिकेट, "भारतीय क्रिकेट का मक्का" - ईडन गार्डन्स और "ऑफसाइड के भगवान" - महाराजा सौरव गांगुली के साथ-साथ हमारी "चकदाह एक्सप्रेस" झूलन गोस्वामी का उल्लेख करना नहीं भूलना चाहिए।

शतरंज में सूर्य शेखर गांगुली, तैराकी में बुला चौधरी, लॉन टेनिस में लिण्डर पेस आदि जैसे अन्य महान खिलाड़ी/ महिला खिलाड़ी हैं जिन्होंने बंगाल में खेल संस्कृति की विरासत को कायम रखा है।

बंगाली लोग शिक्षा, भावना और अभिव्यक्ति को महत्व देते हैं। आप आत्मनिरीक्षण, कहानी सुनाने और कलात्मक स्वतंत्रता का एक निरंतर धागा देखेंगे। चाहे वह चाय (अड्डा) पर दार्शनिक चर्चा हो या टैगोर की कविता के साथ एक शांत शाम, बंगाली संस्कृति आपको महसूस करने, सोचने और प्रतिबिंबित करने के लिए प्रोत्साहित करती है।

मैं कवि, संगीतकार और गायक श्री प्रतुल मुखोपाध्याय द्वारा लिखे गए एक गीत की 03 और पंक्ति के साथ अपनी बात समाप्त करना चाहूंगा -

আমি বাংলায় গান গাই
আমি বাংলার গান গাই
আমি আমার আমিকে চিরদিন এই বাংলায় খুঁজে পাই

**ऊंचाई के शिखर पर हिंदी को पहुंचाओ,
हिंदी की पहचान पूरी दुनिया में बनाओ।**

भारत में नदियों की भूमिका

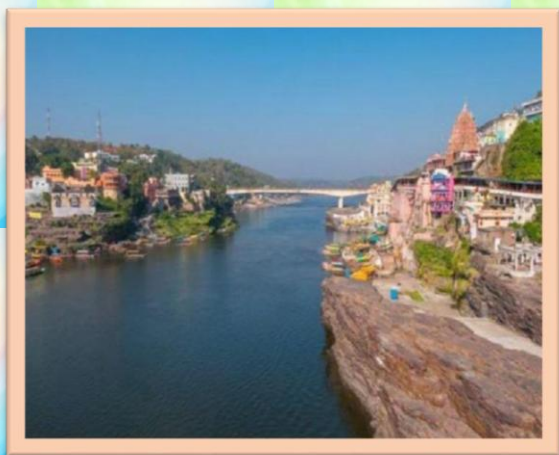
नदी, यह वह जल समूह है जिसकी उत्पत्ति कई तरीके से हो सकती है। कभी यह विशालकाय पहाड़ों-पर्वतों से गिरते हुए अपने अस्तित्व का निर्माण करती है तो कभी झीलों से, कभी बर्फ में जमे नदों (हिमनद) से तो कभी बारीश के छोटे-बड़े बूंदों के समूहों से। यह वह प्राकृतिक जलधारा है जो पृथ्वी की सतह पर एक निश्चित मार्ग में बहती है। नदियों को जीवनदायिनी कहा जाता है, क्योंकि ये न केवल मनुष्यों, बल्कि पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों और पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को पोषण प्रदान करती हैं। भारत की संस्कृति में नदियों को पवित्र माना गया है और गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी आदि नदियों को तो देवी का दर्जा भी दिया गया है। आज भी हजारों-लाखों इन नदियों के जल को पवित्र मानते हुए इनके तट पर कई धार्मिक अनुष्ठान करते हैं। नदी, प्रकृति द्वारा प्रदान किया गया एक अद्भुत देन है, जो अपने अस्तित्व से धरती पर जीवन का आधार बनती है। यह मीठे पानी की एक प्राकृतिक जल-प्रवाह होती है, जो सैकड़ों-हजारों किलोमीटर का सफर तय करते हुए समुद्र, झील अथवा किसी अन्य नदी में मिल जाती हैं। नदियाँ अपने साथ उपजाऊ मिट्टी, खनिज, जल आदि बहुमूल्य तत्वों को लेकर आती हैं, जिससे मनुष्य अपनी सभ्यता की उत्पत्ति तथा इस सभ्यता के विकास को संभव होते देख पाया है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में नदियों का विशेष महत्व है। ये नदियाँ सिंचाई, पेयजल आपूर्ति, परिवहन तथा उद्योगों के लिए जल का मुख्य स्रोत हैं। भारत में नदियों की महत्वपूर्ण भूमिका को गढ़ने के लिए इसके भौगोलिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि विशेषताओं का उल्लेख करना आवश्यक है।



श्री किशन राम
कनिष्ठ अनुवादक

इससे सभी परिचित हैं कि भारत एक विशाल और विविध भौगोलिक संरचना वाला देश है। यहाँ हिमालय से लेकर तटीय क्षेत्र और थार के मरुस्थल से लेकर दक्कन के पठार तक विभिन्न प्रकार की भौगोलिक विशेषताएँ पाई जाती हैं। इस विविध भू-आकृतिक बनावट में नदियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत की नदियाँ केवल जलधाराएँ ही नहीं हैं, बल्कि वे इस देश की प्राकृतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान की आधारशिला भी हैं। नदियाँ भारत के भौगोलिक स्वरूप को आकार देने में सहायक रही हैं। उत्तर भारत में गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, सतलुज जैसी नदियाँ हिमालय से निकलकर मैदानों में बहती हैं और विशाल एवं उपजाऊ मैदानों का निर्माण करती हैं। इन नदियों द्वारा लाए गए जलोढ़ पदार्थों से बना गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान विश्व के सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्रों में से एक है, जहाँ कृषि अत्यंत सफल होती है। यह क्षेत्र भारत की सबसे अधिक जनसंख्या वाला क्षेत्र भी है, जो नदियों के कारण ही आज कृषि, व्यापार, परिवहन और जीवन के अन्य क्षेत्रों में संपन्न है। दक्षिण भारत में गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, तुंगभद्रा, नर्मदा और ताप्ती जैसी नदियाँ बहती हैं जो प्रमुख रूप से प्रायद्वीपीय भारत की भौगोलिक बनावट को प्रभावित करती हैं। ये नदियाँ पठारी भागों से निकलकर अपने साथ लाए हुए अवसादों से तटीय मैदानों का निर्माण करती हैं। नदियाँ भारत की कृषि व्यवस्था का मूल आधार बनकर उभरी हैं। देश की लगभग 60% से अधिक कृषि योग्य भूमि वर्षा के जल पर निर्भर करती है तथा शेष भाग में नदियाँ द्वारा उपलब्ध कराए गए जल का प्रयोग सिंचाई के लिए किया जाता है। विशेष रूप से उत्तर भारत में, गंगा और उसकी सहायक नदियों की जल प्रणाली के कारण कृषि अत्यधिक उत्पादक बनी हुई है। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल जैसे राज्य सिंचाई हेतु मुख्य रूप से नदियों और उनसे निकलने वाली नहरों पर निर्भर करती हैं। इसी

प्रकार दक्षिण भारत में गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियाँ कृषि के लिए जीवनदायिनी हैं। नदियों के कारण इन क्षेत्रों में धान, गेहूँ, गन्ना, दलहन, तिलहन और कपास जैसी फसलें सफलतापूर्वक उगाई जाती हैं। जल विद्युत उत्पादन भारत में नदियों का एक अन्य भौगोलिक विशेषता है। विशेष रूप से हिमालय क्षेत्र की नदियाँ अपनी तीव्र गति और उच्च ढाल के कारण जल विद्युत उत्पादन के लिए अत्यंत उपयुक्त हैं। सतलुज, भागीरथी, अलकनंदा, रावी, चिनाब आदि नदियों पर कई बड़े बांध और जलविद्युत परियोजनाएँ स्थापित की गई हैं जिनके माध्यम से न केवल बिजली उत्पादन होता है, बल्कि बाढ़ नियंत्रण, जल संग्रहण, और सिंचाई सुविधा भी उपलब्ध होती है। इससे देश की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति होती है और औद्योगिक विकास को गति मिलती है। नदियों द्वारा जल संसाधनों का समुचित उपयोग करके ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जीवन स्तर को भी ऊंचा किया गया है।



ऐसा नहीं है कि भारत में नदियाँ केवल भौगोलिक और आर्थिक दृष्टिकोण से ही महत्वपूर्ण हैं, बल्कि उनका राजनीतिक महत्व भी अत्यंत गहन और बहुआयामी है। भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में, जहाँ विभिन्न राज्यों, भाषाओं, संस्कृतियों और जलवायु स्थितियों के बीच सामंजस्य बैठाना चुनौतीपूर्ण होता है, वहाँ नदियाँ राजनीतिक संवाद, संघर्ष और सहयोग का केंद्र बन जाती हैं। नदियाँ राज्य की सीमाओं को पार करती हुई बहती हैं और इस प्रक्रिया में जल बंटवारे,

सिंचाई, जलविद्युत उत्पादन, पर्यावरण संरक्षण, और अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति से जुड़े अनेक मुद्दों को जन्म देती हैं। भारत में राजनीतिक दृष्टिकोण से नदियों का महत्व मुख्यतः तीन स्तरों पर देखा जा सकता है - अंतर्राज्यीय संबंधों में, केंद्र और राज्य सरकारों के बीच नीति निर्धारण में, तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में, विशेषकर पड़ोसी देशों के साथ। अंतर्राज्यीय संबंधों में नदियाँ अक्सर विवाद और टकराव का कारण बनती हैं क्योंकि भारत की प्रमुख नदियाँ जैसे गंगा, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, यमुना आदि कई राज्यों से होकर गुजरती हैं, और प्रत्येक राज्य अपनी आवश्यकताओं और विकास योजनाओं के अनुसार इन नदियों के जल पर अधिकार चाहता है। इससे जल बंटवारे को लेकर विवाद उत्पन्न होते हैं। केंद्र और राज्य सरकारों के बीच भी नदियों के मुद्दे पर राजनीतिक खींचतान देखने को मिलती है। जल एक राज्य विषय है, लेकिन जब नदी एक से अधिक राज्यों से होकर बहती है, तो केंद्र सरकार की भूमिका बढ़ जाती है। विशेष रूप से बड़ी नदी परियोजनाओं में केंद्र सरकार की सहमति, निवेश और निगरानी आवश्यक होती है। भारत में नदियों का राजनीतिक महत्व केवल घरेलू राजनीति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका व्यापक असर अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति और विदेश नीति पर भी पड़ता है। भारत के कई पड़ोसी देशों के साथ नदियाँ साझा हैं, जैसे पाकिस्तान के साथ सिंधु नदी प्रणाली, बांग्लादेश के साथ गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियाँ, नेपाल और भूटान के साथ भी कई छोटी-बड़ी नदियाँ साझा हैं। इन नदियों के जल का बंटवारा, उपयोग और प्रबंधन भारत की कूटनीतिक रणनीतियों का हिस्सा बन जाता है। इस प्रकार देखा जाए तो भारत में नदियों का राजनीतिक महत्व केवल जल स्रोत या विकास परियोजना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक जटिल, बहुआयामी और संवेदनशील विषय है जो राज्य

और केंद्र, विभिन्न राज्यों, और भारत व पड़ोसी देशों के बीच सत्ता, संसाधन और अधिकार के संतुलन को दर्शाता है।

हम जानते हैं कि भारत एक प्राचीन सभ्यता वाला देश है, जिसकी संस्कृति, परंपराएँ और जीवनशैली प्रकृति के साथ गहरे रूप से संबंध रखती हैं तथा इन प्राकृतिक तत्वों में नदियों का स्थान विशेष है। भारतीय संस्कृति में नदियाँ केवल जल स्रोत नहीं हैं, बल्कि उन्हें माँ के समान माना जाता है तथा उनकी पूजा भी की जाती है। नदियाँ जीवनदायिनी हैं, और भारतीय संस्कृति तथा परंपराओं में उन्हें देवी का दर्जा प्राप्त है। गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी आदि नदियों को देवी का रूप माना जाता है। यह सम्मान केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी बहुत महत्वपूर्ण है। सांस्कृतिक रूप से नदियाँ भारत की लोककला, संगीत, साहित्य, और चित्रकला में भी व्यापक रूप से उपस्थित हैं। भारतीय भजन, लोकगीत, कविताएँ और नृत्य शैलियाँ नदियों की महिमा का गुणगान करती हैं। अनेक पर्व-त्योहार जैसे छठ पूजा, गंगा दशहरा, माघ मेला आदि नदियों से सीधे जुड़े हुए हैं, जिनमें श्रद्धालु सूर्य को अर्घ्य देते हुए नदी के जल में खड़े होकर पूजा करते हैं। भारत की नदियाँ सामाजिक समरसता और सामुदायिक जीवन का प्रतीक भी हैं। गाँवों और कस्बों में नदियाँ मेल-जोल, धार्मिक आयोजनों और उत्सवों का केंद्र होती हैं। विवाह, उपनयन, श्राद्ध जैसे संस्कारों में नदी के जल का प्रयोग किया जाता है। 'तीर्थ यात्रा' का मुख्य उद्देश्य भी पवित्र नदियों में स्नान कर आत्मशुद्धि करना है। इस प्रकार, भारत में नदियाँ केवल जीवनदायिनी जल धाराएँ नहीं हैं, बल्कि वे संस्कृति की वाहक, धार्मिक आस्था की प्रतीक, और सामूहिक चेतना का आधार हैं। नदियों का यह सांस्कृतिक महत्व आज भी जनमानस में गहराई से समाया हुआ है और भारत की पारंपरिक जीवनशैली को निरंतर प्रभावित करता है।

भारत जैसे कृषि प्रधान और विकासशील देश के लिए नदियाँ केवल जल स्रोत नहीं, बल्कि आर्थिक जीवन रेखा हैं। नदियाँ भारतीय अर्थव्यवस्था के अनेक क्षेत्रों को प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से प्रभावित करती हैं, जिनमें कृषि, उद्योग, ऊर्जा, मत्स्य पालन, परिवहन, पर्यटन, और रोजगार शामिल हैं। भारत में अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और उनकी आजीविका का मुख्य साधन कृषि है, जो पूरी तरह वर्षा और नदियों के जल पर निर्भर करती है। इस कारण से नदियों का



आर्थिक महत्व अत्यधिक गहरा और सर्वव्यापी है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक, भारत की नदियाँ आर्थिक प्रगति, संसाधन उपयोग, और मानव सभ्यता के विस्तार का आधार रही हैं। भारत की लगभग 60% कृषि भूमि सिंचाई के लिए नदियों पर निर्भर है। गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी

और कृष्णा जैसी प्रमुख नदियाँ अपने-अपने घाटी क्षेत्रों में उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी का निर्माण करती हैं, जो फसलों की उपज बढ़ाने में सहायक होती है। नदियाँ उद्योगों के लिए आवश्यक जल की आपूर्ति

करती हैं। नदियों से मिलने वाले जल का उपयोग शीतलन, धुलाई, प्रक्रिया निर्माण आदि कार्यों में किया जाता है। इससे न केवल उत्पादन में वृद्धि होती है, बल्कि हजारों लोगों को रोजगार भी प्राप्त होता है। भारत में नदियाँ मत्स्य पालन का प्रमुख आधार हैं। नदी जल में पाई जाने वाली अनेक प्रकार की मछलियाँ जैसे रोहू, कतला, मृगल आदि व्यावसायिक दृष्टि से अत्यंत लाभकारी हैं। लाखों मछुआरों की आजीविका नदियों से होने वाले मत्स्य उत्पादन पर निर्भर है। गंगा, ब्रह्मपुत्र, गोदावरी और महानदी जैसी नदियाँ मछलियों के प्रजनन और पोषण का उत्तम माध्यम हैं। राज्य सरकारों द्वारा इन क्षेत्रों में मत्स्य पालन को प्रोत्साहित करने के लिए योजनाएँ चलाई जाती हैं, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होती है और रोजगार के अवसर का सृजन होता है। हम अवगत ही हैं कि प्राचीन काल में भारत की नदियाँ आंतरिक व्यापार और परिवहन का प्रमुख साधन थीं। वर्तमान में भारत सरकार नदियों को फिर से जल परिवहन मार्ग के रूप में विकसित करने का प्रयास कर रही है, जो कि भारत की अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ करने की ओर उठाया गया एक उत्तम कदम है। राष्ट्रीय जलमार्ग परियोजना के अंतर्गत गंगा को हल्दिया से वाराणसी तक जलमार्ग के रूप में विकसित किया गया है। यह परियोजना न केवल माल ढुलाई की लागत को घटाएगी, बल्कि सड़क और रेल मार्गों पर दबाव भी कम करेगी। ब्रह्मपुत्र नदी को भी जल परिवहन के लिए विकसित किया जा रहा है। जलमार्गों के विकास से व्यापारिक गतिविधियाँ सुलभ होंगी, और आर्थिक गतिविधियों में तीव्रता आएगी। भारत में नदियों के किनारे अनेक धार्मिक और पर्यटन स्थल स्थित हैं, जैसे वाराणसी, हरिद्वार, ऋषिकेश, प्रयागराज, उज्जैन आदि। इन स्थानों पर प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु और पर्यटक आते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बल मिलता है। होटल, गाइड सेवा, हस्तशिल्प बिक्री, परिवहन, और खाने-पीने से जुड़े छोटे-छोटे उद्योगों को इससे रोजगार मिलता है। कुंभ मेला जैसे आयोजन तो करोड़ों लोगों को आकर्षित करते हैं और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत लाभदायक होते हैं। इस प्रकार, नदियाँ पर्यटन उद्योग को सींचती हैं और राज्य सरकारों के राजस्व में योगदान करती हैं।

नदियाँ हमारे लिए सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय संरचना में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के कारण हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बनी रही है, परंतु आज नदियाँ अनेक प्रकार की गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही हैं, जो न केवल उनके अस्तित्व को खतरे में डाले हैं, बल्कि



मानव जीवन और अन्य जीवों पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल रही हैं। जल प्रदूषण सबसे पहली और प्रमुख चुनौती प्रतीत होता है। शहरीकरण और औद्योगीकरण के चलते बड़ी मात्रा में घरेलू और औद्योगिक अपशिष्ट, कूड़ा-करकट आदि बिना शोधन के सीधे नदियों में फेंके जा रहे हैं। जैसे गंगा और यमुना जैसी पवित्र नदियाँ अब प्रदूषित जलधाराओं में परिवर्तित हो रही हैं। कई तरह की सामग्री, प्लास्टिक, शवों का विसर्जन और

रसायनिक कचरे ने नदियों की स्वच्छता को अत्यधिक प्रभावित किया है। दूसरी बड़ी चुनौती अवैध रेत खनन है। नदियों के किनारों से अंधाधुंध रेत निकाली जा रही है, जिससे नदी की प्राकृतिक धारा बदल रही है, जल स्तर गिर रहा है और नदी की पारिस्थितिकी पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। इसके अलावा, जल का अत्यधिक दोहन भी चिंता का विषय है। खेती और उद्योगों के लिए अत्यधिक मात्रा

में जल खींचा जा रहा है, जिससे कई नदियाँ गर्मी के मौसम में सूखने लगती हैं। भू-जल जल पर अत्यधिक निर्भरता के कारण नदी के फिर से भर जाने की प्राकृतिक प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न हो रही है। बांधों और जल परियोजनाओं के निर्माण से भी नदियों की स्वाभाविक बहाव प्रणाली में बदलाव आया है। इससे नदियों के किनारे बसे इलाकों में बाढ़ और सूखे की स्थिति असंतुलित हो गई है। जलवायु परिवर्तन के कारण भी नदियों के प्रवाह में अप्रत्याशित बदलाव देखने को मिल रही है। वहीं दूसरी तरफ वर्षा के पैटर्न में बदलाव के कारण हिमालयी नदियों में कभी बाढ़ तो कभी सूखे की स्थिति उत्पन्न हो रही है। इससे न केवल जल उपलब्धता प्रभावित हो रही है, बल्कि किसानों, मछुआरों और आम लोगों का जीवन भी प्रभावित हो रहा है। नदियों के किनारे अतिक्रमण और वनों की कटाई भी नदियों के लिए घातक सिद्ध हो रही है। इससे न केवल नदियों का प्राकृतिक क्षेत्र सिकुड़ रहा है, बल्कि मिट्टी का कटाव और बाढ़ की घटनाएँ भी बढ़ती जा रही हैं। प्रशासनिक लापरवाही और जनचेतना की कमी भी एक बड़ी चुनौती है। अनेक योजनाएँ और परियोजनाएँ केवल कागजों में सीमित रह जाती हैं, जबकि ज़मीनी स्तर पर नदियों की स्थिति में कोई सुधार नहीं होता। लोगों में जागरूकता की कमी के कारण भी नदियाँ निरंतर प्रदूषित होती जा रही हैं। यदि यही स्थिति बनी रही, तो वह दिन दूर नहीं जब भारत की अनेक नदियाँ केवल इतिहास का हिस्सा बनकर रह जाएँगी। अतः यह आवश्यक है कि हम नदियों की सुरक्षा को केवल सरकारी जिम्मेदारी न मानकर हम इसे अपना दायित्व समझें। हमें जल का विवेकपूर्ण उपयोग, अपशिष्ट प्रबंधन, वृक्षारोपण और जनजागरूकता के माध्यम से नदियों की रक्षा करनी होगी। तभी हम आने वाली पीढ़ियों को समृद्ध और स्वच्छ जल का भविष्य दे सकेंगे।

भारत की नदियाँ केवल जल की धाराएँ नहीं हैं, बल्कि वे सभ्यता का विकास करती हैं, संस्कृति को जन्म देती हैं तथा अर्थव्यवस्था एवं पर्यावरण का आधार भी बनती हैं। ये नदियाँ हमेशा से ही मानव जीवन की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आई हैं। सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर आधुनिक भारत तक, नदियों ने कृषि, उद्योग, धर्म तथा सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक जीवन को आकार दिया है। अर्थव्यवस्था की रीढ़ मानी जाने वाली भारत की नदियाँ कृषि, उद्योग, ऊर्जा, परिवहन, पर्यटन और रोजगार जैसे विविध क्षेत्रों में योगदान देकर देश की आर्थिक नींव को मजबूत करती हैं। बदलते समय के साथ-साथ यदि नदियों का संरक्षण, प्रबंधन और विकास सुनिश्चित किया जाए, तो वे आने वाले समय में भी भारत के आर्थिक उत्थान का आधार बनी रहेंगी। अतः नदियों को केवल एक भौगोलिक संरचना न मानकर उन्हें राष्ट्र की आर्थिक धरोहर के रूप में देखना आवश्यक है। नदियाँ भारत के सामाजिक जीवन की आत्मा हैं। वे न केवल जल प्रदान करती हैं, बल्कि सांस्कृतिक, धार्मिक, पर्यावरणीय और मानवीय मूल्यों को जोड़ने का कार्य करती हैं। नदियों ने भारत को सामाजिक रूप से एकसूत्र में पिरोने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारतीय समाज की विविधता को एकता में बदलने वाली यह नदी सभ्यता आज भी प्रासंगिक है और भविष्य में भी रहेगी, यदि हम उन्हें सहेजकर रखें। नदियों का सामाजिक महत्व यह संदेश देता है कि जल केवल जीवन नहीं, समाज का आधार भी है।

ये दोस्ती



श्री चन्दन बनर्जी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हम में से जो लोग फिल्म देखने के शौकीन हैं, वो जरूर इस सिक्के को पहचानते होंगे। मशहूर फिल्म निर्देशक रमेश सिप्पी जी के हिन्दी फिचर फिल्म- 'शोले' में हम कई बार इस सिक्के को दो दोस्तों के बीच निर्णय लेने के समय उछालते हुए देखते हैं।

फिल्म में देखा जाता है कि दोनों में से एक ही दोस्त हमेशा से टॉस जीतता है और निर्णय लेता है। उसके पीछे छिपा कारण हमें बाद में पता चलता

इस लेख के शुरुआत में फिल्म शोले की दोस्ती की उपमा देना बहुत जरूरी था। 'दोस्त' या 'यार' जिंदगी का एक ऐसा रिश्ता है, जिसके बिना जिंदगी 'नमक बिना सब्जी' हो जाती है। इनके होने से ही जीवन खुशियों से भर उठता है। यह एक ऐसा बंधन है, जिसमें प्यार, विश्वास और आपसी समझ का एक मशहूर कॉकटेल होता है। परिवार और रिश्तेदारों के बाद अगर कोई हमारे जीवन में सबसे खास जगह रखता है, तो वो हैं हमारे दोस्त। एक सच्चा दोस्त ही है जो हमारे खुशियों में साथ देता है और मुश्किलों में सहारा देता है। बढ़ती उम्र के साथ नजदीकी रिश्तेदारों से ज्यादा दोस्तों से हमारा नाता जाने-अनजाने में बढ़ जाता है। केवल एकसाथ मजेदार पल बिताने का नाम दोस्ती नहीं है, बल्कि आनेवाले जिंदगी के जीवन के उतार-चढ़ाव और मुश्किल समय में हमारे साथ खड़ा होने वाला दोस्त ही है। जीवन के सफर में दिल के करीबी एक-दो दोस्त मिलना 'करोड़ों की लॉटरी' मिलने से बहुगुणा बेहतर साबित होता है।

दोस्ती का अर्थ:

बड़े होते-होते हमें कई सारे दोस्त मिलते हैं, जिनमें से केवल गिने-चुने ही आखिर तक रह जाते हैं। जिंदगी के अनुभव बढ़ने के साथ-साथ दोस्ती की परिभाषा भी बदल जाती है। स्कूल जीवन के समय ज्यादातर दोस्त हमें स्कूल के कक्षा में या फिर खेल के मैदान में मिलते हैं। उस उम्र में दोस्तों के साथ एकसाथ लिखने-पढ़ने, खेलने-कूदने और लड़ने-झगड़ने से हमारे अंदर प्रतियोगिता-संबंधित चिंतन का विकास होता है, जो हमें आगे

है। फिल्म के अंत में एक दोस्त इस सिक्के का इस्तेमाल करके स्वयं की बलि चढ़ा कर दूसरे दोस्त को बचाता है।



की जिंदगी के समस्याओं और उलझनों से भरी प्रतिकूल परिस्थिति में शांत से तैर के आगे जाने के लिए तैयार करते हैं। जब हम अकेले या उदास होते हैं, तो एक अच्छा दोस्त हमें हिम्मत देता है और हमारी परेशानियों को हल करने में मदद करता है। इसमें आपस में निःस्वार्थ प्रेम, ईमानदारी और सम्मान बहुत जरूरी होता है।

शुरुआती जीवन की दोस्ती:

जीवन में पहले दोस्त हमें स्कूल में मिलते हैं, इनका विशेष महत्व होता है। यह वह समय होता है जब हम पहली बार परिवार-परिजन के जान-पहचान की दुनिया से बाहर के किसी को अपने दिल में स्थान देते हुए दोस्त बनाते हैं और उनके साथ खेलने, सीखने और खुशियां बांटने का आनंद लेते हैं। अच्छे दोस्त हमें स्कूल की पढ़ाई में मदद के साथ-साथ हमें अच्छे संस्कार भी सिखाते हैं। समय के साथ-साथ स्कूलजीवन के मित्र पीछे छुट जाते हैं और हम कॉलेज और यूनिवर्सिटी में नए- नए दोस्त बनाते हैं। परंतु हर एक दोस्त हमारे लिए अनमोल होते हैं क्योंकि सभी जरूरत के समय के साथ-साथ बदलते रहते हैं। वे हमारी बिना कहे बातों को समझते हैं और हमें उस समस्या से आगे जाने में मदद करते हैं। मित्रता में विश्वास और समर्थन का अद्भुत नाता होता है, जो समय के साथ और भी मजबूत होते दिखता है।

ऑफिस जीवन और दोस्ती:

स्कूल, कॉलेज, युनिवर्सिटी शिक्षा के बाद हम अपने-अपने रोज़गार के रास्ते पकड़ लेते हैं और अपने-अपने जिंदगी में व्यस्त हो जाते हैं। अपने-अपने कर्म-क्षेत्र में हमारी और लोगों से दोस्ती होती है और देखा गया है कि यह दोस्ती सबसे लंबी चलती है। कर्म-क्षेत्र से अवसर लेने के बाद भी ये चलती रहती है। इस समयकाल में ही हम सांसारिक जीवन में प्रवेश करते हैं। अपने जीवनसाथी के साथ का रिश्ता भी एक प्रकार की दोस्ती ही है। इस समय हम अपने-अपने जीवन के छोटे-बड़े सभी घटना से लेकर पैसों के मामले तक का निर्णय भी नजदीकी दोस्तों से बातचीत करके ही लेते हैं। फुर्सत मिलते ही या फिर समय निकाल कर हम में से कोई-कोई स्कूल-कॉलेज के दोस्तों से भी ताल्लुक रखते दिखाई देते हैं। दोस्त, चाहे वो स्कूल-जीवन के हो या फिर ऑफिस-जीवन के, होते हैं तो सब दिल के करीब ही। दोस्तों के बीच रूठना-मनाना चलता रहता है और इसका होना ही स्वस्थ संपर्क की पहचान है।

दोस्ती के बारे में कुछ रोचक तथ्य:

अच्छे दोस्त रहने से इंसान का मानसिक तनाव कम होता है, दिल की बीमारियों का खतरा, जो आजकल की सब से चर्चित और वास्तविक समस्या है, भी कम होता है और जीवन और लंबा हो सकता है।

दोस्तों के साथ अच्छा समय बिताने से शरीर में एंडोर्फिन नाम का एक हार्मोन रिलीज होता है, जो दूसरे किस्म के दर्द(ऑक्सीटोसिन)के एहसास को बेहद कम कर देती है।

सोशल मीडिया के जरिए बनाई गयी कुछ दोस्ती लंबे समय तक चलती है, ऐसा देखा गया है, पर इसमें ठगे जाने की भी बहुत संभावना रहती है।

एक रिसर्च में पाया गया है कि जुड़वां बच्चे माँ के गर्भ में ही दोस्ती करना शुरू कर देते हैं ।

उपसंहार:

भारत पुराण का देश है और हमें महाभारत में भी श्रीकृष्ण और सुदामा जैसे गहरी दोस्ती देखने को मिलती है। देखा जाए तो हर एक रिश्ते में दोस्ती छुपी होती है। बाप-बेटे के बीच भी एक समय के बाद दोस्ती होते दिखती है। दोस्ती में अलग-अलग परत होती है और उसे सब को मानकर चलना चाहिए। दोस्त ही हैं जो हमारे अंदर में छिपी बचपन को बाहर निकाल कर जीवन में रंग लाते हैं और उस रंग से हमें ऊर्जा मिलती है।

अच्छे मित्रों का हमारे जीवन में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यदि आपके पास ऐसे मित्र हैं, जो उदार हों, मददगार हों और प्रेरणादायक हों, तो यह सब गुण धीरे-धीरे आपके अंदर जरूर विकसित होते हैं। दुनिया में सबको ऐसे ही आदर्श दोस्त की तलाश है, जो उसे प्रोत्साहित करे और उसे श्रेष्ठता

की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करे। भाग्यवान को ऐसा दोस्त मिल भी जाता है। हमें भी कोशिश करना चाहिए की हम से मिल कर किसी और की तलाश पूरी हो जाए।

जिस फिल्म के दोस्ती का उपमा के साथ इस लेख की शुरुवात हुई थी, उस 'शोले' फिल्म का ही एक मशहूर गाने के कुछ शब्दों के साथ इसको अंत करते हैं:

...ये दोस्ती, हम नहीं तोड़ेंगे,
तोड़ेंगे दम मगर, तेरा साथ ना छोड़ेंगे...
मेरी जीत, तेरी जीत
तेरी हार, मेरी हार, सुन ऐ मेरे यार...
तेरा ग़म, मेरा ग़म
मेरी जान, तेरी जान, ऐसा अपना प्यार...
ज़ान पे भी खेलेंगे, तेरे लिये ले लेंगे सबसे दुश्मनी.....

लोकतंत्र

“लोगों का एक-दूसरे का सर कलम करने से बेहतर है,
तर्क-वितर्क में एक-दूसरे का सर खाया जाए”।



श्री अर्जुन मण्डल
लेखापरीक्षक

उपरोक्त पंक्ति में लोकतंत्र के मूलभूत स्वरूप को तार्किक तरीके से संचालित करने पर बल दिया जा रहा है। वस्तुतः हिंसा, खून-खराबा तथा अशांतिपूर्ण माहौल के बदले विचारों, असहमतियों तथा विरोध को लोकतांत्रिक रूप दिया जाना ही लोकतंत्र की सुरक्षा में मूल अव्यय हैं। ये अव्यय ही लोकतंत्र को सशक्त, स्थायी तथा दीर्घकालिक बनाते हैं।

लोकतंत्र में असहमति को निम्नलिखित प्रसंगों के माध्यम से समझा जा सकता है- प्रथम, पश्चिमी अफ्रीकी देश नाइजर में जनता महंगाई, भ्रष्टाचार तथा गरीबी त्रस्त थी तथा सरकार उनकी मांगों पर ध्यान देने के बजाये उनका दमन करती रही। फलतः हाल ही में वहाँ तख्तापलट की घटना हुई, जिसमें जनता की मूक सहमति है। द्वितीय, फ्रांस में महंगाई तथा ईंधन में बढ़ते दामों के परिप्रेक्ष्य में आंदोलन हुए तथा फ्रांसीसी सरकार ने आंदोलनकारियों से बातचीत कर उनकी मांगों पर कार्य किया। परिणामतः लोकतंत्र का समर्थन सशक्त हुआ।

कहा भी जाता है कि- “लोकतंत्र का विरोध अगर लोकतांत्रिक पद्धति से हो तो लोकतंत्र सशक्त होता है”। साथ ही लोकतांत्रिक पद्धति की प्रकृति को लेकर कहा गया है कि- “Democracy is not an easy form of government, because it is never final” अर्थात् यह पूर्णता को प्राप्त नहीं है, जिसके कारण इसमें तार्किक सुधार की असीम संभावना है।



हालिया वी-डेम (V- Dem) रिपोर्ट के अनुसार दक्षिण एशियाई देशों में लोकतंत्र के सूचकांक में 50 वर्षों की गिरावट तथा पश्चिमी-अफ्रीकी देशों में तीव्रतम गिरावट दर्ज की गई है। यह रिपोर्ट चिंताजनक तस्वीर प्रस्तुत करती है।

अब प्रश्न उठता है कि लोकतंत्र क्या है? इसके अव्यय कौन-कौन हैं? यह किन-किन स्तरों पर विद्यमान हैं? इसमें असहमतियों का कितना स्थान है? इसपर असहमतियों का क्या-क्या प्रभाव पड़ता है तथा क्या यह सिर्फ राजनीतिक संस्था तक ही सीमित है? आदि।

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर के आलोक में हम पाते हैं कि लोकतंत्र अब्राहम लिंकन के शब्दों में - “of the people, by the people and for the people” का संकल्प है। दूसरे शब्दों में लोकतंत्र लोगों के बीच का एक सहमति पत्र है, जिसमें सभी के हितों को वरीयता दी जाती है। परंतु बदलते समय के साथ इसके अव्ययों में परिवर्तन शाश्वत नियम है, कहा भी गया है-

“मुंडे-मुंडे मति भिन्नाः”

अर्थात् जितने व्यक्ति, उतने विचार। इन विचारों को उचित स्थान व दिशा देकर ही समाज में तार्किक तथा लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना की जा सकती है। यूरोपीय पुनर्जागरण के परिप्रेक्ष्य में असहमतियों को लेकर कहा गया है कि- 'यह सत्य है कि नए विचार समाज में सक्षम मात्र में आते हैं, परंतु जो समाज उन्हें उचित स्थान देता है वह ही प्रगति को प्राप्त होता है'।

अर्थात् यह समाज के सभी स्तरों पर विद्यमान है तथा असहमतियाँ ही इसे जीवंतता प्रदान करती हैं। लोकतंत्र में असहमति को रेखांकित करते हुए भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने इसे लोकतंत्र का वाल्व कहा है। जिस प्रकार से समुद्र मंथन से नवतन्त्रों की प्राप्ति हुई, ठीक वैसे ही विचारों के मंथन तथा तर्क-वितर्क से नवीन मार्ग को प्राप्त किया जाता है। उदाहरण स्वरूप-भारतीय समाज के तत्कालीन असहमतियों को स्थान नहीं दिया गया होता तो सती-प्रथा, बाल-विवाह, बहू विवाह तथा विधवा पुनर्विवाह निषेध जैसे कुरीतियाँ भारतीय समाज से खत्म न होती।

असहमति का लोकतंत्र में होने का अन्य पक्ष यह है कि असहमति का समय-समय पर उदार होते रहना क्रांति को घटित होने से रोकने की गारंटी है तथा यह विदित है कि लोकतंत्र का गला घोट सकती है। जैसे-नेपोलियन का क्रान्ति पुत्र होते हुए भी लोकतंत्र का गला घोटना। इन संदर्भों से इतर लोकतंत्र में असहमति का होना अल्पसंख्यकों की सुरक्षा, शोषित व वंचितों का संवर्धन एवं LGBTQI के अधिकारों की रक्षा का स्तर सशक्त करता है। अतः इस दृष्टिकोण से असहमति आवश्यक प्रतीत होती है। चाहे समाज हो या राजनीतिक संस्था।

हालांकि कई असहमतियाँ लोकतंत्र के लिए खतरा भी साबित होती हैं। सरकार द्वारा किए जा रहे सुधारात्मक कदमों का विरोध होता है। यह विरोध प्रगतिशीलता के विरुद्ध में किया जाता है। जैसे-यूरोपीय देशों में गर्भपात कानून का विरोध। यह विरोध राजनीतिक पूर्वाग्रह, सामाजिक, रूढ़िवादिता, धार्मिक मान्यता जैसे पुरातन सोच के आधार पर किया जाता है। अंततः लोकतंत्र की जड़ें कमजोर होती हैं। समाज के बड़े समूह की मांग व असहमतियों को गुस्ताव ले बॉन की पुस्तक - "The Crowd" के आलोक में समझा जा सकता है - "भीड़ का विवेक व्यक्ति विशेष के विवेक से निम्नतर होता है"।

असहमतियों का दो आधार हो सकता है। प्रथम, प्रत्यक्ष तौर पर जनता के द्वारा तथा दूसरा, अप्रत्यक्ष तौर पर जन प्रतिनिधि या दलों के द्वारा। जहाँ प्रथम प्रकार की असहमति सरकार को जवाबदेह बनाती है वहीं दूसरी, सरकार तथा संस्था को विकल्प के रूप में। वाजपेयी का कथन- "जहाँ विरोध व विरोधियों को गद्दार मानने का भाव है, वहाँ लोकतंत्र समाप्त व तानाशाही का उदय होता है"। अर्थात् अनियंत्रित लोकतंत्र तानाशाही का बीज है।



निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि लोकतंत्र में असहमतियों का होना ज़रूरी है परंतु रचनात्मक स्वरूप में, ना कि विनाशात्मक स्वरूप में। जहाँ रचनात्मक स्वरूप की असहमतियाँ वैकल्पिक रास्ता बनाती हैं तथा दोषों का निवारण करती हैं, वहीं विनाशात्मक असहमतियाँ परिवर्तन को आतुर होती हैं। भारतीय संविधान भी अनुच्छेद 19 को व्यापकता प्रदान करते हुए असहमतियों को लोकतांत्रिक पद्धति से स्थापित करती है क्योंकि यह सत्य है कि-

“विरोध लोकतंत्र का आधार है,

चाहे संसद हो या सड़क”।

दरअसल लोकतंत्र में असहमति का होना एक नैसर्गिक तथा तार्किक प्रक्रिया है और यह प्रक्रिया लोकतंत्र की कमियों को दूर करके स्वस्थ-लोकतंत्र को स्थापित करती है। भले ही असहमतियाँ तात्कालिक तथा कालांतर के परिप्रेक्ष्य में वरदान साबित होती हैं। इस असहमति को ज्वालामुखी या भूकंप के स्वरूप के छोटे-छोटे पीड़ित ऊर्जा विमुक्त कर तबाही से बचाती है। वैसे ही ये असहमतियाँ असंतोष को विमुक्त कर लोकतंत्र को स्थापित करने में मदद करती हैं।

इन असहमतियों को अल्लाया इकबाल के शब्द में समझा जाना ज़्यादा तार्किक प्रतीत होता है-

“जम्हूरियत इक तर्ज़-ए-हुकूमत है कि जिसमें बंदों को गिना करते हैं, तौला नहीं करते”।

**सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि
आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती है:**

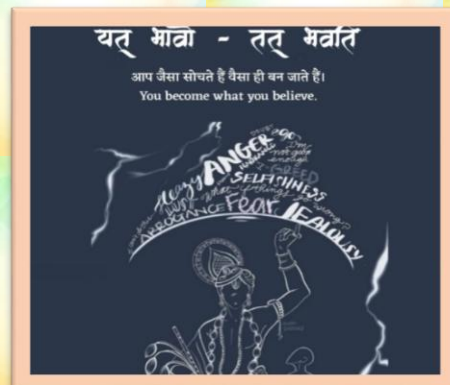
जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

जैसी धारणा वैसी सोच: सकारात्मक सोच और संस्कार का महत्व



सुश्री अस्मिता तिवारी
लेखापरीक्षक

11 से। आंतरिक अशांति का सामना करने वाले व्यक्ति को सबसे सुंदर दृश्य भी निराशाजनक लग सकता है। इसी प्रकार, दूसरों के बारे में निर्णय सत्य के बजाय व्यक्ति की अपनी भावनाओं एवं विचारों को दर्शाता है।



यह विचार कई महत्वपूर्ण बातें बताता है:

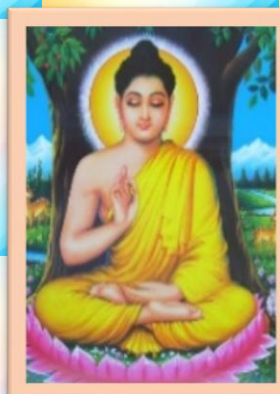
स्व-जागरूकता: यह हमें खुद को बेहतर ढंग से समझने के लिए प्रेरित करता है। अगर हम दूसरों के बारे में नकारात्मक सोचते हैं, तो यह हमें यह समझने के लिए प्रेरित कर सकता है कि हमने अपने भीतर कुछ नकारात्मक भावनाएं या विचार रखे हैं।

मान्यता: यह हमें समझने में मदद करता है कि कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे के बारे में पूरी तरह से सही धारणा नहीं रख सकता। हम हमेशा अपनी खुद की सोच और अनुभवों के माध्यम से दुनिया को देखते हैं।

संवेदनशीलता: यह हमें दूसरों के साथ अधिक संवेदनशील होने के लिए प्रेरित करता है। हमें यह समझना चाहिए कि उनकी धारणाएं उनके अपने अनुभवों और सोच से प्रभावित हो सकती हैं।

सकारात्मकता: यह हमें समझने में मदद करता है कि हम दूसरों के बारे में कैसे सोचते हैं, इसका हमारे अपने जीवन पर भी प्रभाव पड़ता है। सकारात्मक सोच हमें बेहतर महसूस करने और बेहतर संबंध बनाने में मदद करती है।

इस कथन से एक कहानी याद आती है कि महात्मा बुद्ध एक गांव से गुजर रहे थे। अचानक एक व्यक्ति महात्मा बुद्ध को गाली देने लगता है। महात्मा बुद्ध व्यक्ति के व्यवहार पर ध्यान दिए बिना आगे निकल गए। बुद्ध के साथ चल रहे उनके शिष्य को व्यक्ति के इस व्यवहार पर काफी गुस्सा आया। लेकिन बुद्ध के निष्क्रिय रहने पर शिष्य ने उत्सुकतावश उनसे पूछा- “आपने क्यों नहीं उस को दंड दिया?” महात्मा बुद्ध का जवाब था- “अगर आप किसी को भोजन देते हो और वह ग्रहण न करें तो आप उस भोजन का क्या करेंगे?” शिष्य ने कहा- “वह मेरे पास ही रह जाएगा।” तब बुद्ध ने कहा- “कि उसी प्रकार व्यक्ति द्वारा दी गई गालियां मैंने ग्रहण ही नहीं की।” इस कहानी से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति द्वारा महात्मा बुद्ध को गालियां देना बुद्ध के प्रति व्यक्ति की धारणा प्रदर्शित करता है। बुद्ध द्वारा इस पर प्रतिक्रिया देने का तरीका महात्मा बुद्ध के संस्कार को प्रदर्शित करता है।



यह कथन न सिर्फ महात्मा बुद्ध से संबंधित है बल्कि हमारी आम जन जीवन में भी हम देखते हैं कि समाज में भिन्न-भिन्न मानसिकता के लोग होते हैं। वह तरह-तरह की धारणाएँ हमारे प्रति या किसी विषय के प्रति बनाकर रखे होते हैं जो कभी हमारी चिंता का सबब बन जाता है। इसमें चिंता करना या किसी व्यक्ति के प्रति धारणा बनाना मूर्खतापूर्ण है। यह धारणा सकारात्मक या नकारात्मक कुछ भी हो सकती है जो उस व्यक्ति की सोच और संस्कार को दर्शाता है।

किसी व्यक्ति के कार्य उसकी स्वयं की जागरूकता से बहुत प्रभावित होते हैं। **आत्म-जागरूकता का चिंतन** दूसरों के प्रति व्यवहार और प्रतिक्रियाओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। दूसरे के प्रति किसी व्यक्ति के विचार किस प्रकार हैं और उसके साथ उसका व्यवहार किस प्रकार का है, यह सामान्यतः उस व्यक्ति के चरित्र, आत्म-जागरूकता और प्रामाणिकता का प्रतिबिंब होता है। अनेक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व, आदर्शों या जीवन निर्वाह के तरीकों को बदलने के प्रयास में काफी समय और ऊर्जा लगाते हैं जिसका उद्देश्य सामाजिक नियमों के अनुरूप ढलना और दूसरों की आलोचना से बचना होता है। हालाँकि, वास्तविक संतुष्टि व्यक्ति के स्वयं को अपनाने और मूल्यों एवं विश्वासों के अनुरूप कार्य करने से प्राप्त होती है।



सबसे बड़ी एक यह भी समस्या है कि दूसरे लोगों की राय को ज़्यादा महत्व देते हैं लोग। दूसरों के विचारों के बारे में निरंतर चिंतित रहना आंतरिक शांति और स्थिरता को कम करता है। जीवन चुनौतियों से परिपूर्ण है और इन चुनौतियों का सामना केवल शांत और संयम मन से ही प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। दूसरों की धारणाओं से अपनी मानसिक स्थिरता को कष्ट देना एक कमजोरी को दर्शाता है जिसका समाधान किया जा सकता है। अन्य व्यक्तियों के विचारों और राय पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, व्यक्ति को इस बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये कि वे अपने कार्यों एवं मन को कैसे नियंत्रित कर सकते हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने आप से नाखुश रहता है तो ऐसे व्यक्ति से दूर रहें। अपने आसपास पॉजिटिव सोच वाले लोगों को रखिए।

यह स्मरण करना महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी कहानी और अपना दृष्टिकोण होता है। किसी व्यक्ति की सोच उसके चरित्र एवं आकांक्षाओं को दूसरों की राय से कहीं ज़्यादा स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं। अंततः दूसरे क्या सोचते हैं और किसी व्यक्ति के प्रति उनका क्या दृष्टिकोण है, यह अप्रासंगिक है क्योंकि इसे नियंत्रित नहीं किया जा सकता है। आत्म-जागरूकता, स्वयं को निष्पक्ष रूप से देखने और गहन चिंतन करने की क्षमता महत्वपूर्ण है। व्यक्ति वह नहीं है जो उसके विचार हैं; बल्कि वह है जो उसके व्यवहार में दिखता है। वे अपने द्वारा अनुभव की जाने वाली मानसिक समझ से अलग हैं।



उदाहरण के लिये, सूर्यास्त की एक ही पेंटिंग को देखने वाले दो लोगों पर विचार कीजिये। एक व्यक्ति छवि की सकारात्मक व्याख्या कर सकता है, जबकि दूसरा, दुखी महसूस करते हुए, पेंटिंग को नीरस या अनाकर्षक मान सकता है। हालाँकि दोनों एक ही दृश्य देख रहे हैं किंतु उनकी भावनाओं व विचारों के कारण उनकी व्याख्याएँ बहुत अलग हैं। यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि धारणा किसी की भावनाओं और आंतरिक मानसिकता से कैसे प्रभावित होती है। आंतरिक अशांति का सामना करने वाले व्यक्ति को सबसे सुंदर दृश्य भी निराशाजनक लग सकता है। इसी प्रकार, दूसरों के बारे में निर्णय लेना वास्तविक सत्य के बजाय व्यक्ति की अपनी भावनाओं एवं विचारों को दर्शाता है। किसी अन्य व्यक्ति के बारे में सकारात्मक राय स्वयं के भीतर आत्मविश्वास की भावना जागृत करती है।

हालाँकि दूसरों के पास किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में पूर्व धारणाएँ हो सकती हैं किंतु यह आवश्यक नहीं कि ये धारणाएँ वास्तविक हों। व्यक्ति यह नियंत्रित नहीं कर सकता कि दूसरों का उसके प्रति क्या विचार है किंतु वह यह नियंत्रित कर सकता है कि उसकी प्रतिक्रिया किस प्रकार होगी। पॉज़िटिव सोच के साथ कार्य करने से आत्मविश्वास बढ़ता है। कठिन परिस्थितियों में, अंतर्मन का काबू करना महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जीवन की चुनौतियों का सामना करने हेतु सर्वश्रेष्ठ पथप्रदर्शक है।

भगवान कृष्ण द्वारा भगवद् गीता में दी गई शिक्षा के अनुसार, अनियंत्रित इच्छाएँ उस बुद्धि, ज्ञान और कौशल को नष्ट कर सकती हैं जिसे विकसित करने के लिये व्यक्ति ने कड़ी मेहनत की है। ये इच्छाएँ अक्सर व्यक्तियों को आवेगशील होकर कार्य करने के लिये प्रेरित करती हैं, जिससे भविष्य के लक्ष्य प्रभावित होते हैं और क्षणिक संतुष्टि प्राप्त होती है। एक स्थिर और शांतिपूर्ण जीवन जीने के लिये, आत्मसंयम होना और नकारात्मक इच्छाओं से अप्रभावित रहना महत्वपूर्ण है।



अगर हम संस्कार की बात करें तो संस्कार हमें बचपन से मिलना शुरू हो जाता है। सर्वप्रथम संस्कार हम परिवार से, उसके बाद समाज और देश से ग्रहण करते हैं। इसी संस्कार का परिणाम है कि हम भारतीय अहिंसा को संस्कार मानते हैं। गांधी जी का कथन है अगर हम आंख के बदले आंख मांगे तो पूरा विश्व अंधा हो जाएगा। इसलिए हमने भारतीय स्वतंत्रता की लड़ाई अहिंसा से जीती। अंग्रेजों ने हम भारतीयों पर जो अत्याचार किए वह उनकी सोच थी लेकिन इसकी प्रतिक्रिया में जो हमने अहिंसा की लड़ाई लड़ी यह हमारे संस्कार थे। संस्कार ही मानव आचरण की नींव होती है। जितने गहरे संस्कार होते हैं, उतना ही अधिक मनुष्य कर्तव्यपरायण होता है।

सुधार की प्रक्रिया भीतर से आरंभ होती है। आत्मसंयम को व्यवहार में लाना और अपनी सोच पर नियंत्रण हासिल करना आवश्यक है। भगवान कृष्ण की शिक्षाओं के अनुसार, बौद्धिक प्रगति और आत्मसंयम के समक्ष विद्यमान सबसे बड़ी बाधा इच्छाएँ हैं। पॉजिटिव सोच एक प्रकार की शक्ति है। इस शक्ति का प्रयोग करके हम जीवन में बड़े से बड़े युद्ध में विजय प्राप्त कर सकते हैं। पॉजिटिव थिंकिंग से हम परेशानी के सामने लड़ सकते हैं। हर एक मनुष्य के जीवन में परेशानी होती है, जो मनुष्य परेशानी के समय में अपनी सोच को काबू में रखते हैं, अंतिम समय में वही सफल हो पाते हैं। सकारात्मक सोच लोगों को स्वस्थ और खुशहाल जीवन जीने में मदद करती है। जब उनकी मानसिकता सकारात्मक होती है तो वो व्यायाम, स्वस्थ भोजन और भरपूर आराम का आनंद उठा पाते हैं। हमारे विचार ही हमारे व्यक्तित्व और जीवन को आकार देते हैं।

वास्तविकता को उसके वास्तविक रूप में स्वीकार करना ही जागरूक होने का कार्य है। - स्वामी विवेकानंद

मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ पर मेरे देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता।

आचार्य विनोबा भावे

सोशल मीडिया

सोशल मीडिया आधुनिक जीवन की एक ऐसी जादुई तकनीक है जिसके द्वारा हम और आप अपने विचारों और सूचनाओं को दूसरे लोगों के साथ साँझा कर सकते हैं। सोशल मीडिया से पहले हम एक दूसरे तक अपनी बात पहुँचाने के लिए डाक सेवा द्वारा पत्र अथवा चिट्ठी को भेजा करते थे। इसके बाद टेलीग्राफ का आविष्कार हुआ। टेलीग्राफ के बाद 1890 में टेलीफोन और 1891 में रेडियो का आविष्कार हुआ। 1940 के दशक में पहला सुपर कंप्यूटर बनने के बाद इंटरनेट का जन्म हुआ। इंटरनेट के आते ही ईमेल का आविष्कार हुआ। 1997 में पहली सोशल मीडिया साइट बनाई गई। 1999 में पहली ब्लॉगिंग साइट प्रसिद्ध हुई। सोशल मीडिया हमारे व्यक्तिगत, सामाजिक और पेशेवर जीवन के हर पहलू को गहराई से प्रभावित करता है।



सुश्री प्रिया साव
कनिष्ठ अनुवादक



धीरे-धीरे सोशल मीडिया युवाओं में और भी ज्यादा लोकप्रिय होता चला गया। 2005 में यूट्यूब का और 2006 तक फेसबुक और ट्विटर का आविष्कार हुआ। आज पूरी दुनिया में 3.8 बिलियन से भी अधिक लोग सोशल मीडिया से जुड़े हुए हैं। सोशल मीडिया एक ऐसा क्षेत्र है जो लगातार विकसित होता चला आ रहा है। इसका प्रभाव लोगों की आम जिंदगी में इतना ज्यादा हो गया है कि तरह-तरह के नए-नए ऐप हर साल टिक-टोक, स्नैपचैट, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम जैसे आते रहते हैं। लोग इसके जाल में उलझलते चले जाते हैं।

सामाजिक संजाल स्थल' (social networking sites) आज के इंटरनेट का एक अभिन्न अंग है जो दुनिया में एक अरब से अधिक लोगों द्वारा उपयोग किया जाता है। यह एक ऑनलाइन मंच है जो उपयोगकर्ता को एक सार्वजनिक प्रोफाइल बनाने एवं वेबसाइट पर अन्य उपयोगकर्ताओं के साथ सहभागिता करने की अनुमति देता है।

- प्रोफाइल का उपयोग अपने विचारों को साझा करने, पहचान के लोगों या अजनबियों से बात करने में किया जाता है। उदाहरण - फेसबुक, ट्विटर आदि इस संपूर्ण प्रक्रिया में वेबसाइट पर उपलब्ध उपयोगकर्ता की निजी सूचनाएँ भी साझा हो जाती हैं।
- यह पूरी प्रक्रिया सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित होती है, जहाँ विभिन्न प्रकार के सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है। उपयोग के बहु-विविध तरीके और तकनीकी निर्भरता ने 'सामाजिक संजाल स्थल' को विभिन्न प्रकार के खतरों के प्रति सुभेद्य किया है।

समाज पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव

- भारतीय समाज में सोशल मीडिया के कुछ सकारात्मक प्रभाव निम्नलिखित हैं:
कोविड-19 महामारी के दौरान, शिक्षा सबसे बुरी तरह प्रभावित थी। सभी छात्र परेशान थे उस वक्त सोशल मीडिया को धन्यवाद, जिसने ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से लाखों छात्रों को शिक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा सभी सहपाठियों को एक साथ एक मंच पर लाकर खड़ा कर दिया ताकि उन्हें अपने स्कूल, कॉलेज तथा शिक्षा संस्थान की कमी महसूस न हो।

- अकादमिक शिक्षा विभिन्न उपकरणों का उपयोग करके सोशल मीडिया द्वारा लोगों को प्रेषित की जाती है, जिनमें ब्लॉग, पॉडकास्ट, ई-लर्निंग, एम-लर्निंग आदि शामिल हैं जो चीजों को आसान बनाती हैं।
- दिलचस्प बात यह है कि सोशल मीडिया की शैक्षणिक भूमिका केवल अकादमिक शिक्षा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि बहुत व्यापक है और इसमें समसामयिक मामले, राजनीति, पर्यावरण आदि सहित विभिन्न विषयों के बारे में जागरूकता बढ़ाने जैसे आयाम भी शामिल हैं।
- आज सोशल मीडिया विदेश में रहने वाले परिवारों, मित्रों और रिश्तेदारों से जोड़ता है। स्कूल, कॉलेज खत्म होने के बाद जिन दोस्तों की याद धूमिल पड़ जाती है उन भूले-बिसरे दोस्तों को भी सोशल मीडिया के माध्यम से बात कर पाते हैं।
- लोग इंटरनेट कनेक्शन के साथ किसी भी समय, कहीं से भी, अपने पास उपलब्ध डिजिटल डिवाइस का उपयोग करके तुरंत जुड़ सकते हैं और पल में ही उसकी खबर पा सकते हैं।
- टेक्स्टिंग और वॉयस कॉल के अलावा, वीडियो कॉल भी संपर्क का एक प्रमुख साधन बन गया है। मैसेज के माध्यम से भी लोगों से बातचीत कर सकते हैं।
- सोशल मीडिया दुनिया भर के लोगों से जुड़ने का एक महत्वपूर्ण साधन है और इसने विश्व में संचार क्षेत्र में क्रांति ला दी है। सोशल मीडिया उन लोगों की आवाज़ बन सकता है जो समाज की मुख्य धारा से अलग हैं और जिनकी आवाज़ को दबाया जाता रहा है। वे भी अपनी बात को उन लोगों तक पहुंचा सकते हैं जो उनकी सहायता मिनिटों में कर सकते हैं।
- वर्तमान में सोशल मीडिया कई व्यवसायियों के लिये व्यवसाय का एक प्लेटफार्म बन गया है। डिजिटल मार्केटिंग से जरिए लोग अपनी व्यवसाय को दुनिया के किसी भी कोने में अपने ग्राहक को सामान भेज सकता है।
- सोशल मीडिया ने कई युवाओं को रोजगार के अवसर भी दिए हैं जो अपना जीवनोपार्जन कर सकते हैं।
- वर्तमान में आम नागरिकों के बीच जागरूकता फैलाने के लिये सोशल मीडिया का प्रयोग काफी व्यापक स्तर पर किया जा रहा है।
- कई शोधों में सामने आया है कि दुनिया भर में अधिकांश लोग रोजमर्रा की सूचनाएँ सोशल मीडिया के माध्यम से ही प्राप्त करते हैं।

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव

- कई शोध बताते हैं कि यदि कोई सोशल मीडिया का आवश्यकता से अधिक प्रयोग किया जाए तो वह हमारे मस्तिष्क को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है और हमें डिप्रेशन की ओर ले जा सकता है।
- सोशल मीडिया साइबर-बुलिंग को बढ़ावा देता है।
- यह फेक न्यूज़ और हेट स्पीच फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- सोशल मीडिया पर गोपनीयता की कमी होती है और कई बार आपका निजी डेटा चोरी होने का खतरा बना रहता है।
- साइबर अपराधों जैसे- हैकिंग और फिशिंग आदि का खतरा होता है जिसका कोई लोग शिकार बन जाते हैं।

- आजकल सोशल मीडिया के माध्यम से धोखाधड़ी का चलन भी काफी बढ़ गया है, ये लोग ऐसे सोशल मीडिया उपयोगकर्ता की तलाश करते हैं जिन्हें आसानी से फँसाया जा सकता है।
- सोशल मीडिया का अत्यधिक प्रयोग हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बड़े पैमाने पर प्रभावित कर सकता है। इसे ज्यादा इस्तेमाल से लोग गुस्सैल एवं चिड़चिड़े हो जाते हैं।
- सोशल मीडिया पर अधिक समय बिताने के कारण युवाओं को अपने परिवार व मित्रों के लिए समय नहीं मिल पता जिस कारण वे अक्सर अकेलेपन का शिकार हो जाते हैं।
- सोशल मीडिया पर दूसरों की खुशियों भरी जिंदगी देखकर कई बार युवा दूसरों से अपनी तुलना करने लगते हैं जिससे उनमें आत्मविश्वास की कमी भी अक्सर देखी जा सकती है।
- सोशल मीडिया को अधिक समय देने के कारण युवाओं का पढ़ाई या काम पर ध्यान केंद्रित करना मुश्किल हो जाता है।
- सोशल मीडिया पर कई बार लोग एक - दूसरे को परेशान करने के लिए गलत-गलत कमेंट कर देते हैं, जिससे युवाओं का मानसिक स्वास्थ्य भी बिगड़ रहा है।
- सोशल मीडिया पर देर रात तक सक्रिय रहने से युवाओं में नींद की कमी भी अक्सर देखी गई है, जिससे शरीर और दिमाग पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है।
- युवा फेसबुक और ट्विटर जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के आदी हो गए हैं, जिससे लोगों के आईक्यू और मानसिक स्वास्थ्य में गिरावट आई है।
- सोशल मीडिया पर गलत सूचनाओं को तेजी से फैलाना आसान होता है। झूठी सूचना आसानी से वायरल हो सकती है, जिससे लोगों में भ्रम और दहशत फैल सकती है।
- सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग के परिणामस्वरूप युवा अपनी कसरत या व्यायाम की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते हैं। जिसके कारण आज युवाओं में कई बीमारियाँ घर कर गई हैं।
- सोशल मीडिया ने लोगों के सामाजिक संबंधों पर भी गहरा प्रभाव डाला है। युवा अपने दोस्तों के साथ आमने-सामने कम समय बिताते हैं, इसलिये उनके सामाजिक संबंधों पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।
- सोशल मीडिया की मदद से विद्यार्थी परीक्षा में नकल करने के नए-नए तरीके अपनाते हैं जो उनके मानसिक विकास पर गलत असर डालते हैं।
- सोशल मीडिया पर लोग अपनी असली पहचान छुपाकर आम लोगों के साथ धोखाधड़ी कर सकते हैं।
- सोशल मीडिया लोगों को वास्तविक दुनिया से अलग-थलग महसूस करा सकता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि लोग ऑनलाइन दूसरों के साथ बातचीत करने में इतना समय बिताते हैं कि वे अपने वास्तविक दुनिया के रिश्तों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

दिन रात कई घंटों तक सोशल मीडिया पर सक्रीय रहने के कारण युवाओं के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। उनके दिमाग व आँखों पर दबाव पड़ता है। सोशल मीडिया का इस्तेमाल मोबाइल, कंप्यूटर, लैपटॉप कई तरह से किया जा सकता है। सोशल मीडिया द्वारा कुछ ही पलों में छोटी से छोटी व झूठी खबरों को भी आसानी भी से फैलाया जा सकता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि सोशल मीडिया एक ऐसा ताकतवर साधन है, जिसके द्वारा लोगों को विचार विमर्श करने का अवसर तो मिलता ही है साथ ही साथ किसी के लिए बुरी बातों को फैलाकर उसका जीवन भी समाप्त किया जा सकता है। सोशल मीडिया का सही उपयोग युवाओं को सही मार्ग और अधिक उन्नति की ओर ले जा सकता है। केवल युवाओं को सोशल मीडिया के सही उपयोग करने की ओर प्रेरित करना आवश्यक है। सोशल मीडिया ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार को नया आयाम दिया है, आज प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी डर के सोशल मीडिया के माध्यम से अपने विचार रख सकता है और उसे हजारों लोगों तक पहुँचा सकता है, परंतु सोशल मीडिया के दुरुपयोग ने इसे एक खतरनाक उपकरण के रूप में भी स्थापित कर दिया है तथा इसके विनियमन की आवश्यकता लगातार महसूस की जा रही है। अतः आवश्यक है कि निजता के अधिकार का उल्लंघन किये बिना सोशल मीडिया के दुरुपयोग को रोकने के लिये सभी पक्षों के साथ विचार-विमर्श कर नए विकल्पों की खोज की जाए, ताकि भविष्य में इसके संभावित दुष्प्रभावों से बचा जा सके।

हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है'।

महात्मा गांधी

हॉकी की हकीकत

हॉकी पूरे पृथ्वी में खेले जानेवाला एक प्रसिद्ध खेल है। यह भारत में एक लोकप्रिय और आकर्षक खेल है जो कई देश खेलना पसंद करते हैं। यह खेल दुनिया में विभिन्न कैंपों में खेला जाता है, हालांकि मौलिक नियम हर जगह लागू होते हैं। हॉकी खेल के कुछ नियम हैं, जैसे मैदान का आकार निश्चित होता है और यह आयताकार होता है, जो बराबर लंबाई और चौड़ाई के दो हिस्सों में विभाजित होता है। खेल का समय पूरा 60 मिनट का होता है जिसे पंद्रह-पंद्रह करके 4 हिस्सों में खेला जाता है। इसके अलावा, एक टीम में 11 खिलाड़ी होते हैं। मैच का उद्देश्य प्रतिद्वंद्वी के गोल पोस्ट में अधिक से अधिक गोल करना है, जो टीम सबसे ज्यादा गोल करती है वो जीत जाती है। हॉकी खेल में सुरक्षा के लिए हेलमेट, शोल्डर पैड और भी चीजों की आवश्यकता होती है।



श्री रौनक रॉय
लेखापरीक्षक

भारत में हॉकी का इतिहास ब्रिटिश के शासन से शुरू होता है। कलकत्ता 1885-86 में हॉकी क्लब की स्थापना करने वाला पहला शहर था। भारतीय हॉकी टीम ने 1928 के एम्स्टर्डम खेलों में अपना पहला ओलंपिक स्वर्ण पदक जीता। 1928 से 1956 तक भारत के हॉकी टीम ने लगातार छह ओलंपिक स्वर्ण पदक जीते और उसके साथ लगातार 24 मैच जीते। इस दौरान भारत ने 178 गोल किए और केवल सात गोल खाए।



भारत में हॉकी के बारे में बात करना है तो हॉकी के जादूगर ध्यान चंद के बारे में याद करना अनिवार्य हो जाता है। ध्यानचंद के पिता ब्रिटिश भारतीय सेना में थे और वह भी 16 वर्ष में सेना में शामिल हो गए। सेना में भर्ती होने के बाद वह सेना की हॉकी प्रतियोगिताएं खेला करते थे। 1928 साल की ओलिम्पिक में भाग लेने के बाद उस साल भारत ने स्वर्ण पदक जीता। ऐसे भारत के गौरव-गाथा की शुरुवात हुई। 1956 में ध्यानचंद जी ने सेना से मेजर के पद से सेवानिवृत्त हुए। 1995 से उनकी जयंती को भारत में राष्ट्रीय खेल दिवस मनाया जाता है। 29 अगस्त को 1979 को 74 वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ।

भारत में इस खेल का बहुत महत्व है क्योंकि भारत ने इसे अपना राष्ट्रीय खेल चुना। हॉकी के साथ भारत का एक गहरा बड़ा इतिहास है। भारत की हॉकी जीत ने देश को पूरे विश्व में सम्मान और मान्यता दिलाई है। भारत ने विश्व में एथलेटिक्स का प्रदर्शन किया है। अभी तक इस खेल में भारत ने कुल 08 स्वर्ण पदक जीता है। भारत के लिए खेलने वाले कुछ महान हॉकी खिलाड़ी के नाम- 1. मेजर ध्यानचंद 2. रूप सिंह 3. बलबीर सिंह सीनियर 4. उधम सिंह 5. लेस्ली क्लौडिउम 6. उजित पाल सिंह 7. केडी सिंह बाबू 8. शंकर लक्ष्मण 9. धनराज पिले आदि प्रमुख हैं। वर्तमान में

भारतीय हॉकी दल के कप्तान का नाम हरमनप्रीत सिंह है। भारतीय दल के गोलकीपर का नाम पी.आर. श्रीजेश है। 1930 एवं 1940 के दशक में भारत ने कुछ देशों को पराजित करके जैसे जर्मनी, ग्रेट ब्रिटेन, नेदरलैंड्स, बेल्जियम, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, हॉकी की दुनिया में भारत ने खुद को एक नए शक्ति के रूप में स्थापित की है।

भारत ने ओलिम्पिक में कुल 13 पदक जीते हैं जिनमें 08 स्वर्ण पदक, 02 रजत और 3 कांस्य पदक शामिल हैं। 1928 से ओलिम्पिक में भारतीय हॉकी टीम के पदक का लिस्ट-

1. स्वर्ण 1928- एम्स्टर्डैम, नेदरलैंड्स
2. स्वर्ण 1932- लॉस एंजिल्स, संयुक्त राज्य अमेरिका
3. स्वर्ण 1936 - बर्लिन, जर्मनी
4. स्वर्ण 1948- लंडन, यूनाइटेड किंगडम
5. स्वर्ण 1952- हेलसिंकी, फिनलैंड
6. स्वर्ण 1956- मेलबोर्न, ऑस्ट्रेलिया
7. रजत 1960- रोम, इटली
8. स्वर्ण 1964- टोक्यो, जापान
9. कांस्य 1968- मेक्सिको सिटी, मेक्सिको
10. कांस्य 1972- म्युनिख, जर्मनी
11. स्वर्ण 1980 - मॉस्को, सोवियत रूस
12. कांस्य 2020- टोक्यो, जापान
13. कांस्य 2024 - पेरिस, फ्रांस



बॉलीवुड की फिल्म 'गोल्ड' 1948 ग्रीष्मकालीन ओलिम्पिक में भारतीय हॉकी टीम की यात्रा पर आधारित है। अंतर्राष्ट्रीय हॉकी टीम ने पहला जो मैच खेला था वो न्यूजीलैंड के खिलाफ 1926 में, उसमें भारत 2-5 स्कोर से हारा था। भारत ने हॉकी वर्ल्ड कप पहली बार 1971 में खेला था। भारतीय हॉकी 'इंडियन हॉकी फेडरेशन' के द्वारा विनियमित होता है। इंडियन हॉकी फेडरेशन 1925 में ब्रिटिश इंडिया में स्थापित हुई थी। संप्रति "हॉकी इंडिया", भारत में फील्ड हॉकी का नया शासी निकाय है, जिसकी स्थापना 2009 में हुई थी।



हॉकी के पुरुष दल के साथ-साथ महिला दल ने भी बहुत कारनामे किए हैं। महिला दल ने 1953 में पहली बार अंतर्राष्ट्रीय मैच खेला था। भारतीय महिला दल ने 1980 में ओलिम्पिक में पहली बार योगदान किया था। उसमें 1980 और 2020 में महिला दल ने कांस्य पदक जीते हैं। कुछ खिलाड़ियों के नाम इस प्रकार हैं-

1. रानी रामपाल 2. वंदना कटारिया 3. सलीमा टेटे 4. दीप ग्रेस एक्का 5. नेहा गोयल 6. नवजीत कौर प्रमुख। महिला हॉकी टीम ने 2002 कोमनमोनवेल्थ गेम्स में स्वर्ण पदक जीता है।

हालांकि, हॉकी भारत में क्रिकेट की तुलना में कम राजस्व उत्पन्न करता है, लेकिन धीरे-धीरे यह अपना पुराना गौरव वापस पा रहा है। हॉकी ने वित्तीय वर्ष 2023 में लगभग 867 मिलियन भारतीय रुपये का योगदान दिया है, जो पिछले कुछ वर्षों की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि है।



हॉकी एक लोकप्रिय और दिलचस्प खेल है। लेकिन फिर भी भारत में इसे ज़्यादा लोकप्रियता नहीं मिली है। बहुत कम लोग हैं जो हॉकी के प्रति जुनून रखते हैं और भारतीय टीम का हिस्सा बनना चाहते हैं। भारत सरकार और राज्य सरकार को हॉकी को बढ़ावा देने के लिए ज़्यादा ध्यान देना चाहिए। इसे शारीरिक शिक्षा में शामिल किया जाना चाहिए और उचित कोचिंग प्रदान की जानी चाहिए ताकि छात्र स्कूल स्तर पर हॉकी खेलना शुरू कर सकें ताकि भारत में हॉकी की महान परंपरा जारी रहे।

ई-कचरा प्रबंधन

वर्तमान डिजिटल युग में तकनीकी उपकरणों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। मोबाइल फोन, कंप्यूटर, लैपटॉप, टीवी, प्रिंटर आदि जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों ने हमारे जीवन को आसान बना दिया है। लेकिन जब ये उपकरण पुराने या खराब हो जाते हैं, तो इन्हें फेंक दिया जाता है। इस प्रकार के फेंके गए इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को ही **ई-कचरा (E-Waste)** कहा जाता है। ई-कचरा (Electronic Waste या E-Waste) उन सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को कहा जाता है जो अब उपयोग में नहीं आते और जिन्हें फेंक दिया जाता है।



सुश्री गुंजा कुमारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

घरेलू उपयोग में मोबाइल फोन, टीवी, फ्रिज, बैटरी, माइक्रोवेव आदि का अधिक से अधिक उपयोग किया जाना एवं उन्हें जल्दी-जल्दी बदलना ई-कचरा का प्रमुख कारण है। कार्यालय में कम्प्यूटर, कीबोर्ड, प्रिंटर, सर्वर, और अन्य उपकरणों का अधिक से अधिक उपयोग किया जा रहा है एवं समय-समय पर बदलना भी ई-कचरा का कारण है। तेजी से बदलती तकनीक ने, नए-नए गैजेट्स की लत के कारण पुराने उपकरण बेकार समझे जाते हैं। यह एक गंभीर पर्यावरणीय और स्वास्थ्य से जुड़ी समस्या बनती



जा रही है। ई-कचरे में सीसा, पारा, कैडमियम जैसे खतरनाक रसायन होते हैं जो मिट्टी और पानी को प्रदूषित करते हैं। इन पदार्थों के संपर्क में आने से कैंसर, त्वचा रोग, सांस की समस्याएं और न्यूरोलॉजिकल बीमारियाँ हो सकती हैं। इनमें उपयोग होने वाले कीमती धातुएँ (सोना, चांदी, तांबा) भी व्यर्थ जाती हैं।

कचरे के प्रबंधन के लिये कानून वर्ष 2011 से भारत में लागू हैं, यह अनिवार्य करते हुए कि केवल अधिकृत विघटनकर्ता और पुनर्चक्रणकर्ता ही ई-कचरा एकत्र करते हैं। **ई-कचरा (प्रबंधन) नियम, 2016** एवं 2017 में अधिनियमित किया गया था। घरेलू और व्यावसायिक इकाइयों से कचरे को अलग करने, प्रसंस्करण और निपटान के लिये भारत का **पहला ई-कचरा क्लिनिक भोपाल**, मध्य प्रदेश में स्थापित किया गया है। भारत में ई-कचरे के संबंध में कई प्रावधान भी बनाए गए हैं।

- भारत में इलेक्ट्रॉनिक कचरा प्रबंधन के लिये नियमों का एक औपचारिक सेट है, पहली बार वर्ष 2016 में इन नियमों की घोषणा की और वर्ष 2018 में इसमें संशोधन किया। पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट प्रबंधन के लिये मसौदा अधिसूचना जारी किया है।
- 21 से अधिक उत्पादों को नियम के दायरे में शामिल किया गया था। इसमें कॉम्पैक्ट फ्लोरोसेंट लैंप (CFL) और अन्य पारा युक्त लैंप, साथ ही ऐसे अन्य उपकरण शामिल हैं।
- पहली बार नियमों ने उत्पादकों को लक्ष्य के साथ विस्तारित निर्माता उत्तरदायित्व (EPR) के तहत लाया। उत्पादकों को ई-कचरे के संग्रह और उसके विनिमय के लिए जिम्मेदार बनाया गया है।
- जमा वापसी योजना (Deposit Refund Scheme) को एक अतिरिक्त आर्थिक साधन के रूप में पेश किया गया है जिसमें निर्माता बिजली और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की बिक्री के समय जमा के रूप में एक अतिरिक्त राशि लेता है और इसे उपभोक्ता को ब्याज के साथ वापस करता है जब अंत में बिजली और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण वापस कर दिये जाते हैं।
- विघटन और पुनर्चक्रण कार्यों में शामिल श्रमिकों की सुरक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास सुनिश्चित करने के लिये राज्य सरकारों की भूमिका भी पेश की गई है।
- नियमों का उल्लंघन करने पर जुर्माने का भी प्रावधान किया गया है।
- शहरी स्थानीय निकायों (नगर समिति/परिषद/निगम) को सड़कों या कूड़ेदानों में बेकार पड़े उत्पादों को एकत्र करने और अधिकृत विघटनकर्ताओं या पुनर्चक्रण करने वालों को चैनलाइज़ करने का कार्य सौंपा गया है।

भारत में ई-कचरे के प्रबंधन से संबंधित चुनौतियाँ भी हैं। उपयोग किये गए इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को रीसाइक्लिंग के लिए नहीं दिये जाने का एक प्रमुख कारण यह था कि उपभोक्ता स्वयं ऐसा नहीं करते या करना चाहते हैं। हालाँकि, हाल के वर्षों में दुनिया भर के देश प्रभावी 'मरम्मत के अधिकार' (Right to Repair) कानूनों को पारित करने का प्रयास कर रहे हैं। भारत में 10-14 आयु वर्ग के लगभग 4.5 लाख बाल श्रमिक यार्डों और रीसाइक्लिंग कार्यशालाओं में पर्याप्त सुरक्षा और सुरक्षा उपायों के बिना विभिन्न ई-कचरा गतिविधियों में लगे हुए हैं। ई-कचरे में 1,000 से अधिक जहरीले पदार्थ होते हैं, जो मिट्टी और भूजल को दूषित करते हैं, जो कि स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है। विकसित देशों से 80% ई-कचरा रीसाइक्लिंग के लिये भारत, चीन, घाना और नाइजीरिया जैसे विकासशील देशों को भेजा जाता है।



असंगठित क्षेत्र के लिये ई-कचरे के निपटान के लिये कोई स्पष्ट दिशा-निर्देश नहीं है। साथ ही, ई-कचरे के निपटान के लिये औपचारिक रास्ता अपनाने हेतु लोगों को प्रोत्साहित करने के लिये किसी योजना का उल्लेख नहीं किया गया है।

ई-कचरे के निपटान और प्रबंधन में प्रारंभिक कदम उठाने की आवश्यकता है।

उपभोक्ता कम सामान खरीदें। ई-कचरे का सबसे आम स्रोत उन वस्तुओं की खरीद है, जिनकी लोगों को आवश्यकता नहीं है। ऐसे नए इलेक्ट्रॉनिक उपकरण खरीदने से बचें जिनका निर्माता पुनः उपयोग नहीं कर सकता। पुनर्चक्रण करने योग्य या लंबे समय तक चलने वाले इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों को चुनना ई-कचरा प्रबंधन की दिशा में एक स्थायी कदम है। अगर उपभोक्ता को किसी चीज की जरूरत नहीं है तो वह उसे दान कर सकता है ताकि किसी और के द्वारा उसका उपयोग किया जा सके। दान एक बेहतर कर कटौती का साधन है क्योंकि यह राशि आम तौर पर बेची जाने पर संपत्ति के मूल्य के करीब होती है। जिन इलेक्ट्रॉनिक्स सामान को रखने की जरूरत न हो उसे बेचना; नए मॉडल में तेज़ी से मूल्यहास होता है। ऐसी बहुत सी कंपनियाँ हैं जो पुराने इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को खुशी-खुशी खरीद लेती हैं। वे 'उत्पाद के बदले में पैसा' जैसी विनिमय सेवा प्रदान करने की पेशकश करते हैं। सरकार जिस ई-कचरा प्रबंधन पर काम कर रही है, उसके बारे में नियमों और विनियमों से अवगत होने की आवश्यकता है। चूंकि ई-कचरा खतरनाक नहीं है अगर इसे सुरक्षित भंडारण एवं वैज्ञानिक तरीकों से पुनर्नवीनीकरण किया जाता है।

ई-कचरा आधुनिक तकनीकी युग की एक गंभीर चुनौती है। इसे नज़रअंदाज करना भविष्य के लिए खतरनाक हो सकता है। हमें व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर जागरूकता लाकर ई-कचरे के निपटान के सही तरीकों को अपनाना होगा। यदि हम अब नहीं चेते, तो आने वाली पीढ़ियाँ इसका खामियाजा भुगतेंगी। इसीलिए, आज से ही हमें ई-कचरे के प्रबंधन की दिशा में गंभीर कदम उठाने होंगे।

*जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य
का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत
नहीं हो सकता।*

डॉ. राजेंद्र प्रसाद

शहरी जीवन की चुनौतियां



श्री राहुल चौधरी
कनिष्ठ अनुवादक

शहरी जीवन की चुनौतियों को समझने से पहले हम शहरी जीवन की कुछ महत्वपूर्ण तथ्यों को समझने की कोशिश करते हैं। कुछ समय पूर्व स्विट्ज़रलैंड के दावोस में विश्व आर्थिक मंच सम्मेलन आयोजित हुआ। इसमें यह बात उभर कर सामने आई कि शहरों के विकास को ही भारत के विकास की धुरी माना जा रहा है। यह सही भी है क्योंकि किसी भी आधुनिक और विकासशील अर्थव्यवस्था में शहरों को विकास का सबसे बड़ा वाहक माना जाता है। भारत में नवीन भारत की पहल के विचार को आगे बढ़ाने की कड़ी में शहरी बुनियादी ढाँचों में सुधार के लिये शहरीकरण के प्रति समग्र दृष्टिकोण अपनाने की प्रक्रिया अपनाई गई है। किन्तु आज के दौर में शहरीकरण तेजी से बढ़ रहा है। लोग बेहतर रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं और जीवनशैली की बेहतर उम्मीद लेकर गाँवों से शहरों की ओर आ रहे हैं। परंतु शहरी जीवन में कई तरह की चुनौतियां भी होती हैं, जो व्यक्ति और समाज दोनों के लिए समस्याएं उत्पन्न करती हैं।

वैश्वीकरण के उपरांत शहरी विकास की अवधारणा समावेशी विकास की एक अनिवार्य शर्त बन गई है। शहरी विकास की इस प्रक्रिया ने गाँवों के सामने अस्तित्व का संकट उत्पन्न कर दिया है। शहरों का अनियोजित विकास, महानगरों का असुरक्षित परिवेश एवं शहरी संस्कृति में बढ़ते जा रहे संबंधमूलक तनाव हमें यह सोचने पर विवश करते हैं कि शहरी विकास की अवधारणा पर एक बार फिर से विचार किया जाना चाहिये। विभिन्न प्रकार के प्रदूषण उत्पन्न करने में गाँवों की तुलना में शहरों की भूमिका अधिक है, तो क्या यह कहा जा सकता है कि विकास और प्रदूषण का एक-दूसरे के साथ सकारात्मक संबंध है? ऐसे में कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विचार करना जरूरी हो जाता है।



भीड़-भाड़ और समसामयिक समस्या:-आए दिन शहरों में लोगों की भारी भीड़ बढ़ती जा रही है चाहे आप बस में हो या रेल में या मेट्रो में हो जिससे ट्रैफिक जाम, प्रदूषण और समय की बर्बादी होती है। प्रत्येक शहर में यातायात एक गंभीर समस्या बन गया है क्योंकि सार्वजनिक परिवहन सेवाओं को लगभग समाप्त कर दिया गया है। शहर में रहने वाले समृद्ध लोग अपनी शक्ति और संपन्नता के

प्रदर्शन के लिये यातायात नियमों का उल्लंघन करते हैं और इससे बड़ी संख्या में सड़क हादसे होते हैं।

1. **प्रदूषण:** प्रदूषण का अर्थ है-प्राकृतिक संतुलन में दोष पैदा होना। न शुद्ध वायु मिलना, न शुद्ध जल मिलना, न शुद्ध खाद्य मिलना, न शांत वातावरण मिलना। प्रदूषण कई प्रकार का होता है ध्वनि, वायु, जल प्रदूषण शहरी जीवन की प्रमुख समस्याएं हैं। शहरों में प्रदूषण को बढ़ाने में

कल-कारखाने, लोगों द्वारा वैज्ञानिक साधनों का उपयोग करना, फ्रिज, कूलर, वातानुकूलन, ऊर्जा संयंत्र दोषी है। शहरों में निजी सुविधा के लिए वृक्षों को अंधा-धुंध काटने से मौसम का चक्र बिगड़ जाता है। शहरों में घनी आबादी के कारण वाहन, उद्योग और घरों से निकलने वाला प्रदूषण स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।

2. **स्वास्थ्य सेवाओं की कमी:** भले ही शहरों में अस्पताल हों, परन्तु अधिक भीड़ के कारण सुविधाएं सीमित हो जाती हैं। तेजी से बढ़ता हुआ शहरीकरण और शहरों की जनसंख्या में हो रही बढ़ोतरी को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के समाधान की दिशा में प्रमुख चुनौतियों के रूप में देखा जाता रहा है। अनुमान है कि 1990 और 2025 के बीच विकासशील देशों में शहरी आबादी में तीन गुना वृद्धि हो चुकी होगी और यह कुल जनसंख्या के 61 प्रतिशत के बराबर हो जाएगी। इस बढ़ती हुई शहरी आबादी को देखते हुए पानी, पर्यावरण, हिंसा और चोट, गैर संचारी रोगों जैसी स्वास्थ्य संबंधी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा, अस्वास्थ्यकर आहार, शारीरिक अकर्मण्यता और महामारियों के फैलने से जुड़ी आशंकाएँ और खतरे भी कोई कम चुनौतीपूर्ण नहीं हैं।
3. **सामाजिक समस्या:** शहरी जीवन में अकेलापन, तनाव, अपराध और असुरक्षा की भावना दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। लोग आपस में कम जुड़ पाते हैं। अक्सर यह देखा जाता है कि शहरों में लोग एकसाथ रहकर भी अकेला रहना पसंद करते हैं यही अकेलापन उन्हें धीरे-धीरे अंदर से खोखला करता जाता है। यहां तक कि लोग खुद को इतना अकेला कर लिया है कि आस-पास की बिल्डिंग्स या घरों में लोग मर भी जाते हैं तो इन्हें 1 सप्ताह बाद पता चलता है।
4. **बेरोजगारी और असमानता:** शहरों में रोजगार की तलाश में आए दिन गांवों से पलायन कर लोग अच्छे खान-पान एवं रहन-सहन के लोभ से आते हैं किन्तु शहरों में अत्यधिक भीड़ के कारण लोग बिना काम के यहीं रह जाते हैं, जिससे गरीबी और असमानता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।
5. **आवास की कमी और महंगाई:** हम यह भी देखते हैं कि गांवों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में रहने के लिए उचित और किफायती मकान मिलना कठिन हो जाता है। घरों की कीमतें बहुत अधिक होती हैं। इससे यह होता है कि पलायन किये हुए लोग रास्तों, गलियों इत्यादि जगहों पर रहने लगते हैं जिससे कि शहरों में प्रदूषण, आवास इत्यादि के कारण शहरों में चुनौतियां उत्पन्न हो जाती है।



आज देश के सम्मुख शहरीकरण का प्रबंधन सबसे जटिल समस्या है। शहरों की चकाचौंध आसपास के इलाकों में रहने वाले लोगों के लिये हमेशा से ही आकर्षण का विषय रही है और वे प्रायः इस आकर्षण के वशीभूत होकर शहरों की ओर पलायन कर जाते हैं, जहाँ पहले से ही लोगों की भरमार होती है। वहाँ

पहुंच कर वे भी आवास, जलापूर्ति, जलमल निकासी, स्थानीय परिवहन और रोज़गार के अवसरों जैसी पहले से ही मौजूद गंभीर समस्याओं के शिकार हो जाते हैं। शहरी गरीब अनेक जटिल रोगों सहित कई प्रकार की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के शिकार होते हैं। शहरी क्षेत्रों में लोगों की बढ़ती हुई संख्या के कारण सरकारों की अधिकांश बुनियादी सेवाएँ प्रदान करने की क्षमता पर भारी दबाव पड़ता है। अवैध रूप से बसने वाली स्लम बस्तियाँ शहरों का अविभाज्य हिस्सा बन चुकी हैं। इनमें रहने वाले लोगों को पेयजल और कचरे के निपटान जैसी बुनियादी सुविधाएँ तक नहीं मिल पातीं।

अतः शहर एवं उसकी चुनौतियों के समाधान हेतु हमें कुछ कदम उठाना पड़ेगा अन्यथा शहर की बुनियादी ढाँचा चरमरा उठेगी। इस संबंध में इसके समाधान हेतु चर्चा निम्नवत है-

1. **स्मार्ट सिटी और बेहतर योजना:** शहरों का बेहतर और वैज्ञानिक विकास सुनिश्चित करने के लिए स्मार्ट सिटी योजना लागू करनी चाहिए।
2. **सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा:** मेट्रो, बसें और साइकिल जैसे सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देकर ट्रैफिक जाम और प्रदूषण कम किया जा सकता है।
3. **हरी-भरी जगहों का संरक्षण:** पार्क, बगीचे और पेड़ लगाने पर जोर देना चाहिए जिससे पर्यावरण संतुलन बना रहे।
4. **सस्ते आवास और बसाने की व्यवस्था:** गरीबों के लिए उचित और किफायती आवास उपलब्ध कराए जाएं।
5. **स्वास्थ्य और शिक्षा की बेहतर व्यवस्था:** अस्पतालों और स्कूलों की संख्या बढ़ाई जाए तथा गुणवत्ता सुनिश्चित की जाए।
6. **सामाजिक सुरक्षा:** पुलिसिंग, आपातकालीन सेवाओं को मजबूत कर शहरों में सुरक्षा बढ़ानी चाहिए।
7. **जल और ऊर्जा संरक्षण:** पानी का समझदारी से उपयोग और ऊर्जा के नवीकरणीय स्रोतों का प्रयोग बढ़ाना चाहिए।
8. **आवासीय क्षेत्रों में अनुशासन:** कूड़ा-करकट न फैलाएं, सफाई रखें और सामुदायिक सहभागिता बढ़ाएं।

निष्कर्ष:

शहरी जीवन की चुनौतियां बड़ी हैं, लेकिन सही योजना, जिम्मेदारी और सहयोग से इन्हें दूर किया जा सकता है। अगर हम सब मिलकर शहरी जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में प्रयास करें, तो शहर न केवल रहने के लिए सुरक्षित और सुखद बनेंगे, बल्कि विकास की नई मिसाल भी कायम करेंगे।

तैयारी-जीत की



श्री सत्येंद्र कुमार
आशुलिपिक

बेरोज़गारी, ये वो शब्द है जिसको याद करके हर वो छात्र जिसने नौकरी की तैयारी की होगी या जो आज नौकरी में होंगे वो ये पलभर के लिए जरूर सोचेंगे कि बेरोज़गारी क्या होती है। तो ये कहानी उसी बेरोज़गारी पर आधारित एक ऐसे छात्र की है जो एक छोटे से गांव से निकलकर अपनी मंजिल की तलाश में पटना शहर में आता है, अपने सपनों को पूरा करने, ये सोचकर कि वो अपने माँ-बाप के सपनों को पूरा करेगा। एक अच्छी सी सरकारी नौकरी हासिल करके और इसी उम्मीद में वो अपनी पूरी ताकत और निष्ठा के साथ मेहनत करता है ताकि उसे किसी तरह सरकारी नौकरी मिल जाए।

पटना शहर में रहकर कुछ हो या न हो आदमी सब्जी खरीदना और बात करना सीख जाता है। दिमाग में बस यही टोटका चलता रहता है कि बस कमरा बदलने से किस्मत बदल जाती है। इसलिए हम किसी कमरे में तीन महीने से ज्यादा कहीं रहे ही नहीं, कमरा बदलने के चक्कर में सभी मकान मालिक हमारे अंकल हो गये थे। पाँच लीटर वाला एक गैस और लुसेंट की किताब, बेरोज़गारी से लड़ने का यही हथियार था हमारे पास। कम पैसे रहने के कारण हमें ऐसे घर की तलाश रहती थी जिसमें पहले से कुछ छात्र रहते हों, साथ में रहने का फायदा यह था कि कुछ नए देस्त मिल गए थे हमें जे हर तरह से मेरी मदद करते थे- चाहे वो पैसे की मदद हो या पढ़ाई की, वरना इस नए शहर में मैं अनजान अकेले क्या ही कर पाता। किसी तरह हमारा गुजारा चल रहा था। लेकिन एक बात है नौकरी की तैयारी करने वाले आपको अपना सब कुछ देने को तैयार हो जाते हैं लेकिन खुद का बनाया नोट्स नहीं। भाई साहब, कभी उस छात्र का दर्द जानते हैं जो कुछ पैसे बचाने के चक्कर में 30 रुपये में 50 पासपोर्ट फोटो बनवाने के लिए मुसल्लहपुर हाट से सुल्तानगंज की यात्रा तय करता है जो करीब 10 से 12 किलोमीटर है। चेहरा वही रहता है बस तारीख बदल जाती है। हर दर्द को भूलकर मुस्कुराते हुए फोटो खिंचवाना भी एक कला है।

देश में बेरोज़गारी का आलम ये है कि छात्र मैट्रिक परीक्षा पास करते ही रोज़ 05 से 10 किलोमीटर दौड़ना शुरू कर देता है। पहले डिफेंस लाईन, एस.एस.सी और फिर बी.पी.एस.सी। जानते हैं साहब, सब कुछ हो जाता है बस नौकरी नहीं होती है। सरकार आती है और सरकार जाती है, उनके किए वादे यूँही अधूरे रह जाते हैं। बस रह जाती है तो सिर्फ बेरोज़गारी। बेरोज़गारी क्या होती है कभी दानापुर रैली में आकर देखिए। रैली रैली न रहकर सोनपुर का पशु मेला हो जाता है। रेलवे ग्रुप डी की दौड़ निकालने के लिए जब 200 से 300 छात्र जब एक साथ दौड़ते हैं न तो जान निकल जाती है। हाँफते-हाँफते मुह से खून निकल जाता है क्योंकि इसी 05 मिनट में 1600 मीटर की दौड़ लगाने के लिए छात्र को जानवर बनना पड़ता है। इंसान के बस की बात नहीं है ये। इसी बेरोज़गारी ने मुझे यह सिखाया है कि 10 रुपये के प्लास्टिक की चटाई खरीदकर बिना तोसक और तकिया के खुले प्लेटफार्म पर सोना और बिना टिकट के ट्रेन में सफर करना क्या होता है ये सिर्फ एक बेरोज़गार छात्र ही जानता है।

बेरोज़गारी का नशा ऐसा था कि क्या कहें हम आपको। जी.के और जी.एस का फॉर्मूला पूरे रूम में चिपकाए रहते थे और एंटोनिम और सिनोनिम को शैम्पू की तरह अपने सिर पर लगाते थे। देखिये आजकल तो फॉर्म ऑनलाइन भरा जाता है नहीं तो पहले तीन चार जगह से फॉर्म अप्लाई होता था ताकि कहीं न कहीं से कॉल लेटर आ जाए। पटना की गलियों में स्टूडेंट्स भरे पड़े हैं सुल्तानगंज, महेंद्र से लेकर मखनियाँ कुंआ तक सिर्फ स्टूडेंट्स मिलेंगे आपको। नौकरी के लिए 40 तक पहाड़ा और 50 तक स्क्वायर सब याद है, लेकिन समझ में नहीं आता था क्या इंपोर्टेंट है और क्या अनइंपोर्टेंट।



एक बार ऐसा हुआ कि हमारी बहन की शादी के दिन ही हमारी परीक्षा पड़ गयी थी, हम यही सोचकर शादी में नहीं गए कि शायद इसी परीक्षा में हमारी नौकरी हो जाएगी। शाम को जब घर लौटे थे न तो बहुत रोये थे क्योंकि किसी ठेकेदार ने पहले ही परीक्षा का पेपर आउट कर दिया था। एक पढ़ाकू बेरोज़गार के लिए सबसे बड़ा त्याग था ये अपने रोजगार के लिए। क्योंकि अपनी इकलौती बहन की शादी में नहीं जा पाये थे हम। अपनी बेरोज़गारी का लोहा मनवाने के चक्कर में इतना थक गया था कि मैं अब घर से पैसे मांगने में भी शर्म आती थी। कभी-कभी सोचता था कि बस बहुत हुआ शायद नौकरी किस्मत में है ही नहीं, लेकिन माँ-बाप का चेहरा याद आते ही उनके सपनों को पूरा करना है यही सोचकर रुक जाता था।

पाँच वर्ष के कड़े संघर्ष के बाद मैं हताश होकर अपने घर पहुँचा। अपने पिताजी के साथ उनकी खेती में उनका हाथ बंटा रहा था तभी पोस्टमैन अंकल ने मुझे एक पत्र पकड़ाया, उस समय मेरे हाथ गंदे थे। उसी गंदे हाथों से जब मैंने उस पत्र को खोला तो उसमें ज्वाइनिंग लेटर था, यानि किस्मत का दरवाज़ा उस पत्र के खुलते ही खुल गया था। हमारी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। सरकारी नौकरी मिलने का सपना आज मेरा पूरा हो चुका था। मेरी माँ हमेशा कहा करती थी कि बेटा ज़िंदगी में कभी हार नहीं माननी चाहिए या तो करना है या तो नहीं करना है ये तीसरा कुछ भी नहीं होता है। हमारे हाथ में राखी बांधते समय मेरी दीदी हमेशा कहती थी कि जब तुम्हारी सरकारी नौकरी हो जाएगी तब ही तुम राखी बंधाने का सारा बकाया एक ही साथ दे देना, क्योंकि उन 26 सालों तक मैंने राखी बंधवाने का एक रुपया भी मैंने अपनी बहन को नहीं दिया था। अब वो समय आ गया था जब मैं अपने माँ-बाप के सपनों को पूरा करूँगा। उनको वो हर खुशी और आराम मैं दूँगा जो मैं दे सकता हूँ।

अंतिम में एक लाइन लिखकर मैं इस कहानी को यही खत्म करना चाहता हूँ कि मेहनत करने वालों की कभी हार नहीं होती। किसी भी चीज़ को पाने के लिए जब आप अपना पूरा जी-जान लगा देते हैं तो पूरी कायनात उसको पूरा करने में आपकी मदद करती है।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री के. संजय मूर्ति के इस कार्यालय में आगमन की कुछ तस्वीरें।



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री के. संजय मूर्ति द्वारा उल्लाङ्गा में आवासीय कॉम्प्लेक्स का शिलान्यास।



हिंदी पखवाड़ा 2025 कार्यक्रम की कुछ झलकियां



श्री अवनीन्द्र कुमार राय, उप महालेखाकार द्वारा दीप प्रज्ज्वलन



हिंदी पखवाड़ा के दौरान राष्ट्रगान करते हुए दर्शकगण



हिंदी पखवाड़ा के दौरान राष्ट्रगान करते हुए अधिकारीगण



हिंदी में उत्कृष्ट कार्य हेतु चल वैजयंती शील्ड पुरस्कार प्रदान करते हुए उप महालेखाकार



हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम का आनंद लेते हुए अधिकारी एवं दर्शकगण



पुष्पगुच्छ द्वारा उप महालेखाकार महोदय का अभिवादन करते हुए



पुष्पगुच्छ द्वारा वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदया का अभिवादन करते हुए



उप महालेखाकार महोदय द्वारा प्रमाणपत्र प्रदान किया जाना



हिंदी पखवाड़ा के दौरान गीत-गायन प्रतियोगिता



हिंदी पखवाड़ा के दौरान गीत-गायन प्रतियोगिता



हिंदी पखवाड़ा के दौरान नृत्य कार्यक्रम



वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदया द्वारा प्रमाणपत्र प्रदान किया जाना



हिंदी पखवाड़ा के दौरान राजभाषा अनुभाग के अधिकारी एवं कर्मचारीगण



हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम के दौरान दर्शकगण

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप-समिति द्वारा
निरीक्षण/विचार-विमर्श

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा दिनांक 19.09.2025 को कोलकाता नगर राजभाषा कार्यान्वय समिति (कार्यालय-1) तथा अन्य सदस्य कार्यालयों के अध्यक्षों के साथ विचार-विमर्श किया गया। इस क्रम में हमारे कार्यालय का भी निरीक्षण माननीय संसद सदस्यों द्वारा किया गया। इस बैठक/निरीक्षण के दौरान माननीय सांसद श्री भर्तृहरि महताब, उपाध्यक्ष एवं अन्य माननीय सदस्यों द्वारा राजभाषा नीति के प्रयोग एवं कार्यान्वयन पर आवश्यक निदेश भी दिये गए। समिति द्वारा नराकास कोलकाता (कार्यालय-1) एवं सदस्यों कार्यालयों में राजभाषा नीति का प्रयोग व कार्यान्वयन कार्य संतोषजनक पाया गया।



संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति के माननीय उपाध्यक्ष एवं माननीय समिति सदस्यगण



संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप-समिति के माननीय उपाध्यक्ष श्री भर्तृहरि महताब



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1), प.बं. के उच्च अधिकारीगण एवं राजभाषा अनुभाग के अधिकारी एवं कर्मचारीगण



चित्रांकन- सुश्री आशा दास, कक्षा-VIII

बाउल गीत

बाउल गीत पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश में प्रचलित एक समृद्ध और रहस्यवादी लोक संगीत परंपरा है। बाउल गीत रहस्यवादी घुमकड़ गायकों के समुदाय द्वारा गाए जाते हैं, जो हिंदू भक्ति आंदोलन और सूफीवाद दोनों से प्रभावित हैं। यह सदियों से इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता को दर्शाते रहे हैं।

बाउल गीतों का मुख्य विषय अध्यात्मिकता है, जिसमें ईश्वर के साथ मानव के संबंध और आध्यात्मिक मुक्ति की खोज शामिल है। बाउल गीतों का मुख्य जोर बाहरी धार्मिक अनुष्ठानों के बजाय 'मनुष्य में ईश्वर को खोजने' पर होता है।

पारंपरिक बाउल गायक गेरुआ कपड़े पहनकर और एकतारा या दोतारा जैसे साधारण वाद्य यंत्रों का उपयोग करके एक गाँव से दूसरे गाँव घूमते रहते हैं।

